बुधवार, 30 जुलाई 2025

मौसम

तापमान 25 – 32
आर्द्रता 95%
सूर्योदय: 5:07 सूर्यास्त: 18:19

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।।

www.samagya.in

समाज्ञा

भारतीय मूल के लोग अमेरिकी उपभोक्ताओं के दिल-दिमाग को जीत सकते हैं: आनंद महिंद्रा पृष्ठ 8

स्थानीय खबरें पृष्ठ तीन, चार और पांच पर

कोलकाता, श्रावण शुक्लपक्ष षष्ठी, वि.स. 2082, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रुपये

सुविचार : प्रेम एक बीज है, जो एक बार जमकर फिर बड़ी मुश्किल से उखड़ता है।

RED-X
B.W.P. PLY,
BOARDS& DOORS
'X' Factor that Makes A Difference
Stockist :
GULAB CHAND
LAL CHAND& Co.
9831114555
9874415555

दुनिया के किसी नेता ने 'ऑपरेशन सिंदूर' रोकने को नहीं कहा : मोदी

कांग्रेस का सुर पाक जैसा

कांग्रेस ने हमेशा राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ समझौता किया, पीओके वापस लेने का मौका गंवाया

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को लोकसभा में 'ऑपरेशन सिंदूर' पर विशेष चर्चा के दौरान कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में भारत ने साहसिक सैन्य कार्रवाई की, जिसे पूरी दुनिया का समर्थन मिला। लेकिन विपक्ष, खासकर कांग्रेस, इस अभियान पर सवाल खड़े कर रही है और ऐसी भाषा बोल रही है जो पाकिस्तान के सुर से मेल खाती है।मोदी ने बताया कि भारत की सेना ने 22 मिनट में आतंकियों के ठिकानों को तबाह किया और यह कार्रवाई पूरी तैयारी और रणनीति के साथ की गई थी। उन्होंने कहा कि इस ऑपरेशन के लिए सेना पिछले 10 वर्षों से अभ्यास कर रही थी। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह पहली बार था जब भारत ने उन ठिकानों को निशाना बनाया जहां पहले कभी नहीं पहुंचा था। उन्होंने कहा कि अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने 9 मई की रात उनसे संपर्क करने की कोशिश की, जब पाकिस्तान बड़े हमले की योजना बना रहा था। लेकिन भारत ने उससे पहले ही कड़ा जवाब देते हुए पाकिस्तान की सैन्य शक्ति को तहस-नहस कर दिया। प्रधानमंत्री ने आरोप लगाया कि कांग्रेस समेत विपक्षी दलों ने इस पूरे अभियान में सेना के पराक्रम पर सवाल उठाकर न सिर्फ उनका मनोबल गिराया, बल्कि पाकिस्तान के झूठे प्रचार को भी बल दिया। उन्होंने कहा कि विपक्ष ने पहले भी सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक पर सबूत मांगे थे और अब फिर वही दोहरा रहे हैं।मोदी ने दावा किया कि भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' में पूरी तरह 'मेड इन इंडिया' ड्रोन और मिसाइलों का इस्तेमाल किया, जिससे दुनिया ने भारत की आत्मनिर्भर सैन्य ताकत को पहचाना। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ने करीब 1,000 मिसाइलों और ड्रोन से हमला करने की कोशिश की, लेकिन भारत की वायु रक्षा प्रणाली ने उन्हें हवा में ही नष्ट कर दिया।प्रधानमंत्री ने कहा कि अब भारत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि देश पर हमला होगा तो जवाब भारत अपने समय, तरीके और शर्तों पर देगा। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस अब पाकिस्तान के रिमोट कंट्रोल से चलने लगी है और सेना के खिलाफ बयानबाजी कर रही है। उन्होंने कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' अभी भी जारी है और अगर पाकिस्तान ने कोई दुस्साहस किया तो उसे करारा जवाब मिलेगा।

एक दिन ऐसा आएगा जब पीओके के लोग भारत की शासन प्रणाली का हिस्सा होंगे: राजनाथ सिंह

नयी दिल्ली : रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सोमवार को राज्यसभा में कहा कि एक दिन पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) के लोग भी भारत की शासन व्यवस्था का हिस्सा बनेंगे। सिंह ने उच्च सदन में ''पहलगाम में आतंकवादी हमले के जवाब में भारत के मजबूत, सफल एवं निर्णायक 'ऑपरेशन सिंदूर' पर विशेष चर्चा'' की शुरुआत करते हुए कहा एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब पीओके के लोग भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली और शासन व्यवस्था में शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) के लोग भी खुद को भारत का हिस्सा मानते हुए गर्व से कहेंगे - मैं भी भारत।

प्रवासी मजदूर बंगाल वापस लौट आए, यहां काम की कमी नहीं है : ममता

बीरभूम : अपने बीरभूम दौरे के आखिरी दिन, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने एक बार फिर बांग्ला भाषा के मुद्दे पर केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला। बीरभूम के इलमबाजार में एक प्रशासनिक बैठक में कई परियोजनाओं के उद्घाटन के मौके पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी एक बार फिर अपनी बंगाली पहचान की तीर चलाया। उन्होंने ज़ोरदार लहजे में कहा कि हम भाषा पर अत्याचार बर्दाश्त नहीं करेंगे। हम रवींद्रनाथ टैगोर और नेताजी की भाषा पर हमले बर्दाश्त नहीं करेंगे। हम अपनी जान देने को तैयार हैं! लेकिन हम भाषा पर अत्याचार और बुद्धिजीवियों पर अत्याचार बर्दाश्त नहीं करेंगे। ममता बनर्जी ने दावा करते हुए कहा कि बंगाल में काम की कोई कमी नहीं है, प्रवासी मजदूरों को आने के लिए कहिए। वे बाहर जो करते हैं, बंगाल में भी वही करेंगे। हम उन्हें यहीं सारी सुविधाएं देंगे। इसके बाद, उन्होंने कहा कि देउचा पचमी में एक लाख नौकरियां होंगी, आइए। देउचा पचमी में 30 हज़ार करोड़ रुपये का काम हो रहा है, ग्लोबल टेंडर आमंत्रित किया गया है। ममता बनर्जी ने कहा कि पहले सीपीएम के अत्याचार को सहना पड़ा, अब बीजेपी के भी अत्याचार को सहना पड़ रहा है।

मुख्यमंत्री का आरोप, दिल्ली में बांग्लाभाषी महिला और उसके बच्चे को धमकाया गया

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मंगलवार को दावा किया कि दिल्ली में कथित रूप से मारपीट की शिकार बांग्लाभाषी महिला और उसके बच्चे को धमकी भी दी गयी थी। उनके इस बयान से पहले दिल्ली पुलिस ने ममता बनर्जी द्वारा सोशल मीडिया पर साझा किए गए एक वीडियो को 'मनगढ़ंत' और 'राजनीति से प्रेरित' बताया था। उल्लेखनीय है कि गत सोमवार को ममता बनर्जी ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा करते हुए आरोप लगाया था कि राष्ट्रीय राजधानी में एक बांग्ला भाषी महिला और उसके बच्चे पर अपनी भाषा बोलने के कारण हमला किया गया। इस दिन, मुख्यमंत्री ने कहा कि जैसा कि मैंने कल अनुमान जताया था, उन्हें (महिला और उसके बच्चे को) विभिन्न थानों में ले जाया गया। उन्हें धमकाया गया। हम चाहते हैं कि वे वापस आ जाएं तथा कौन सच बोल रहा है और कौन झूठ बोल रहा है, वह अंतत? साबित हो जाएगा। उन्होंने कहा कि यदि भाजपा शासित राज्यों में बांग्ला भाषी प्रवासी श्रमिकों को परेशान किया जाता है, तो उन्हें बंगाल वापस आ जाना चाहिए। बंगाल के प्रवासी मजदूरों से राज्य में वापस आने की अपनी अपील दोहराते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वास्थ्य सेवा और उनके बच्चों की शिक्षा समेत सभी कल्याणकारी सुविधाएं उन्हें प्रदान की जाएंगी। ममता ने सवाल किया कि जब भाजपा शासित राज्यों में लोगों को अत्याचार का सामना करना पड़ता है, तो क्या मानवाधिकार, महिला और आदिवासी कल्याण पर केंद्रीय आयोग वहां भेजे जाते हैं? उन्होंने पूछा कि जब बांग्ला भाषी लोगों पर अत्याचार होते हैं, उन्हें मार दिया जाता है, या उनके घरों से निकाल दिया जाता है और पानी-बिजली के कनेक्शन काट दिए जाते हैं, तो कितने आयोग वहां जाते हैं? ममता ने कहा कि ऐसे मामलों में कोई आयोग नहीं भेजा जाता है। उन्होंने कहा कि असम, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, ओडिशा और दिल्ली में भाजपा की डबल इंजन वाली सरकारें हैं तथा वहां गृह मंत्रालय के आदेश पर अत्याचार हो रहे हैं। क्या हो रहा है?

पुरी के जगन्नाथ मंदिर के रत्नभंडार में कोई छिपा हुआ कक्ष नहीं: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

पुरी : भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने मंगलवार को कहा कि पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर के रत्न भंडार में कोई छिपा हुआ कक्ष नहीं है। एएसआई ने हाल में रत्न भंडार की मरम्मत का काम पूरा किया है। 'एक्स' पर एक पोस्ट में, इन कार्यों का विवरण देते हुए, उसने कहा , ''..(रत्न भंडार में) कोई छिपा हुआ स्थान नहीं है।'' एएसआई ने कहा कि 'ग्राउंड पेनेट्रेटिंग रडार (जीपीआर)' सर्वेक्षण के आधार पर इसकी पुष्टि की गई। उसने कहा है कि रत्न भंडार या खजाना दो भागों में विभाजित है - 'भीतर' रत्न भंडार और 'बाहर' भंडार तथा दोनों के बीच लोहे का एक गेट है, जो बाहर से बंद होता है। उसने कहा, '' दोनों कक्षों का निरीक्षण करने के बाद, यह पता लगाने के लिए एक जीपीआर सर्वेक्षण करने का निर्णय लिया गया कि दीवारों में या फर्श के नीचे कोई छिपा हुआ कक्ष या अलमारियां तो नहीं हैं।'' एएसआई ने कहा है,''सितंबर 2024 में किये गये जीपीआर सर्वेक्षण की रिपोर्ट ने पुष्टि की है कि कोई छिपी हुई जगह नहीं है। रिपोर्ट के बाद, 17 दिसंबर 2024 को संरक्षण कार्य शुरू हुआ। इसकी शुरुआत भीतर और बाहर भंडार दोनों में मचान बनाकर की गई।'' उसने बताया कि रत्न भंडार मंदिर के जगमोहन या सभा भवन के उत्तरी प्रवेश द्वार से जुड़ा हुआ है। उसने कहा कि खोंडालाइट पत्थर से निर्मित रत्न भंडार का उद्देश्य भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र, देवी सुभद्रा और श्री सुदर्शन की बहुमूल्य वस्तुओं को रखना था। रत्न भंडार में संरक्षण कार्य दो चरणों में किया गया। पहला चरण 17 दिसंबर, 2024 से 28 अप्रैल, 2025 तक चला तथा दूसरा 28 जून से 7 जुलाई तक चला।

भारत ने मिसाइल 'प्रलय' का परीक्षण किया

बालासोर/नयी दिल्ली : भारत ने पारंपरिक युद्ध सामग्री ले जाने में सक्षम नयी विकसित सामरिक मिसाइल 'प्रलय' का सफलतापूर्वक परीक्षण किया है। रक्षा मंत्रालय ने बताया कि इस मिसाइल का परीक्षण सोमवार और मंगलवार को ओडिशा तट के पास 'एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप' से किया गया। 'प्रलय' एक कम दूरी की सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल है, जिसकी 'पेलोड' क्षमता 500 से 1,000 किलोग्राम तक है। 'पेलोड' क्षमता का अर्थ है कि कोई मिसाइल, रॉकेट, ड्रोन या विमान अधिकतम कितने भार का विस्फोटक, उपकरण या सामग्री अपने लक्ष्य तक ले जा सकता है। यह मिसाइल पारंपरिक युद्ध सामग्री ले जाने में सक्षम है और इसकी मारक क्षमता 150 से 500 किलोमीटर है। इसे रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा विकसित किया गया है।

बिहार में मतदाता सूची से बड़े पैमाने पर नाम हटाए जाते हैं, तो हम हस्तक्षेप करेंगे : न्यायालय

नयी दिल्ली : उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को कहा कि निर्वाचन आयोग एक संवैधानिक प्राधिकरण है और इसे कानून के अनुसार कार्य करने वाला माना जाता है, लेकिन बिहार में यदि मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) में बड़े पैमाने पर मतदाताओं के नाम हटाए जाते हैं, तो न्यायालय हस्तक्षेप करेगा। न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने बिहार में निर्वाचन आयोग की एसआईआर प्रक्रिया को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर विचार करने के लिए समयसीमा तय करते हुए कहा कि इस मुद्दे पर सुनवाई 12 और 13 अगस्त को होगी। याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल और अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने एक बार फिर आरोप लगाया कि निर्वाचन आयोग द्वारा एक अगस्त को प्रकाशित की जाने वाली मसौदा सूची से लोगों को बाहर रखा जा रहा है, जिससे वे मतदान का अपना महत्व-पूर्ण अधिकार खो देंगे। भूषण ने कहा कि निर्वाचन आयोग ने एक बयान जारी कर कहा है कि एसआईआर प्रक्रिया के दौरान 65 लाख लोगों ने गणना प्रपत्र जमा नहीं किए हैं, क्योंकि वे या तो मृत हैं या स्थायी रूप से कहीं और स्थानांतरित हो गए हैं। उन्होंने यह भी कहा कि इन लोगों को मतदाता सूची में नाम शामिल कराने के लिए फिर से आवेदन करना होगा। इस पर न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा, ''भारत का निर्वाचन आयोग एक संवैधानिक प्राधिकरण है और यह इसे कानून के अनुसार कार्य करने वाला माना जाता है। यदि कोई गड़बड़ी होती है, तो आप अदालत का ध्यान उस ओर आकर्षित करें, हम आपकी बात सुनेंगे।''

गोधरा दंगा मामला : दोषसिद्धि के 19 साल बाद विश्वसनीय साक्ष्यों के अभाव में तीन लोग बरी

अहमदाबाद : गुजरात उच्च न्यायालय ने गोधरा कांड के बाद हुए दंगों से जुड़े एक मामले में तीन दोषियों को यह कहते हुए बरी कर दिया कि उनकी दोषसिद्धि विश्वसनीय साक्ष्यों पर आधारित नहीं थी। उच्च न्यायालय का यह फैसला मामले में त्वरित अदालत के सचिन पटेल, अशोक पटेल और अशोक गुप्ता को दोषी ठहराए जाने और उन्हें पांच-पांच साल के कठोर कारावास की सजा सुनाए जाने के लगभग 19 साल बाद आया। न्यायमूर्ति गीता गोपी की पीठ ने सचिन पटेल, अशोक पटेल और अशोक गुप्ता की ओर से दायर उन याचिकाओं को स्वीकार कर लिया, जिनमें तीनों ने आणंद की एक त्वरित अदालत द्वारा उन्हें दोषी ठहराए जाने और 29 मई 2006 को सजा सुनाए जाने के फैसले को चुनौती दी थी। पीठ ने सोमवार को पारित आदेश में कहा, ''अधीनस्थ अदालत के न्यायाधीश से साक्ष्यों के मूल्यांकन में चूक हुई है। दोषसिद्धि विश्वसनीय और पुष्टिकारक साक्ष्यों पर आधारित नहीं है। मुकदमे के दौरान आरोपियों की पहचान भी साबित नहीं की जा सकी।'' मुकदमे का सामना करने वाले नौ लोगों में से चार को भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की विभिन्न धाराओं के तहत दंगा, आगजनी, गैरकानूनी सभा आदि के आरोपों में दोषी ठहराकर पांच-पांच साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई थी। इन चार दोषियों में से एक की 2009 में मौत हो गई थी।

एनआईए ने श्रीनगर मुठभेड़ में पहलगाम हमले के मुख्य साजिशकर्ता की मौत की जांच शुरू की

श्रीनगर : राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) के अधिकारियों की एक टीम ने श्रीनगर के पास सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में पहलगाम आतंकवादी हमले के कथित मुख्य साजिशकर्ता और उसके दो साथियों के मारे जाने के मामले की जांच मंगलवार को शुरू कर दी। अधिकारियों ने यहां यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि एनआईए की टीम मंगलवार तड़के तीन आतंकवादियों के शवों की शिनाख्त के लिए पुलिस नियंत्रण कक्ष (पीसीआर) पहुंची। श्रीनगर के बाहरी इलाके दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान के पास हरवान इलाके के मुलनार के जंगलों में सोमवार को सेना के शीर्ष पैरा कमांडो ने पहलगाम आतंकवादी हमले के कथित मुख्य साजिशकर्ता सुलेमान उर्फ आसिफ और उसके दो साथियों को मार गिराया, जिसे सुरक्षाबलों के लिए एक बड़ी कामयाबी माना जा रहा है। पहलगाम हमले के अपराधियों द्वारा इस्तेमाल किए गए सैटेलाइट फोन के तकनीकी सिग्नल मिलने के बाद सुरक्षाबलों ने 'ऑपरेशन महादेव' शुरू किया। इस कार्रवाई में मारे गए अन्य आतंकवादियों की पहचान जिबरान और हमजा अफगानी के रूप में हुई है। पहलगाम में 22 अप्रैल को आतंकवादियों ने 26 लोगों की गोली मारकर हत्या कर दी थी। मृतकों में अधिकतर पर्यटक थे। इसके बाद सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान और उसके कब्जे वाले कश्मीर में आतंकी ढांचे के खिलाफ सात मई को 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया था। मारे गए आतंकवादियों के शव सोमवार देर रात मुठभेड़ स्थल से यहां पीसीआर लाए गए। अधिकारियों ने बताया कि एनआईए की टीम दो-तीन लोगों के समूह में गवाहों से पूछताछ कर रही है ताकि ''यह सुनिश्चित किया जा सके कि मारे गए आतंकवादियों में सुलेमान शाह भी शामिल है।'' राइफल और अन्य हथियार बरामद किए गए थे।

चिदंबरम ने ऑपरेशन सिंदूर सफल रहने के बाद संघर्षविराम के लिए सहमति को लेकर सरकार पर साधा निशाना

नयी दिल्ली : कांग्रेस नेता एवं पूर्व गृह मंत्री पी चिदंबरम ने मंगलवार को सरकार पर निशाना साधते हुए सवाल किया कि ऑपरेशन सिंदूर सफल रहने के बाद संघर्षविराम पर सहमति क्यों दी गयी? राज्यसभा में ''पहलगाम में आतंकवादी हमले के जवाब में भारत के मजबूत, सफल एवं निर्णायक 'ऑपरेशन सिंदूर' पर विशेष चर्चा'' में भाग लेते हुए चिदंबरम ने यह प्रश्न उठाया। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर सफल रहा किंतु समय ही बतायेगा कि यह निर्णायक था या नहीं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने सशस्त्र बलों के दृढ़ और मिसाल योग्य नेतृत्व की सराहना की। उन्होंने कहा, ''ऑपरेशन सिंदूर के परिणाम, यदि आप मुझसे पूछेंगे कि क्या ऑपरेशन सिंदूर मजबूत था, मैं कहूंगा कि हां। क्या ऑपरेशन सिंदूर सफल था, मैं कहूंगा कि हां। यदि आप मुझसे पूछेंगे कि क्या यह निर्णायक था तो मैं यही कह सकता हूं कि समय बताएगा।'' पूर्व गृह मंत्री ने प्रश्न किया कि जब पाकिस्तान के विरूद्ध ऑपरेशन सिंदूर सफल रहा तो भारत ने संघर्षविराम पर सहमति क्यों जतायी। उन्होंने इस बात की ओर ध्यान दिलाया कि भारत अब एक या दो मोर्चों पर नहीं लड़ रहा। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान एवं चीन अब दो भिन्न मोर्चे नहीं हैं बल्कि आपस में मिले हुए मोर्चे हैं। चिदंबरम ने सरकार से प्रश्न किया कि क्या उसके पास पाकिस्तान एवं चीन तथा कुछ अन्य के साथ मिलकर बनाये गये मोर्चे का सामना करने के लिए कोई योजना है? उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर के बाद विभिन्न देशों में भेजे गये प्रतिनिधिमंडल की ओर ध्यान दिलाते हुए सरकार से प्रश्न किया कि ऐसे प्रतिनिधिमंडल नेपाल, श्रीलंका, म्यामां और मालदीव जैसे पड़ोसी देशों में क्यों नहीं भेजे गए? उन्होंने कहा कि पाकिस्तान आतंकवादियों को भेजता है किंतु देश में ऐसे कई आतंकवादी हमले हुए हैं जिनमें स्थानीय आतंकवादी शामिल थे। कांग्रेस नेता ने कहा कि अधिकतर मामलों में पाकिस्तान से भेजे गए आतंकवादी स्थानीय आतंकवादियों के साथ मिलकर आतंकी हमलों को अंजाम देते हैं।

देशभर में 34,000 से अधिक मामले लंबित: राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग

हैदराबाद : राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति वी. रामसुब्रमण्यम ने मंगलवार को जानकारी दी कि आयोग के पास वर्तमान में देश भर से 34,685 मामले लंबित हैं। उन्होंने आयोग के दो दिवसीय विशेष शिविर के बाद पत्रकारों को बताया कि पुलिस हिरासत में मौत से संबंधित 285 मामले और न्यायिक हिरासत में मौत से संबंधित 2,532 मामले लंबित हैं। आयोग द्वारा 1993 में जारी निर्देशानुसार, अगर किसी व्यक्ति की थाने या जेल में मौत होती है तो अधिकारियों को 24 घंटे के भीतर आयोग को अनिवार्य रूप से एक रिपोर्ट भेजनी होगी। उन्होंने बताया कि 99.99 प्रतिशत मामलों में आयोग को रिपोर्ट प्राप्त होती है और वह तुरंत सभी संबंधित रिपोर्टें तलब करता है। न्यायमूर्ति रामसुब्रमण्यम ने बताया कि आयोग द्वारा स्वतः संज्ञान लिए गए मामलों की संख्या बढ़ रही है और 2024 में आयोग ने लगभग 105 मामलों पर संज्ञान लिया। उन्होंने बताया, वास्तव में, स्वतः संज्ञान से दर्ज मामलों की संख्या बढ़ रही है। 2021 में, स्वतः संज्ञान से दर्ज मामलों की संख्या केवल 17 थी, जो 2022 में 60, 2023 में 117, 2024 में 105 और 2025 में यह संख्या 50 को पार कर चुकी है। मानव स्वतंत्रता सूचकांक में भारत कथित तौर पर 130वें स्थान पर है।

आरजी कर अस्पताल की महिला चिकित्सक की याद में 'अभया' रखा जाएगा लद्दाख में एक चोटी का नाम

कोलकाता : पर्वतारोहियों, वैज्ञानिकों और चिकित्सकों की एक टीम लद्दाख के लेह जिले के सुदूर त्सो-मोरीरी क्षेत्र में एक अभियान के तहत एक अनाम चोटी पर चढ़ाई करेगी। इसके साथ ही 6,105 मीटर ऊंची इस चोटी का नाम प्रतीकात्मक तौर पर 'अभया' रखा जाएगा। पिछले साल कोलकाता स्थित आरजी कर अस्पताल में एक प्रशिक्षु महिला चिकित्सका की दुष्कर्म के बाद हत्या कर दी गई थी। टीम ने इस चोटी का नाम महिला चिकित्सक की याद में रखने का फैसला किया है। प्रोजेक्ट सीमा (सस्टेनेबल एम्पावरमेंट एंड एक्सप्लोरेशन इन माउंटेनस एरियाज) नामक इस अभियान का उद्देश्य पर्वत अन्वेषण को सामाजिक, वैज्ञानिक और विकासात्मक पहल से जोड़ना है। यह समूह हिमालय के चुनौतीपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र में ग्लेशियरों, नदियों, झीलों, कृषि और जलवायु परिवर्तन पर भी अध्ययन करेगा। अभियान का नेतृत्व कर रहे वरिष्ठ पर्वतारोही देबाशीष बिस्वास ने लेह से फोन पर 'पीटीआई-भाषा' से कहा, ''उनकी (महिला चिकित्सक) मौत ने पूरे देश की अंतरात्मा को झकझोर दिया। हम इन अनाम चोटियों में से एक को उन्हें समर्पित करके उनका का सम्मान करना चाहते हैं और इसलिए, इसका नामकरण उनके प्रतीकात्मक नाम पर 'अभया' किया जाएगा।''

इंडियन जेम एंड ज्वेलरी क्रियेशन टोल फ्री नंबर 1800 8891704

9B, वुड स्ट्रीट : ग्राउंड फ्लोर, कोलकाता 700 016 M +91 89810 89018 साउथ सिटी मॉल : ग्राउंड फ्लोर, 375, प्रिंस अनवर शाह रोड, कोलकाता 700 068 M +91 89810 89029 सिटी सेंटर II, राजारहाट : ब्लॉक - B', दूसरी मंजिल, शॉप नंबर 201, न्यू टाउन, कोलकाता 700 157 M +91 89810 89066 हावड़ा : जेपी'स एसी मार्केट (श्री विंध्याचल बिल्डिंग), 35, डॉ. अबनी दत्ता रोड (हावड़ा एसी मार्केट के पास) M +91 89810 89027 वरदान मार्केट : 106, वरदान मार्केट, पहली मंजिल, 25A, कैमक स्ट्रीट, कोलकाता 700 016 M +91 89810 89003 बागनान : ग्लोरियस शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, सीटीसी बस स्टैंड के पास, शॉप नंबर 4, पहली मंजिल, बागनान, हावड़ा 711 303 M +91 89810 89024 दुर्गापुर : शॉप नंबर 205, ड्रीमप्लेक्स मॉल, पहली मंजिल, सिटी सेंटर, दुर्गापुर 713 216 M +91 89810 89017 श्रीरामपुर : अग्निशा - II, ग्राउंड फ्लोर, 30, के एम शाह स्ट्रीट, श्रीरामपुर, हुगली 712 201 M +91 89810 89014

हीरे के आभूषण, सॉलिटेयर, हॉलमार्क वाले सोने के आभूषण, पोल्की, कुंदन जड़ाऊ और सार्टिफाइड रत्न, बाय-बैंक सुविधा के साथ www.indiangem.com

अधिकृत रिटेलर : प्लैटिनम, एमएमटीसी गोल्ड और सिल्वर बार्स

रोजगार के क्षेत्र में अनिश्चितता के संकेत

पिछले कुछ वर्षों में भारत में बड़े पैमाने पर होने वाले तकनीकी परिवर्तनों के प्रति खासा उत्साह देखा गया है। देश में सामाजिक व आर्थिक स्तर पर तेजी से डिजिटल परिवर्तन को जनसाधारण ने भी उत्साह के साथ अंगीकार किया है। इस उम्मीद के साथ कि बदलते वक्त के साथ कदमताल करना अपरिहार्य है। आकांक्षा यह भी कि तकनीकी बदलाव के दौर में दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाले देश में रोजगार के नये अवसर भी सृजित हों। ऐसे परिदृश्य में देश की प्रतिष्ठित मानी जाने वाली टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज यानी टीसीएस द्वारा बारह हजार से अधिक कर्मचारियों की छंटनी की घोषणा एक परेशान करने वाला घटनाक्रम है। यह संख्या संस्था के कुल कार्यबल का दो फीसदी बैठता है। निस्संदेह, छंटनी का यह फैसला आईटी क्षेत्र में आसन्न संकट की आहट को ही दर्शाता है। कहा जा रहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से प्रेरित तकनीकी हस्तक्षेप और वैश्विक स्तर पर मांग को लेकर उत्पन्न अनिश्चितताओं के चलते भारत की प्रतिष्ठा का पर्याय रहा आईटी सेवा उद्योग संरचनात्मक बदलाव की ओर बढ़ रहा है। इस बाबत टीसीएस की दलील है कि इन नौकरियों में कटौती कौशल की कमी और अपने विकसित होते व्यावसायिक मॉडल में कुछ कर्मचारियों को फिर से नियुक्त करने में असमर्थता के चलते की गई है। हालांकि, कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी का दावा है कि इस कदम के पीछे एआई से प्रेरित उत्पादकता वृद्धि नहीं है। उद्योग या बाजार की प्राथमिकताएं भी नहीं हैं। लेकिन मौजूदा समय में यह कदम लागत-अनुकूलन पहलों के चलते अन्य आईटी सेवा कंपनियों में भी छंटनी को बढ़ावा दे सकता है। इसमें दो राय नहीं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता कारोबार के नियमों में मौलिक बदलाव के चलते, भविष्य के लिये तैयार रहना हर व्यावसायिक उद्यम के एजेंडे में सबसे ऊपर होगा। इस नई हकीकत को देखते हुए, एक सवाल सबसे ज्यादा विचलित करने वाला यह है कि यह तकनीकी बदलाव अनिवार्य रूप से कर्मचारियों की कीमत पर होना चाहिए?

बताया जाता है कि टीसीएस ने एआई को उन्नत करने और प्रशिक्षण में भारी निवेश किया है। इसके उपरांत बताया जा रहा है कि अब वह कई माध्यम से वरिष्ठ स्तर के कर्मचारियों को सेवा में बनाये रखने में असमर्थता जता रही है। यह मानना कि नई तकनीक के साथ संवेदनशील समायोजन हमेशा लाभदायक नहीं रहता, की सोच ने एक खतरे की घंटी बजा दी है। देश के बड़े व छोटे व्यवसायों द्वारा नए तकनीकी मॉडल को आंख बंद करके अपनाने से एक परेशान करने वाले परिदृश्य का खतरा सामने नजर आ रहा है। इन उद्योगों को चिंता है कि तकनीकी बदलाव की स्पर्धा के इस परिदृश्य में कहीं वे पीछे न रह जाएं। इस अनिश्चित समय में, एक उम्मीद की किरण,यदि कोई है, तो वह है भारत का पिछले कुछ वर्षों में बड़े पैमाने पर सफलता से तकनीकी परिवर्तन को स्वीकार करना। देश ने हर सामाजिक और आर्थिक स्तर पर तेजी से डिजिटल तकनीक को सहजता से स्वीकार किया है। एआई को अपनाने के लिये उसी तरह सार्वजनिक व निजी क्षेत्र के समर्थन-सहयोग की आवश्यकता है। सार रूप में कहें तो एक भारतीय दृष्टिकोण, जो मानव संसाधन और परिवर्तन के अनुकूल होने की उसकी क्षमता को महत्व देता है। निस्संदेह, भारत एआई के उपयोग के मामले में अमेरिका व यूरोप नहीं हो सकता। दुनिया की सबसे ज्यादा आबादी वाले देश में बेरोजगारी का संकट किसी से छिपा नहीं है। देश में श्रमबल का कौशल विकास धीरे-धीरे गति पकड़ रहा है। सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों में आईटी पाठ्यक्रमों में दाखिला लेने वाले छात्रों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। टीसीएस के इस फैसले से आईटी पाठ्यक्रमों में अध्ययन कर रहे उन लाखों छात्रों और डिग्री लेकर निकल रहे उत्साही इंजीनियरों में निराशा व्याप्त होगी। भारत में बढ़ता रोजगार संकट केंद्र सरकार से निरंतर हस्तक्षेप की मांग करता है। हाल ही में हरियाणा में कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित दो दिवसीय परीक्षा में लाखों प्रत्याशियों का शामिल होना बताता है कि बेरोजगारी किस पैमाने पर है। यह भी कि उनके लिये अवसर बेहद कम हैं।

पटरी पर सुरक्षा की ओर: मानव तस्करी के खिलाफ आरपीएफ की अडिग लड़ाई

मनोज यादव, आईपीएस महानिदेशक रेलवे सुरक्षा बल

यह 21 जुलाई, 2025 की एक साधारण दोपहर थी, जब नई जलपाईगुड़ी रेलवे स्टेशन की भीड़भाड़, गाड़ियों की आवाजाही, उद्घोषणाओं और यात्रियों की भागदौड़ के बीच एक काली हकीकत छिपी हुई थी - मानव तस्करी।

सूचना मिलने पर रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) की महिला उप निरीक्षक सुश्री सारिका कुमारी ने, आरपीएफ और जीआरपी (सरकारी रेलवे पुलिस) अधिकारियों के साथ मिलकर, तुरंत कार्रवाई की। ट्रेन संख्या 13245 डाउन की कई बोगियों में एक शांत और समन्वित तलाशी शुरू की गई और जो सामने आया, वह चौंकाने वाला था।

छप्पन युवा लड़कियाँ, भ्रमित और अपनी यात्रा के उद्देश्य से अनजान, दो व्यक्तियों - जितेंद्र कुमार पासवान और चंद्रिमा कर - के साथ पाई गईं। ये आरोपी दावा कर रहे थे कि वे लड़कियों को बेंगलुरु के मोटर पार्ट्स और मोबाइल फोन कंपनियों में काम दिलाने ले जा रहे हैं। पकड़े जाने से बचने के लिए लड़कियों को अलग-अलग डिब्बों में बिठाया गया था। पूछताछ करने पर लड़कियाँ अपनी यात्रा या रोजगार के बारे में जानकारी नहीं दे सकीं, और यहाँ तक कि उनके माता-पिता भी पूरी तरह अनभिज्ञ थे। उनके कोच और बर्थ नंबर उनकी हथेलियों पर स्याही से लिखे हुए थे - यह इस बात का भयावह प्रमाण था कि यह अपराध कितनी संगठित रूप से किया जा रहा था। तस्कर कोई वैध दस्तावेज़ प्रस्तुत नहीं कर सके और न ही संतोषजनक उत्तर दे सके। कानूनी प्रावधानों के तहत दोनों को गिरफ्तार किया गया और सत्यापन के बाद लड़कियों को मुक्त कर दिया गया।

इस सफलता के पीछे केवल एक टीम नहीं थी, बल्कि एक सतर्क सुरक्षा तंत्र था, जो यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि भारत की विशाल रेलवे नेटवर्क - देश की जीवनरेखा - मानव शोषण का माध्यम न बने।

जीवन की रक्षा में आरपीएफ की बढ़ती भूमिका

आरपीएफ के लिए यह सेवा का एक और दिन था - निःशब्द और दृढ़ संकल्पित। यात्री सुरक्षा सुनिश्चित करने, रेलवे संपत्ति की रक्षा करने और व्यवस्था बनाए रखने जैसी अनेक जिम्मेदारियों के बीच, एक भूमिका ने पिछले दशक में विशेष महत्व प्राप्त किया है: मानव तस्करी को रोकना।

13,000 ट्रेनों, 7,500 स्टेशनों और प्रतिदिन अनुमानित 2.3 करोड़ यात्रियों के साथ, भारतीय रेल भारत कोने-कोने से जोड़ती है। लेकिन यही सुविधा अपराधियों के लिए आकर्षण का केंद्र भी बन जाती है - ऐसे तत्व, जो इस सस्ती, सुलभ और गुमनाम यात्रा प्रणाली का दुरुपयोग करके अपने शिकारों को तस्करी के जरिए ले जाते हैं। महिलाएँ और बच्चे, विशेषकर हाशिए पर रहने वाले क्षेत्रों से, झूठे रोजगार, शिक्षा या विवाह के वादों से बहकाकर बाल श्रम, वेश्यावृत्ति और भीख मांगने में धकेल दिए जाते हैं। आरपीएफ इस खतरे से निपटने के लिए एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरी है। खुफिया-आधारित ऑपरेशनों, नागरिक पुलिस, गैर सरकारी संगठनों और अन्य एजेंसियों के साथ समन्वय के माध्यम से, आरपीएफ राष्ट्रीय स्तर पर मानव तस्करी के खिलाफ लड़ाई की प्रमुख भागीदार बन गई है।

पुलिसिंग से संरक्षण तक: तस्करी-मुक्त नेटवर्क की दिशा में

मानव तस्करी के खिलाफ आरपीएफ की सक्रिय भूमिका रातों-रात नहीं बनी, बल्कि यह रणनीतिक, संगठित और प्रतिबद्ध विकास का परिणाम है।

यह बदलाव 2020 में शुरू हुए ऑपरेशन नन्हे फरिश्ते से प्रारंभ हुआ, जिसका उद्देश्य उन बच्चों को बचाना था जो खो गए थे, छोड़े गए थे, घर से भाग गए थे या शोषण की स्थिति में फंसे थे। शुरू में बच्चों पर केंद्रित यह अभियान जल्द ही मानव तस्करी के व्यापक जाल को उजागर करने लगा - जिससे महिलाओं और अन्य संवेदनशील वयस्कों को भी बचाने पर ध्यान केंद्रित हुआ।

पिछले साढ़े चार वर्षों में इस अभियान ने 64,000 से अधिक बच्चों को बचाया - 43,493 लड़के और 20,411 लड़कियाँ - जिन्हें बाल श्रम, संगठित भीख मांगने और जबरन मजदूरी से निकाला गया। बचाव के बाद बच्चों को बाल कल्याण समितियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, जहाँ उन्हें पुनर्वास या सुरक्षित संस्थागत देखभाल दी जाती है। इसमें चाइल्ड हेल्प डेस्क और जिला बाल संरक्षण इकाइयों का महत्त्वपूर्ण सहयोग है। वर्तमान में 135 प्रमुख स्टेशनों पर यह व्यवस्था लागू है और इसे और बढ़ाने की योजना है। इस सफलता पर आगे बढ़ते हुए, आरपीएफ ने 2022 में ऑपरेशन एएएचटी (मानव तस्करी के खिलाफ कार्रवाई) शुरू किया, जिसके तहत भारतीय रेलवे नेटवर्क पर 750 एंटी-ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट्स गठित की गईं। ये इकाइयाँ खुफिया छापेमारी, निगरानी अभियान और एनजीओ व स्थानीय पुलिस के साथ संयुक्त बचाव कार्य करती हैं। साथ ही, राष्ट्रीय महिला आयोग और आरंभ इंडिया (एनजीओ) के साथ समझौते किए गए, जिससे क्षमता निर्माण, त्वरित सूचना साझा करना और पुनर्वास सहयोग संभव हुआ।

रणनीतिक खुफिया और तकनीकी बढ़त: पहचान की नई दिशा

अब तस्करी के खिलाफ लड़ाई केवल सतर्कता पर नहीं, बल्कि सटीकता, भविष्यवाणी और एकीकृत रणनीति पर आधारित है। आरपीएफ की पहचान प्रक्रिया अब बहुआयामी और तकनीक-सक्षम हो चुकी है। टिकट परीक्षकों, कुलियों और ट्रेन की हाउसकीपिंग स्टाफ जैसे अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों को संदिग्ध संकेतों की पहचान के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। डेटा एनालिटिक्स, सीसीटीवी निगरानी और एआई-सक्षम फेस रिकग्निशन सिस्टम संदिग्धों की पहचान में मदद करते हैं। सोशल और डिजिटल मीडिया का उपयोग भी इस मिशन को आधुनिक बढ़त देता है। ट्विटर, व्हाट्सऐप हेल्पलाइन और भीड़-स्रोतित सूचनाओं से कई बचाव संभव हुए हैं। इस विकसित निगरानी तंत्र ने सुनिश्चित किया है कि अब तस्कर भीड़भाड़ वाले और अराजक स्टेशनों में भी सुरक्षित नहीं हैं।

बचाव, गिरफ्तारी और सुधार: ठोस प्रगति, वास्तविक जीवन

2021 से मध्य 2025 के बीच 2,912 मानव तस्करी पीड़ितों को आरपीएफ ने बचाया, जिनमें 2,600 से अधिक नाबालिग और 264 वयस्क शामिल थे। इसी अवधि में 701 तस्करों को गिरफ्तार किया गया। इसके अलावा, आरपीएफ ने बांग्लादेश और म्यांमार से आए अवैध प्रवासियों की पहचान करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिनमें से कई तस्करी के शिकार थे। 2022 से 2024 के बीच ऐसे 580 मामले दर्ज किए गए। लेकिन बचाव केवल पहला कदम है। पीड़ितों को परामर्श, सहायता और पुनर्वास भी प्रदान किया जाता है। मुजफ्फरपुर से लेकर सिकंदराबाद, कटिहार से अजमेर तक, ज्ञात तस्करी मार्गों को बाधित किया गया है। गोरखपुर-सिकंदराबाद एक्सप्रेस, राजेंद्रनगर-अजमेर एक्सप्रेस और नई जलपाईगुड़ी-अमृतसर एक्सप्रेस जैसी गाड़ियाँ निगरानी का मुख्य केंद्र बनी हैं।

रोकथाम: पहली रक्षा पंक्ति

जहाँ बचाव और अभियोजन आवश्यक हैं, वहीं रोकथाम सबसे प्रभावी रणनीति बनी हुई है।आरपीएफ ने सरकार की पहल के साथ मिलकर रेलवे नेटवर्क में जनजागरूकता अभियान चलाए हैं। स्टेशनों पर नुक्कड़ नाटक, पोस्टर, बैनर और स्टैंडियों का प्रदर्शन उद्घोषणा प्रणाली और रेल डिस्प्ले नेटवर्क पर संदेश प्रसारित करना सोशल मीडिया और सामुदायिक अभियान स्टॉप ट्रैफिकिंग: क्योंकि हर बच्चा आज़ाद होने का हकदार है जैसे नारे केवल शब्द नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक बदलाव का हिस्सा हैं। हेल्पलाइन 1098 और 112 को जोड़ा गया है ताकि शिकायतों पर तुरंत कार्रवाई हो सके। इस प्रकार, स्टेशन अब सुरक्षा क्षेत्र में बदल रहे हैं - जहाँ तस्कर अदृश्य नहीं रह पाते और पीड़ित कभी अकेले नहीं छोड़े जाते।

एकजुट रहकर मोर्चा संभालना

विश्व मानव तस्करी निरोधक दिवस पर नई जलपाईगुड़ी से बचाई गई 56 लड़कियों की यह कहानी अपवाद नहीं है - यह पूरे देश में चल रही एक निरंतर लड़ाई का प्रतीक है।

लेकिन तस्करी एक गतिशील खतरा है। यह बदलती रहती है, छिप जाती है और उन्हीं प्रणालियों में घुसपैठ कर लेती है, जिन्हें प्रगति का माध्यम होना चाहिए। इसलिए यह चुनौती निरंतर है। इसके लिए सतत सतर्कता, एजेंसियों के बीच तालमेल, नीतिगत नवाचार और सबसे बढ़कर, समाज की सामूहिक प्रतिबद्धता जरूरी है। क्योंकि तस्करी को रोकना केवल आरपीएफ का कर्तव्य नहीं - यह हम सबकी साझा जिम्मेदारी है। और हर बार जब कोई ट्रेन स्टेशन पर पहुँचती है बिना किसी जीवन को शोषण की गिरफ्त में खोए, हम एक सुरक्षित और स्वतंत्र भारत की ओर एक कदम और बढ़ जाते हैं।

बाघों के सबसे बड़े घर में सुरक्षा बनी चुनौती

प्रमोद भार्गव

मध्यप्रदेश में चल रहे मानव-बाघ संघर्श और अवैध शिकार एक बड़ी चुनौती बनकर पेश आई है। क्योंकि यह राज्य देश में 'टाइगर स्टेट' कहा जाता है। बाघों की निरंतर बढ़ती संख्या इनके संरक्षण और सुरक्षा के लिए चुनौती बन रही है। अतएव वन विभाग को सुरक्षा के साथ संवेदनशीलता की भी जरूरत है। क्योंकि अब इनके आवास और प्रजनन के क्षेत्र केवल बाघों के लिए आरक्षित उद्यान नहीं रह गए हैं। ये अपना क्षेत्र विस्तृत कर रहे है। प्रदेश में वर्तमान में बाघों की संख्या 850 से लेकर 900 के बीच है। उम्मीद की जा रही है कि 2026 में होने वाली बाघ-गणना में 950 से अधिक बाघ प्रदेश के वन प्रांतरों में हो सकते है, लेकिन चिंता की बात है कि राश्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधीकरण (एनटीसीए) के ताजा आंकड़ों के अनुसार 2025 के छह माह के भीतर 29 बाघों की मौत हो चुकी है। यानी औसतन प्रतिमाह पांच बाघ या तो प्राकृतिक मौत मरे है या फिर पेशेवर शिकारियों ने उनका शिकार किया है।

हाल ही में शिवपुरी से लगे ष्योपुर से तीन बाघों की हड्डियों के साथ तीन आरोपियों को स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स ने पकड़ा है। इनमें से एक बाघिन टी-1 शिवपुरी के माधव राष्ट्रीय उद्यान की बताई जा रही है। इस बाघिन की करीब 1 वर्ष से जानकारी नहीं मिल रही है। जबकि इसके गले में आईडी कॉलर डली हुई है। इस मामले में शिवपुरी के उद्यान से लगे ग्राम भीमपुर से पकड़े गए मुख्य आरोपी सोजीराम मोगिया ने स्वीकार किया है कि उसने जहर देकर एक बाघ को मारा है। हालांकि वनसंरक्षक उत्तम षर्मा प्रमाण के अभाव में बाघिन का शिकार करना स्वीकार नहीं कर रहे है, लेकिन बाघिन किस स्थल पर हैं, इसका उनके पास कोई उत्तर नहीं है। सौजीराम का 250 बीघा वनभूमि पर अवैध कब्जा भी है, जो उद्यान की सीमा से लगा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बाघ परियोजना के 50 साल पूरे होने के अवसर पर कर्नाटक के मैसूर में बाघों की नई गणना रिपोर्ट-2022 जारी की थी। हालांकि यह संख्या और ज्यादा भी हो सकती है, क्योंकि यह गिनती केवल बाघ परियोजना क्षेत्रों में लगे कैमरों में कैद हुए बाघों की, की गई थी। बाघों की यह वृद्धि दुनिया के लिए गर्व का विषय है। यह दुर्लभ प्राणी एक समय लुप्त होने के कगार पर पहुंच गया था, तब 1 अप्रैल 1973 को प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने बाघ परियोजनाओं के जरिए बाघ संरक्षण के मजबूत उपाय किए थे।दुनिया की कुल आबादी के 75 प्रतिशत बाघ अकेले भारत में हैं। देश की सभी

बाघ परियोजनाओं में 75000 वर्ग किमी क्षेत्र बाघों के लिए सुरक्षित है। दुनिया का महज 2.4 प्रतिशत भू-भाग हमारे पास है, जबकि जैव-विविधता के संरक्षण में हमारा योगदान आठ प्रतिशत है। भारत की कुल आबादी के करीब 850 बाघ मध्यप्रदेश की धरती पर विचरण कर रहे हैं। इसीलिए अब मध्यप्रदेश 'बाघ राज्य' (टाइगर स्टेट) कहलाता है। बाघ संरक्षण भारत सरकार और राज्यों की साझा जिम्मेदारी है। संवेदना और सह-अस्तित्व के लिए प्रोत्साहित करने वाली हमारी सांस्कृतिक विरासत ने बाघ परियोजना की सफलता में अहम् भूमिका निभाई है। इन साझा प्रयासों का ही परिणाम है कि बाघों की संख्या में बढ़ोत्तरी दर्ज की जा रही है।

बीती सदी में जब बाघों की संख्या कम हो गई तब मध्य प्रदेश के कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में पैरों के निशान के आधार पर बाघ गणना प्रणाली को षुरूआती मान्यता दी गई थी। ऐसा माना जाता है कि हर बाघ के पंजे का निशान अलग होता है और इन निशानों को एकत्र कर बाघों की संख्या का आकलन किया जा सकता है। कान्हा के पूर्व निदेशक एचएस पवार ने इसे एक वैज्ञानिक तकनीक माना था, लेकिन यह तकनीक उस समय मुश्किल में आ गई, जब 'साइंस इन एशिया' के मौजूदा निदेशक के उल्लास कारंत ने बंगलुरु की वन्य जीव संरक्षण संस्था के लिए विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों में बंधक बनाए गए बाघों के पंजों के निशान लिए और विशेषज्ञों से इनमें अंतर करने के लिए कहा। इसके बाद पंजों के निशान की तकनीक की कमजोरी उजागर हो गई और इसे नकार दिया गया।

इसके बाद 'कैमरा ट्रैपिंग' का एक नया तरीका पेश आया। जिसे कारंत की टीम ने शुरुआत में दक्षिण भारत में लागू किया। इसमें जंगली बाघों की तस्वीरें लेकर उनकी गणना की जाती थी। ऐसा माना गया कि प्रत्येक बाघ के षरीर पर धारियों का प्रारूप उसी तरह अलग-अलग है, जैसे इंसान की अंगुलियों के निशान अलग-अलग होते हैं। यह एक महंगी आकलन प्रणाली थी। पर यह बाघों के पैरों के निशान लेने की तकनीक से कहीं ज्यादा सटीक थी। इसके तहत कैप्चर और री-कैप्चर की तकनीकों वाले परिश्कृत सांख्यिकी उपकरणों और प्रारूप की पहचान करने वाले सॉफ्टवेयर का प्रयोग करके बाघों की विश्वसनीय संख्या का पता लगाने की षुरूआत हुई। इस तकनीक द्वारा गिनती सामने आने पर बाघों की संख्या नाटकीय ढंग से घट गई थी, जो अब बढ़ रही है।

हालांकि बढ़ते क्रम में बाघों की गणना को हमेशा पर्यावरणविद्ों ने संदिग्ध माना है। क्योंकि आर्थिक उदारवाद के चलते बहुराष्ट्रीय कंपनियों को प्राकृतिक संपदा के दोहन की छूट जिस तरह से दी जा रही है, उसी अनुपात में बाघ के प्राकृतिक आवास भी प्रभावित हो रहे हैं। खनन और राजमार्ग विकास परियोजनाओं ने बाघों की वंश वृद्धि पर अंकुश लगाया है। इन परियोजनाओं को प्रचलन में लाने के लिए चार गुना मानव बसाहटें बाघ आरक्षित क्षेत्रों में बढ़ी हैं। नतीजतन मानव और पशुओं के बीच संघर्श बढ़ा है। केंद्र व राज्य सरकारों की नीतियां भी खनन परियोजनाओं को बढ़ावा दे रही हैं। पन्ना में हीरा खनन परियोजना, कान्हा में बॉक्साइट, राजाजी में राष्ट्रीय राजमार्ग, तड़ोबा में कोयला खनन और उत्तर-प्रदेश के तराई वन क्षेत्रों में इमारती लकड़ी माफिया बाघों के लिए जबरदस्त खतरा बने हुए हैं। इसके बावजूद खनिज परियोजनाओं के विरुद्ध बुलंदी से आवाज न राजनीतिकों की ओर से उठ रही और न ही वन अमले की तरफ से ? हां वन अमले की बर्बरता और गोपनीयता जरूर वैसी ही बनी चली आ रही है, जो फिरंगी हुकूमत के जमाने में थी। अंग्रेजों से विरासत में मिली इस शैली में बदलाव अभी तक वन अमला लाया नहीं है। इस कारण बाघों की मौतें भी बढ़ रही हैं। जबकि राष्ट्रीय उद्यानों, वनकर्मियों और वन आंवटन में निरंतर वृद्धि हो रही है। प्रत्येक आरक्षित उद्यान को 20 से 26 करोड़ रुपए दिए जाते हैं। आशंकाएं तो यहां तक हैं कि बाघों की संख्या बढ़ा-चढ़ाकर इसलिए बताई जाती है, ताकि इनके संरक्षण के बहाने बरस रही देशी-विदेशी धनराशि नौकरशाही का हिस्सा बनती रहे।

वर्तमान में चीन में बाघ के अंग और खालों की सबसे ज्यादा मांग हैं। इसके अंगों से यहां पारंपरिक दवाएं बनाई जाती हैं और उसकी हड्डियों से महंगी शराब बनती है। भारत में बाघों का जो अवैध शिकार होता है, उसे चीन में ही तस्करी के जरिए बेचा जाता है। बाघ के अंगों की कीमत इतनी अधिक मिलती है कि पेशेवर शिकारी और तस्कर बाघ को मारने के लिए हर तरह का जोखिम उठाने को तैयार रहते हैं। बाघों की दुर्घटना में जो मौतें हो रही हैं, उनका कारण इनके आवासीय क्षेत्रों में निरंतर आ रही कमी है। जंगलों की बेतहाशा हो रही कटाई और वन-क्षेत्रों में आबाद हो रही मानव बस्तियों के कारण भी बाघ बेमौत मारे जा रहे हैं।

पर्यटन के लाभ के लिए उद्यानों एवं अभ्यारण्यों में बाघ देखने के लिए जो क्षेत्र विकसित किए गए हैं, उस कारण इन क्षेत्रों में पर्यटकों की अवाजाही बढ़ी है, नतीजतन बाघ एकांत तलाशने के लिए अपने पारंपरिक रहवासी क्षेत्र छोड़ने को मजबूर होकर मानव बस्तियों में पहुंचकर बेमौत मर रहे हैं। बाघ संरक्षण विशेश क्षेत्रों का जो विकास किया गया है, वह भी उसकी मौत का कारण बन रहा है, क्योंकि इस क्षेत्र में बाघ का मिलना तय होता है। बाघों के निकट तक पर्यटकों की पहुंच आसान बनाने के लिए बाघों के शरीर में रेडियो कॉलर आईडी लगाए गए हैं, वे भी इनकी मौत का प्रमुख कारण हैं। सीसीटीवी कैमरे भी इनको बेमौत मार देने की सूचना का आधार बन रहे हैं। दरअसल कैमरे के चित्र और कॉलर आईडी से इनकी उपस्थिति की सटीक जानकारी वनकर्मियों के पास होती है। तस्करों से रिश्वत लेकर वनकर्मी बाघ की उपस्थिति की जानकारी दे देते हैं। नतीजतन शिकारी बाघ को आसानी से निशाना बना लेते हैं।

अप्रत्यक्ष व अप्रामाणिक तौर से यह सत्य सामने आ चुका है कि बाघों के शिकार में कई वनाधिकारी शामिल हैं, इसके बावजूद जंगल महकमा और कुलीन वन्य जीव प्रेमी वनखण्डों और उनके आसपास रहने वाली स्थानीय आबादी को वन्यप्राणी संरक्षण से जोड़ने की कोशिश करने की बजाय भोले-भाले आदिवासियों पर झूठे मुकदमे लादने और उन्हें वनों से बेदखल करने की कोशिशों में लगे हैं। जबकि सच्चाई है कि सदियों से वनों में आदिवासियों का बाहुल्य उनका प्रकृति और प्राणी से सह-अस्तित्व की जीवन शैली ही ईमानदारी से वन और वन्य जीवों के लिए सुरक्षा व संरक्षण का मजबूत तंत्र साबित हो सकता है।

आज का पंचांग

कोलकाता : 30 जुलाई, बुधवार, 2025, विक्रम सम्वत् 2082, श्रावण शुक्लपक्ष षष्ठी, 26:42 तक, नक्षत्र : हस्त, 21:49 तक, योग : सिद्ध, 27:32 तक, सूर्योदय: 5:07, सूर्यास्त: 18:19, चन्द्रोदय : 09:54, चन्द्रास्त: 21:47, शक सम्वतः 1947 विश्वावसु, सूर्य राशि : कर्क, चन्द्र राशि : कन्या, राहू काल : 11:42 से 13:20

राशिफल

मेष : आज के दिन मेष राशि के जातकों का मन प्रसन्न रहेगा। शैक्षिक कार्यों के प्रति सचेत रहने की जरूरत है। नौकरी में विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। किसी दोस्त के सहयोग से सम्पत्ति में निवेश कर सकते हैं।

वृष : वृषभ राशि के जातकों का आज का दिन मान सम्मान में वृद्धि लेकर आएगा। आर्थिक स्थिति पहले से मजबूत होने के चलते आप किसी को रुपए उधार से सकते हैं। परंतु ऐसा करने से आपको बचना होगा।

मिथुन : मिथुन राशि के जातकों का आज का दिन काफी मजबूत रहने वाला है। सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत लोगों के मान सम्मान में वृद्धि होगी,क्योंकि उनको अच्छे कार्यों से जाना जाएगा।

कर्क : कर्क राशि के जातकों का आज का दिन मध्यम रूप से फलदायक रहने वाला है। अपने माता-पिता को किसी धार्मिक स्थान की यात्रा करा सकते हैं।

सिंह : सिंह राशि के जातकों का आज का दिन आलस्य भरा रहेगा। परिवार में किसी सदस्य के विवाह प्रस्ताव पर मुहर लगेगी, जिससे परिवार का माहौल खुशनुमा रहेगा।

कन्या : कन्या राशि के जातकों का आज का दिन लेनदेन के मामले में सावधानी बरतने के लिए रहेगा। व्यापार कर रहे जातकों को अपने व्यापार में लेन-देन सावधानी से करना होगा।

तुला : तुला राशि के जातकों का आज का दिन मिलाजुला रहने वाला है। आवश्यक कार्य के चलते घर से दूर जाना पड़ सकता है। माता पिता के आशीर्वाद से आप किसी नए निवेश को कर सकते हैं।

वृश्चिक : वृश्चिक राशि के जातकों का आज का दिन प्रसन्नता दिलाने वाला रहेगा। यदि आपके ऊपर कुछ कर्ज चला आ रहा था,तो वह काफी हद तक कम होगा।

धनु : धनु राशि के जातकों का आज का दिन अच्छा रहने वाला है। भाग्य का साथ मिलने से रुके हुए काम आसानी से बनते चले जाएंगे। जो युवा नौकरी के लिए भटक रहे हैं, उन्हें आज कुछ राहत मिल सकती है।

मकर : मकर राशि के जातकों का आज का दिन खुशियां लेकर आएगा। आपको यदि किसी यात्रा पर जाना पड़े,तो उसमें वाहन सावधानी से चलाएं,अन्यथा दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं।

कुम्भ : कुंभ राशि के जातकों के पारिवारिक जीवन में सुख शांति बनी रहेगी। व्यापार करने वाले जातकों को व्यापार में अच्छा लाभ मिलने से प्रसन्न रहेंगे।

मीन : मीन राशि के जातकों का आज का दिन उतार-चढ़ाव भरा रहेगा। व्यापार करने वाले जातक किसी नए व्यापार की शुरुआत कर सकते हैं,जिसके लिए आपको किसी अनुभवी व्यक्ति से सलाह लेना बेहतर रहेगा।

वर्ग पहेली नं. 3168

1		2	3	■	4		5	■	7
	■	8				■	9		
10	11	■		■	12			■	■
■		■	13			■	14	15	16
■	17	18		■	■	19	■	20	
21			■	22	23		24	■	
	■	25				■	26	27	
28	29	■	■		■	30			■
31			■	32			■	33	

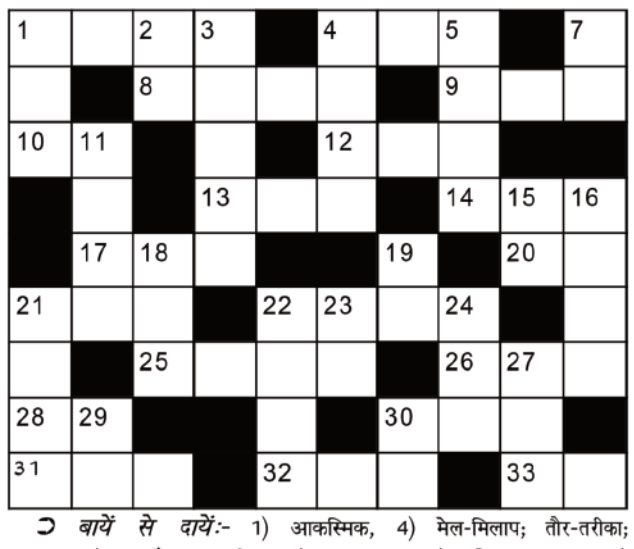

बायें से दायें:- 1) आकस्मिक, 4) मेल-मिलाप; तौर-तरीका; व्यवहार, 8) न ऊँचा न नीचा, 9) बंटा ढार, 10) भरोसा; सहारा, 12) कार्यक्षेत्र, 13) नौका घाट, 14) ख़राब, 17) सहयोग, 20) लागत ; ख़र्चा, 21) जानजोखिम; संकट; भय, 22) एक मसाला, 25) कुछ कुछ लाल, 26) शिव, 28) कानून का एक नियम; धारा, 30) भगोड़ा, 31) खाल का बना पानी भरने का थैला, 32) चुंगीचोर, 33) अनुपस्थिति.

ऊपर से नीचे:- 1) मुखिया, 2) रुधिरवाहिनी नलिका, 3) कटिबद्ध; मुस्तैद, 4) सिख, 5) नज़र बचाकर निकल जाना, 7) जामन डालकर जमाया दूध, 11) रज़ामंद, 15) कविता, 16) सुराप्रेमी, 18) झिरी, 19) अधिक; दूसरा, 21) साहस, 22) खुला, 23) अनुपात; मूल्य; रेट, 24) कक्ष; केबिन, 27) ताकना, 29) प्रकट; अनावृत, 30) लोमवाला चमड़ा.

(उत्तरः अगले अंक में)

पिछली पहेली का उत्तर

अ	■	नि	■	प्र	त्ये	क	■	म	सा
न	ज़ा	रा	■	का	■	रा	ह	ज़	नी
मो	■	ला	प	र	वा	ह	■	दू	■
ल	ट	■	रि	■	स्त	■	ह	र	ना
■	ह	लु	वा	■	वि	श्रा	म	■	■
दि	ल	■	र	ज	क	■	रा	स	भ
गं	■	गु	■	ब	■	क्र	ह	र	■
ब	क	ना	■	र	सी	द	■	ल	ता
र	■	ह	सी	न	■	म	ह	त	ब

सुडोकू-पहेली-3125

6			8		2	5		
								2
4		2					9	
		1				9		
9			7		1		8	
				4			5	
3		7	1					
	5		9	7	6			3
					8		6	

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरना आवश्यक है। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है।

••••

आड़ी और खड़ी में एवं 3-3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका ध्यान जरूर रखें।

सूडोकू पहेली - 3124 का उत्तर

2	8	5	9	7	4	6	1	3
7	9	6	3	1	2	4	5	8
1	3	4	6	8	5	9	2	7
8	2	3	4	6	1	5	7	9
5	1	9	2	3	7	8	4	6
4	6	7	5	9	8	1	3	2
3	4	1	8	2	6	7	9	5
9	7	8	1	5	3	2	6	4
6	5	2	7	4	9	3	8	1

पीएम ने जिन परियोजनाओं का उद्घाटन किया, उसमें योगदान के लिए बंगाल सरकार को श्रेय नहीं दिया गया : ममता

❑ **मुख्यमंत्री ने किया 1000 करोड़ से ज्यादा की योजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास**

बीरभूम : बीरभूम जिले के इलमबाजार राइस मिल मैदान से मंगलवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कई योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया। इस मौके पर उन्होंने विभिन्न योजनाओं के तहत परिसेवा भी प्रदान की। मुख्यमंत्री ने कहा कि बक्रेश्वर थर्मल पावर के जलाशय से विद्युत निर्माण की योजना राज्य की पहली ऐसी परियोजना है, जहां जलाशय से बिजली बनाई जाएगी। उन्होंने बताया कि यह पहल न केवल लागत कम करेगी बल्कि पर्यावरण के लिए भी अनुकूल होगी। ममता ने कहा कि यदि यह परियोजना सफल होती है, तो राज्य के अन्य जलाशयों में भी इस पद्धति को लागू किया जाएगा। उन्होंने प्रशासनिक अधिकारियों को इसकी विस्तृत जांच करने का निर्देश दिया। इसी अवसर पर मुख्यमंत्री ने राज्य के विभिन्न हिस्सों में एक हजार से अधिक परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया। इन परियोजनाओं पर कुल 1142 करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान है। इसमें बीरभूम के जयदेव केंदुली कांकसा अजय नदी सेतु, मालदा में पांच नए पुल, सिउड़ी जिला अस्पताल में हाइब्रिड सीसीयू, बशीरहाट में डायलिसिस यूनिट और डायमंड हार्बर में लालपोल ब्रिज जैसी योजनाएं शामिल हैं। इस दौरान, मुख्यमंत्री ममता ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रदेश में हाल ही में जिन परियोजनाओं का उद्घाटन किया, उनमें योगदान के लिए राज्य सरकार को उचित श्रेय नहीं दिया। प्रधानमंत्री का नाम लिये बिना बनर्जी ने कहा कि सिटी गैस परियोजना को राज्य सरकार से सहायता मिलेगी, जिसकी आधारशिला 18 जुलाई को दुर्गापुर में रखी गई थी। ममता ने कहा कि हमने सड़क ओवर ब्रिज के लिए 54 करोड़ रुपये दिए, जिनका उद्घाटन किया गया, लेकिन इसका कभी उल्लेख नहीं किया गया। गैस परियोजना की आधारशिला रखने के अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने पश्चिम बर्धमान जिले के तोपसी और पांडाबेश्वर में सेतु भारतम कार्यक्रम के तहत निर्मित 380 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाले दो सड़क पुलों का भी उद्घाटन किया। ममता ने कहा कि उनकी सरकार के कार्यकाल में पश्चिम बंगाल में लगभग दो करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि एशिया की सबसे बड़ी मानी जा रही देवचा पचामी कोयला खदान परियोजना में लगभग 35,000 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा। उन्होंने बताया कि बीरभूम जिले में इस परियोजना स्थल पर बेसाल्ट खनन का काम पहले ही शुरू हो चुका है।

❑ **केंद्र पर फंड रोकने का आरोप**

जल मिशन फंड को लेकर मुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार की आलोचना की। उन्होंने कहा कि 90 प्रतिशत फंड और भूमि राज्य सरकार देती है, जबकि केंद्र को केवल 40 प्रतिशत देना होता है। इसके बावजूद फंड रोक दिया जाता है। उन्होंने सांसदों और विधायकों को अपने-अपने क्षेत्रों में वित्तीय सहयोग कर पीएचई विभाग की मदद करने का निर्देश दिया। ममता ने कहा कि यदि केंद्र फंड नहीं देता, तब भी राज्य सरकार जनता के कार्यों को जारी रखेगी और किसी को असुविधा में नहीं छोड़ेगी। मंच से ही उन्होंने मुख्य सचिव को सभी परियोजनाओं की प्रगति की जांच करने का आदेश दिया।

❑ **ममता ने दी चेतावनी, वोटर लिस्ट से नाम हटे तो करें विरोध**

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने एक बार फिर वोटर लिस्ट से नाम हटाने के मुद्दे पर आक्रामक रुख अपनाया है। मंगलवार को बीरभूम जिले में आयोजित एक सरकारी कार्यक्रम के मंच से उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा कि अगर किसी वैध मतदाता का नाम मतदाता सूची से हटाया जाता है, तो उसे इसका कड़ा विरोध करना चाहिए। ममता ने बूथ स्तर के अधिकारियों (बीएलओ) को भी चेतावनी देते हुए कहा कि अगर लापरवाही सामने आई तो उनसे सख्ती से जवाब तलब किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम बंगाल में एक भी वैध मतदाता को वोटर लिस्ट से बाहर नहीं होने देंगे। अगर किसी का नाम हटाया गया है तो वह जरूर सवाल उठाए कि जेन्युइन वोटर हूं, मेरा नाम क्यों हटाया गया? यह मेरा संवैधानिक अधिकार है और मैं इसे छोड़ूंगी नहीं। उन्होंने यह भी दावा किया कि इस पूरी प्रक्रिया के ज़रिए दरअसल एनआरसी को लागू करने की तैयारी की जा रही है। इसलिए उन्होंने जनता से अपील की कि सभी लोग सुनिश्चित करें कि उनका नाम नई मतदाता सूची में दर्ज हो। खासकर ,पहली बार वोटर बनने जा रहे लोगों और प्रवासी कामगारों को भी उन्होंने आगाह किया कि वे समय रहते वोटर लिस्ट में अपना नाम जरूर जुड़वाएं। कार्यक्रम के दौरान ममता ने यह भी जानकारी दी कि जिन राज्य कर्मी को बीएलओ की भूमिका में नियुक्त किया जाएगा, उन्हें विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है ताकि वे जिम्मेदारी से काम कर सकें। उन्होंने दोहराया कि चुनाव के दौरान भले ही बीएलओ चुनाव आयोग के अधीन हो जाते हैं, लेकिन सामान्य दिनों में वे राज्य सरकार के कर्मचारी ही होते हैं।

ममता सरकार ने किसानों के खाते में भेजे 2,930 करोड़

बंगाल के कई जिलों में बारिश से फसलों को नुकसान

कोलकाता, समाज्ञा : मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मंगलवार को राज्य के किसानों के लिए एक बड़ी घोषणा की। आगामी खरीफ सीजन को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने 'कृषक बंधु (नया)' योजना के तहत किसानों को आर्थिक सहायता देने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। मुख्यमंत्री ने यह जानकारी अपने एक्स (पूर्व ट्विटर) हैंडल पर साझा की। ममता बनर्जी ने बताया कि इस योजना के तहत राज्य के किसानों और बटाईदारों को प्रति एकड़ सालाना 10 हजार रुपये की सहायता दो किस्तों में दी जाती है। जिनके पास कम भूमि है, उन्हें न्यूनतम चार हजार की राशि आनुपातिक रूप से मिलती है। इस बार, राज्य के लगभग एक करोड़ नौ लाख किसान और बटाईदार इस सहायता के दायरे में आए हैं। सभी के बैंक खातों में कुल 2,930 करोड़ की राशि सीधे ट्रांसफर की जा रही है। मुख्यमंत्री ने यह भी स्पष्ट किया कि वर्ष के अंत में रबी सीजन के लिए भी इतनी ही राशि किसानों को दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने यह निर्णय ऐसे समय में लिया है जब बीते एक महीने में पश्चिम मेदिनीपुर, हुगली, पूर्व बर्धमान सहित राज्य के कई जिलों के किसान लगातार बारिश से प्रभावित हुए हैं। खरीफ सीजन की तैयारी में जुटे किसानों को इस आर्थिक सहयोग से राहत मिलने की उम्मीद है। मुख्यमंत्री ने बताया कि वर्ष 2019 में 'कृषक बंधु' योजना शुरू होने के बाद से अब तक किसानों को कुल 24 हजार 86 करोड़ की सहायता प्रदान की जा चुकी है। इसके साथ ही, राज्य सरकार 18 से 60 वर्ष की उम्र के बीच किसी किसान की मृत्यु होने पर उसके परिवार को सामाजिक सुरक्षा के तहत दो लाख की सहायता भी देती है। अब तक इस मद में राज्य के करीब एक लाख 46 हजार किसान परिवारों को दो हजार 920 करोड़ की सहायता मिल चुकी है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा शुरू की गई इस योजना के तहत किसानों को साल में दो बार सहायता राशि दी जाती है। खरीफ सीजन की सहायता अप्रैल से सितंबर और रबी सीजन की राशि अक्टूबर से मार्च के बीच दी जाती है।

गुमा पंचायत के उप प्रधान की हत्या में जमीन कारोबारी दोषी करार, 31 जुलाई को सजा का ऐलान

❑ **अशोकनगर थाना ने 90 दिनों में चार्जशीट की दाखिल, डेढ़ साल में मामले का निपटारा**

कोलकाता, समाज्ञा : उत्तर 24 परगना के अशोकनगर स्थित गुमा-1 ग्राम पंचायत के उपप्रधान बिजन दास की हत्या के मामले में बारासात जिला अदालत ने जमीन कारोबारी गौतम दास को दोषी करार दिया है। अदालत ने जानकारी दी है कि दोषी को 31 जुलाई को सजा सुनाई जाएगी। घटना 25 फरवरी 2024 की रात की है, जब एक तृणमूल समर्थक के घर जन्मदिन की पार्टी चल रही थी। पार्टी के दौरान बिजन दास कुछ देर आराम कर रहे थे, तभी उन पर अचानक हमला हुआ। आरोप है कि गौतम दास ने उन पर एक के बाद एक गोलियां चलाईं, जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि बिजन दास और गौतम दास के बीच पुरानी रंजिश थी। मामले की सुनवाई बारासात अदालत में चल रही थी, जहां सातवें एडीजे जज प्रांजना गर्गी भट्टाचार्य होसैन ने गौतम दास को हत्या का दोषी ठहराया। उधर, आरोपी गौतम दास का कहना है कि उसे राजनीतिक दबाव और पुलिस की मिलीभगत से झूठा फंसाया गया है।

प्रो आलोक राय आज से संभालेंगे आईआईएम कलकत्ता के निदेशक पद का कार्यभार

कोलकाता, समाज्ञा : इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (आईआईएम) कलकत्ता को आज से नया नेतृत्व मिलने जा रहा है। लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय 30 जुलाई यानी आज से निदेशक पद का कार्यभार संभालेंगे। उन्हें संस्थान के बोर्ड ने पांच वर्ष के लिए नियुक्त किया है। प्रो. राय शिक्षा प्रशासन के अनुभवी विशेषज्ञ हैं। वे वर्तमान निदेशक प्रो. श्रीकृष्ण कुलकर्णी का स्थान लेंगे। पूर्व में आईआईएम कोलकाता के विजिटर रह चुके प्रो. राय को संस्थान की कार्यप्रणाली की गहरी समझ है। लखनऊ विश्वविद्यालय में उनके कार्यकाल में संस्थान को एनएएसी से ए++ ग्रेड और यूजीसी की श्रेणी-1 मान्यता मिली थी। वे बीबीएयू, एपीजे एकेटीयू और मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी सहित कई संस्थानों में शीर्ष पदों पर रह चुके हैं। आईआईएम कोलकाता को उम्मीद है कि प्रो. राय के नेतृत्व में संस्थान नवाचार, गुणवत्ता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में नई ऊंचाइयों को छुएगा।

बशीरहाट में तेज रफ्तार लॉरी ने 8वीं के छात्र को कुचला, गंभीर रूप से घायल

कोलकाता, समाज्ञा : बशीरहाट इलाके में मंगलवार को एक दर्दनाक सड़क हादसे में आठवीं कक्षा का छात्र गंभीर रूप से घायल हो गया, जब एक 12 चक्कों वाली तेज रफ्तार लॉरी ने उसे कुचल दिया। घटना के बाद आक्रोशित स्थानीय लोगों ने टाकी रोड पर बेंच लगाकर सड़क जाम कर दिया, जिससे दोनों ओर सैकड़ों वाहन फंस गए। जानकारी के अनुसार, छात्र सड़क किनारे पैदल चल रहा था। उसी समय सामने से एक लॉरी आ रही थी। छात्र उसे रास्ता देने के लिए जैसे ही किनारे हुआ, विपरीत दिशा से एक और 12 चक्कों वाली लॉरी आ गई और उसे कुचलकर निकल गई। लॉरी का पहिया उसकी कमर से लेकर पैरों तक चढ़ गया। स्थानीय लोगों ने घायल छात्र को तत्काल बशीरहाट जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उसकी हालत बेहद गंभीर बताई है।

शुभेंदु अधिकारी ने ममता पर निर्वाचन अधिकारियों को डराने-धमकाने की चेष्टा करने का लगाया आरोप

कोलकाता, समाज्ञा : मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर 'बूथ स्तरीय अधिकारियों (बीएलओएस)' को 'डराने-धमकाने' की कोशिश करने का आरोप लगाते हुए विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी ने मंगलवार को निर्वाचन आयोग (ईसी) से इस मामले का संज्ञान लेने तथा चुनाव प्रक्रिया की शुचिता सुनिश्चित करने की अपील की। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को लिखे पत्र में शुभेंदु अधिकारी ने आरोप लगाया कि ममता बनर्जी ने सार्वजनिक बयान दिए हैं जो बीएलओएस के कर्तव्यों और निर्वाचन आयोग की देखरेख वाले व्यापक चुनावी ढांचे में 'प्रत्यक्ष और अनुचित हस्तक्षेप' है। उन्होंने सोमवार को बोलपुर में एक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के भाषण का हवाला देते हुए दावा किया कि अपनी हालिया टिप्पणी में सुश्री ममता बनर्जी ने दिल्ली में लगभग एक हजार बीएलओ के प्रशिक्षण पर नाराजगी व्यक्त की और आरोप लगाया कि न तो उन्हें और न ही मुख्य सचिव को इस पहल के बारे में सूचित किया गया। विपक्ष के नेता ने कहा कि उन्होंने (बनर्जी ने) बीएलओ को यह भी याद दिलाया कि वे राज्य सरकार के कर्मचारी हैं, जिसका तात्पर्य यह है कि चुनाव-पूर्व और चुनाव-पश्चात अवधि के दौरान उनकी निष्ठा निर्वाचन आयोग के बजाय राज्य प्रशासन के प्रति होती है। विपक्ष के नेता ने दावा किया कि मुख्यमंत्री ने बीएलओ को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि मतदाता सूची से कोई भी नाम न हटाया जाए, जिसे 'राजनीतिक उद्देश्यों के लिए मतदाता सूची के संशोधन को प्रभावित करने का प्रयास' माना जा सकता है। उन्होंने कहा कि ये बयान न केवल निर्वाचन आयोग की स्वायत्तता और अधिकार का अपमान है, बल्कि बीएलओ को 'डराने और मजबूर करने' का एक परोक्ष प्रयास भी है, जिन्हें मतदाता सूची और चुनावी प्रक्रिया की अखंडता सुनिश्चित करने का काम सौंपा गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि इस तरह के हस्तक्षेप से स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव कराने की संभावना पर गंभीर सवाल उठते हैं। शुभेंदु अधिकारी ने मुख्य चुनाव आयुक्त से अपील की है कि वह इन बयानों का स्वतः संज्ञान लें और उनके (मुख्यमंत्री के) इरादे तथा बीएलओ की स्वतंत्रता और चुनावी प्रक्रिया पर उनके प्रभाव का पता लगाने के लिए गहन जांच करें। उन्होंने निर्वाचन आयोग से अपने अधिकारों को सुदृढ़ करने का भी आग्रह किया ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि बीएलओ और अन्य अधिकारी प्रतिशोध के डर के बिना अपनी ज़िम्मेदारियां निभा सकें।

OFFICE OF THE
BLOCK DEV. OFFICER
Joypur Dev. Block, Joypur, Purulia
&
OFFICE OF THE
PANCHAYAT SAMITY
Joypur Panchayat Samity, Joypur, Purulia
NOTICE INVITING TENDER NO: NIeT- 03/EO/J.P.S/2025-26 &
NOTICE INVITING TENDER NO: NIeT- 04/BDO/J.D.B/2025-26
E-tenders are invited by the undersigned from eligible bonafied contractors having requisite credentials and other valid documents upto 03.00 PM of 08.08.2025 for 19 nos. of work under 15th FC fund and upto 01.00 PM of 12.08.2025 for 01 no. of work under Tribal Development Dept. fund. For details intending participants may contact to the office of the undersigned or visit website www.wbtenders.gov.in in any working day before the Last date for submission of bid documents.
Sd/-
Block Development officer
Joypur Development Block
&
Executive Officer
Joypur Panchayat Samity

लगातार बारिश के कारण कोलकाता में तीन जगहों पर पुरानी इमारतें ढही, तीन घायल

कोलकाता, समाज्ञा : राज्य के कई जिले सहित कोलकाता में भी बारिश हो रही है। ऐसे में मध्य कोलकाता में क्रीक रो के पास राजकुमार बोस लेन में भारी बारिश के बीच एक इमारत आंशिक रूप से ढह गई। वहीं, कोलकाता के रानी रासमणी रोड पर एक पुराना मकान अचानक धराशायी हो गया। हालांकि, इस घटना में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। कोलकाता में क्रीक रो में नये सिरे से निर्माण कार्य के लिए उपरोक्त इमारत को गिराया जा रहा था, तभी इसका एक हिस्सा अचानक ढह गया। यह हादसा उस समय हुआ जब कई श्रमिक यहां काम कर रहे थे। इस इमारत के ढहने से तीन श्रमिक घायल हो गए, जिन्हें स्थानीय लोगों ने बचाया और फिर उन्हें पास के अस्पताल ले जाया गया। उक्त हादसा के बाद अधिकारियों ने आस-पास की इमारतों का निरीक्षण शुरू कर दिया है। घटना के समय किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। जबकि, प्राप्त जानकारी के अनुसार, रानी रासमणी रोड स्थित 24 नंबर मकान भरभराकर गिर पड़ा। घटना के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई। सूचना मिलते ही पुलिस और नगर निगम के अधिकारी मौके पर तुरंत पहुंचे। पहले ही नगर निगम की ओर से इस मकान को खतरनाक घोषित किया गया था। घटना के समय मकान खाली था, इसलिए कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ। पुलिस और नगर निगम की ओर से मकान के मालिकों से बातचीत की जा रही है। तीसरी घटना नारकेलडांगा में हुई, जहां 20 राजेंद्रलाल स्ट्रीट पर एक परित्यक्त मकान ढह गया। हालांकि, वहां कोई नहीं रहता था, इसलिए एक बड़ी दुर्घटना टल गई।

पश्चिम मध्य रेल
खुली निविदा
सिगनल एवं दूर संचार विभाग
भारत संघ के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से वरि.मं.सं.इंजी. (सिगनल एवं दूर संचार) पश्चिम मध्य रेलवे, कोटा मंडल निम्नलिखित कार्यो Kota/S&T/Tele/2025/07, के लिये निर्धारित ई-निविदाएं आमंत्रित करते है टेण्डर खुलने की तारीख एवं समय 25.08.2025 को 15:00 बजे। इस निविदा के लिये किसी भी तरह के मैनुअल प्रस्तावां की अनुमति नहीं है और किसी भी तरह के प्राप्त मैनुअल प्रस्ताव को नजरअंदाज कर दिया जायेगा। टेन्डर सं: कोटा/एसएण्डटी/टेली./2025/07, कार्य का नाम : प्रोविजन ऑफ टेलिकॉम आइटम्स फॉर आई.पी.एम.पी. एल.एस इम्प्लीमेंटेशन इन मथुरा-नागदा सेक्शन ऑफ कोटा डिवीजन, कार्य का अनुमानित लागत : Rs. 27080048.61, टेण्डर फार्म की कीमत : नगण्य, बयाना राशि : RS. 285500, कार्य समाप्ति अवधि : 12 माह, टेण्डर जमा करने की आखिरी तारीख एवं समय: दिनांक 25.08.2025 को 15:00 बजे तक, पूर्ण विवरण वेबसाईट https:ireps.gov.in पर अपलोड की गई। निविदा-बोलीदाताओं के पास कक्षा III डिजीटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र होना आवश्यक है और आई.आर.ई.पी.एस. पोर्टल पर रजिस्टर होना चाहिये। केवल पंजीकृत निविदा/बोलीदाताओं ई-टेण्डरिंग पर भाग ले सकते है। सभी आवश्यक दस्तावेज ई-निविदा में भाग लेने के समय में अपलोड किया जाना चाहियें। पंजीकृत निविदा एण्ड GSTIN रजिस्टर होना चाहिये।
(हस्ता)
वरि.मं.सं एवं दू.सं.इंजी. (समन्वय)
पश्चिम मध्य रेलवे,कोटा मंडल
स्वच्छ भारत अभियान
एक कदम स्वच्छता की ओर

'दुष्कर्म और पोक्सो मामलों में 60 दिन के भीतर चार्जशीट अनिवार्य'

❑ **कोलकाता पुलिस आयुक्त ने सभी थानों को दिए कड़े निर्देश**

कोलकाता : लालबाजार स्थित पुलिस मुख्यालय में हुई मासिक क्राइम कॉन्फ्रेंस के दौरान कोलकाता पुलिस आयुक्त मनोज वर्मा ने शहर के सभी थाना अधिकारियों को कई अहम निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि दुष्कर्म और पोक्सो जैसे गंभीर मामलों में हर हाल में 60 दिनों के भीतर चार्जशीट दाखिल करनी होगी, जबकि अन्य मामलों में 90 दिन की समयसीमा का पालन अनिवार्य है।

पुलिस आयुक्त ने यह भी आदेश दिया कि कॉलेज परिसरों और उनके आसपास के क्षेत्रों में सीसीटीवी कैमरे कार्यरत हैं या नहीं, इसकी भी जांच की जाए। यह निर्देश ऐसे समय में आया है जब शहर के कई कॉलेजों में छात्र नेताओं और स्थानीय 'दादाओं' के खिलाफ छात्र-छात्राओं ने उत्पीड़न की शिकायतें दर्ज कराई हैं। संबंधित थानों को इन शिकायतों की गंभीरता से जांच करने को कहा गया है।

इसके साथ ही पुलिसकर्मियों को यह भी हिदायत दी गई है कि जांच में जल्दबाजी न हो, बल्कि सटीक और निष्पक्ष तरीके से तथ्यों के आधार पर कार्रवाई की जाए। सभी थानों में हर समय पर्याप्त संख्या में अधिकारी तैनात रखने का भी आदेश दिया गया है।

❑ **गेस्ट हाउसों की निगरानी होगी सख्त, एक घंटे के भीतर देना होगा मेहमानों का विवरण**

लालबाजार ने कोलकाता और उसके आसपास के सभी गेस्ट हाउस, लॉज, छोटे-बड़े होटलों और किराए के मकानों की निगरानी बढ़ाने का निर्णय लिया है। हाल ही में आनंदपुर इलाके में बिहार पुलिस की एक कार्रवाई के संदर्भ में मासिक अपराध बैठक में इस मुद्दे पर चर्चा हुई थी। इसके बाद गेस्ट हाउसों के संचालन और उसमें ठहरने वाले मेहमानों की पहचान सुनिश्चित करने को लेकर पुलिस ने नए कदम उठाए हैं।

निर्देशों के अनुसार, किसी भी गेस्ट हाउस में मेहमान के चेक-इन करने के एक घंटे के भीतर उनके पहचान पत्र की फोटोकॉपी और अन्य विवरण संबंधित स्थानीय थाने में जमा कराना अनिवार्य होगा। इसके बाद पुलिस दस्ते गेस्ट हाउस में जाकर उनकी पहचान की पुष्टि करेंगे।

हालांकि, इस प्रक्रिया के दौरान पुलिस को यह ध्यान रखने के लिए कहा गया है कि मेहमानों को किसी प्रकार की असुविधा या परेशानियों का सामना न करना पड़े। पुलिस को सख्ती और संवेदनशीलता के बीच संतुलन बनाए रखने का निर्देश दिया गया है।

यह कदम कोलकाता में कानून व्यवस्था को और सशक्त बनाने तथा आपराधिक गतिविधियों पर समय रहते लगाम लगाने के उद्देश्य से उठाया गया है।

पूर्व रेलवे
ई-नीलामी आमंत्रण सूचना
वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, पूर्व रेलवे, हावड़ा, चतुर्थ तल, यात्री निवास, हावड़ा स्टेशन के पास, हावड़ा-711101 द्वारा हावड़ा मंडल के तहत 3 (तीन) वर्षों के लिए नबद्वीप धाम स्टेशन और बैद्यबाटी स्टेशन पर सामान्य पे एंड यूज शौचालय के परिचालन एवं रखरखाव के लिए नया ठेका प्रदान करने हेतु ई-नीलामी आमंत्रित की जाती है। संदर्भित ई-नीलामी रेलवे बोर्ड के साल 2022 के फ्रेट मार्केटिंग सर्कुलर नं. 11 एवं साल 2022 के कमर्शियल सर्कुलर नं. 14 के अनुसार संचालित है। अधिक जानकारी और ई-नीलामी में भागीदारी के लिए कृपया वेबसाइट www.ireps.gov.in ई-ऑक्शन लीजिंग मॉड्यूल के माध्यम से देखें। ऑक्शन कैटलॉग सं.: पीएनयू-एचडब्ल्यूएच-02-आर-25, लॉट सं./कैटेगरी और स्टेशन निम्नानुसार हैं: (1) पीएनयू-एचडब्ल्यूएच-एनडीएई-टीओआई-64-24-1 और नबद्वीप धाम (एनडीएई)। (2) पीएनयू-एचडब्ल्यूएच-बीबीएई-टीओआई-34-25-1 और बैद्यबाटी (बीबीएई)। नीलामी की तिथि और समय : 06.08.2025 को 13.30 बजे।
HWH-213/2025-26
निविदा सूचना वेबसाइट www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in पर भी उपलब्ध है
हमें यहाँ देखें : @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

पूर्व रेलवे
ई-निविदा सूचना सं.: एनआईटी/02/25/47, दिनांक: 28.07.2025, प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक, 17, नेताजी सुभाष रोड, दूसरी मंजिल, फेयरली प्लेस, कोलकाता-700001, पूर्व रेलवे के द्वारा निम्नलिखित सामानों की आपूर्ति हेतु ई-निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं:
(क) क्रम सं.; निविदा सं.; विवरण; बयाना राशि निम्नानुसार हैं : (1) 12255399, बीसीएम एवं एफआरएम के एक्सल क्लच के लिए पिनियन शाफ्ट, रु.1,17,240/-, निविदा खुलने की तिथि: 13.08.2025, समय : 13.30 बजे (2) 15255006, 4के एवं आईआर लैपेरोस्कॉपी सेट के साथ 3 डी, रु. 2,01,700/- (3) 20252156, नॉन एस्बेस्स आधारित 'के' टाइप कम्पोजिशन ब्रेक ब्लॉक, रु. 20,00,000/-, निविदा खुलने की तिथि: 14.08.2025, समय : 13.30 बजे [क्रम सं. 2 से 3 हेतु] (4) 07251150, मैनुअल मेटल आर्क वेल्डिंग इलेक्ट्रोड का क्रय, क्लास-एम2, कोटिंग की किस्म: स्पेसिफिकेशन आईआरएस:एम-28/2020 के अनुसार हेवी, आईएस:5206/2013 एवं एसटीआर :आरडीएसओ एमसी एसटीआर डब्ल्यू 01 रिव-03 के अनुसार कोड ई19.9एलआर 26, साइज: 4 मिमी X 350 मिमी, रु. 1,08,880/- (5) 08251017, केबल सिंगल कोर-3 वर्ग मिमी, 750 वोल्ट, रु. 2,93,690/- (6) 08251052, 30 लीटर के वाटर बॉयलर का क्रय आदि, रु. 1,55,370/- (7) 10251005, सस्पेंशन स्प्रिंग (प्राइमरी), रु.1,50,010/- (8) 15245098, डीजल जेनरेटर सेट 400 केवीए, रु. 1,30,000/- (9) 16251106, ओएचई कम्प्लीट के लिए डिस्चार्ज/अर्थिंग रॉड असेंबली, रु. 1,57,290/- (10) 20251036, एससीएचएकेसी के लिए ड्रॉ एवं बफ गियर, रु.5,39,760/- (11) 22251070, टैब/कैप एम्पाम्लिफ्लोजिन 25 मिग्रा, रु. 2,29,840/-, निविदा खुलने की तिथि: 18.08.2025, समय : 13.30 बजे [क्रम सं. 4 से 11 हेतु] (12) 10252563, डब्ल्यूएपी 5 लोको के लिए डैंपर का सेट, रु.1,61,210/-, निविदा खुलने की तिथि: 19.08.2025, समय : 13.30 बजे (13) 06251285ए, आरडीएसओ के स्पेसि. के अनुसार (2 टियर/3 टियर) एसी कोचों के लिए अग्नि रोधी कर्टेन फैब्रिक का क्रय आदि, रु. 2,17,430/-, निविदा खुलने की तिथि: 21.08.2025, समय : 13.30 बजे (14) 11252609, मेसर्स सैनरॉक प्रस्तुतकारक के तहत एआर-एच टाइप सीबीसी के लिए स्पेयर पार्ट्स के सेट का क्रय आदि, रु. 2,47,570/- (15) 15255030, रेल कम रोड शंटिंग वेहिकल आदि की आपूर्ति, स्थापना और आरंभ करना, रु.7,70,000/-, निविदा खुलने की तिथि: 25.08.2025, समय : 13.30 बजे [क्रम सं. 14 से 15 हेतु] (16) 08251019, केबल 19 कोर 3 वर्ग मिमी, 750 वोल्ट, रु. 2,18,010/- (17) 08251103, रबर पैड के साथ एक्सल पुली असेंबली, रु. 2,42,160/- (18) 10252141, पी7/जी9 लोको के लिए इलास्टिक रिंग, रु. 1,87,530/-, निविदा खुलने की तिथि: 26.08.2025, समय : 13.30 बजे [क्रम सं. 16 से 18 हेतु] (19) 10252283, पी7/जी9 के लिए सेकंडरी स्प्रिंग का क्रय आदि, रु. 3,22,060/-(20) 11251030, एक्सल बॉक्स के लिए रियर कवर का क्रय आदि, रु. 2,48,750/-. (21) 11252614, मेसर्स एस्कॉर्ट्स प्रस्तुतकारक के सपोर्टिंग बॉक्स, ड्रॉफ्ट गियर एवं मैनुअल अनकपलिंग डिवाइस के लिए स्पेयर पार्ट्स के सेट का क्रय आदि, रु. 10,21,690/-, निविदा खुलने की तिथि: 27.08.2025, समय : 13.30 बजे [क्रम सं. 19 से 21 हेतु] (22) 10251019, पिनियन 23 टीथ, रु. 1,81,010/-, निविदा खुलने की तिथि: 29.08.2025, समय : 13.30 बजे (23) 05251290, रूफ पैनलिंग के लिए नैचुरल एवं आर्टिफिशल फाइबर थर्मोसेट कम्पोजिट (एनएफटीसी) का क्रय, रु. 2,30,200/- (24) 11251074, बीएमबीसी कोचों ब्रेक गियर बुश हेतु किट का क्रय आदि, रु.3,68,380/-, निविदा खुलने की तिथि: 01.09.2025, समय : 13.30 बजे [क्रम सं. 23 से 24 हेतु] (25) 10251003, सस्पेंशन स्प्रिंग, रु.1,23,330/- (26) 10251805, सस्पेंशन ट्यूब रोलर बेयरिंग आदि की खरीद, रु. 1,24,980/- (27) 10252221, रिले क्यूआरएसआई 1 एवं 2 टाइप, रु. 1,62,610/-, निविदा खुलने की तिथि: 02.09.2025, समय : 13.30 बजे [क्रम सं. 25 से 27 हेतु] (28) 05251041, सर्वो सिस्टम 57 का क्रय आदि, रु. 6,99,630/- (29) 11251682, रबर बफर स्प्रिंग का क्रय आदि, रु. 2,39,790/-, निविदा खुलने की तिथि: 03.09.2025, समय : 13.30 बजे [क्रम सं. 28 से 29 हेतु] (30) 21251208, मॉडिफाइड इलास्टोमेरिक पैड (डिजाइन-ए) आदि, रु. 20,00,000/-, निविदा खुलने की तिथि: 10.09.2025, समय : 13.30 बजे। निविदा मूल्य: रु. 0 [क्रम सं. 1 से 30 हेतु]।
(ख) निम्नलिखित अधिक मूल्य वाले निविदा शुद्धिपत्र आरजीसी निविदा के लिए आईआरईपीएस पोर्टल पर प्रकाशित किए गए थे। क्रम सं.1, निविदा सं. : 12254006, संक्षिप्त विवरण : आरडीएसओ ड्रॉ. नं. टी-671 के तहत ग्लूड इंसुलेटेड रेल जॉइंट्स के लिए आरजीसी, निविदा की अंतिम तिथि : 11.08.2025, अनुमानित निविदा मूल्य: रु.14,23,55,200/-
टिप्पणी: उपर्युक्त सभी निविदाएँ ई-निविदाएँ हैं एवं सभी निविदाकारों से अनुरोध किया जाता है कि आईआरईपीएस की वेबसाइट https:// www.ireps.gov.in के माध्यम से अपनी बोली ऑनलाइन जमा करें। ऊपर उल्लिखित निविदाओं एवं अन्य आपूर्ति निविदाओं के संबंध में विस्तृत विवरण के लिए, कृपया आईआरईपीएस की वेबसाइट देखें।
STORES-25/2025-26
निविदा सूचना वेबसाइट www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in पर भी उपलब्ध है
हमें यहाँ देखें : @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

हावड़ा रेलवे स्टेशन पर एम-यूटीएस सहायकों की नियुक्ति
आवेदन आमंत्रण सूचना
आवेदन सूचना संख्या : सीओएम/सीएफ/यूटीएस/एम-यूटीएस सहायक/एचडब्ल्यूएच/25 दिनांक: 30.07.2025
एम-यूटीएस सहायक योजना के अनुसार एम-यूटीएस उपकरण का उपयोग करते हुए अनारक्षित टिकटों के वितरण के लिए हावड़ा रेलवे स्टेशन पर एम-यूटीएस सहायकों की नियुक्ति के लिए वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, हावड़ा मंडल सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारियों और जनसाधारण से आवेदन आमंत्रित करते हैं।
(1) चयन प्रक्रिया: यदि नियुक्त किए जाने वाले आवश्यक एम-यूटीएस सहायकों की संख्या की तुलना में अधिक संख्या में आवेदन प्राप्त होते हैं, तो सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारी को वरीयता दी जाएगी। यदि सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारियों की संख्या भी नियुक्त किए जाने वाले आवश्यक एम-यूटीएस सहायकों की संख्या से अधिक है, तो चयन लॉटरी के आधार पर किया जाएगा। सभी सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारियों पर विचार करने के बाद ही एम-यूटीएस सहायक पद के लिए आवेदन करने वाले निजी व्यक्तियों की पात्रता के आधार चयन किया जाएगा। उनकी संख्या अधिक होने की स्थिति में निजी आवेदकों का चयन लॉटरी के आधार पर किया जाएगा। (2) नियुक्ति का कार्यकाल: एम-यूटीएस सहायक का कार्यकाल दिनांक 31.08.2026 तक होगा। (3) एम-यूटीएस सहायक को मौजूदा लागू एटीवीएम फैसिलिटेटर के लिए स्वीकार्य अनुसार बोनस मिलेगा यानी 150 किलोमीटर तक की यात्रा के लिए 3%; 151 किलोमीटर और 500 किलोमीटर के बीच यात्रा के लिए 2%; 500 किलोमीटर से अधिक की दूरी के लिए एक टिकट की यात्रा पर 1% की दर से। एम-यूटीएस सहायक द्वारा वितरित प्रत्येक टिकट के मूल्य पर स्वीकार्य बोनस देय होगा। बोनस राशि स्वचालित रूप से एम-यूटीएस एजेंट के अग्रिम टिकट जमा खाते में जोड़ दी जाएगी। (4) बयाना राशि: रु. 10,000/- की बयाना राशि के साथ आवेदन जमा किया जाना चाहिए (डिमांड ड्राफ्ट/फिक्स्ड डिपॉजिट/मनी रिसीट/बैंक गारंटी के रूप में)। (5) प्रतिभूति जमा: चयनित एम-यूटीएस सहायक द्वारा डिमांड ड्राफ्ट/फिक्स्ड डिपॉजिट/मनी रिसीट/बैंक गारंटी के रूप में रु 1,00,000/- की वापसी योग्य प्रतिभूति जमा राशि जमा की जाएगी। यदि चयनित आवेदक सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारी है, तो प्रतिभूति जमा केवल रु 20,000/- होगी। (6) पुलिस सत्यापन प्रमाण पत्र: चयनित आवेदक को अपने इलाके की सेवा करने वाले पुलिस स्टेशन से प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा कि उसका कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है और उसके विरुद्ध कोई आपराधिक मामला लंबित नहीं है। (7) किसी भी व्यक्ति को एम-यूटीएस सहायक के रूप में नियुक्त करने से उस व्यक्ति को रेलवे में रोजगार पाने का कोई अधिकार और / या दावा प्राप्त नहीं होगा। रेलवे सेवा में बहाली, सेवा का नियमितीकरण, बोनस, रेलवे पास सुविधाएँ आदि जैसे कोई लाभ एम-यूटीएस सहायक या उसके कानूनी उत्तराधिकारियों को नहीं प्राप्त होंगे। इस विषय में कोई दावा स्वीकार्य नहीं होगा। एम-यूटीएस सहायक रेलवे को वर्तमान या भविष्य में किसी भी देयताओं से मुक्त रखेगा। (8) नियुक्ति के लिए सामान्य शर्तें, आवेदन फॉर्म, पात्रता मानदंड, चयन प्रक्रिया और कार्यप्रणाली आदि निविदा फॉर्म में उपलब्ध होंगे और इसे वेबसाइट www.er.indianrailways.gov.in के 'टेंडर' टैब से डाउनलोड किया जा सकता है और मुहरबंद लिफाफे में आवेदन फॉर्म वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, हावड़ा मंडल, पूर्व रेलवे, डीआरएम बिल्डिंग (प्रथम तल), (रिवेरा के सामने), हावड़ा-711101 के कार्यालय में इस उद्देश्य के लिए रखे गए बॉक्स में डाल दिया जाना चाहिए। डाक के माध्यम से प्राप्त आवेदन को सरासर रद्द कर दिया जाएगा। (9) महत्वपूर्ण तिथियाँ: वेबसाइट में आवेदन फॉर्म का प्रकाशन और डाउनलोडिंग दिनांक 30.07.2025, 10.00 बजे से शुरू होगी। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, हावड़ा के कार्यालय से आवेदन फॉर्म प्राप्त होना और आवेदन फॉर्म जमा करना दिनांक 30.07.2025, 10.00 बजे से शुरू होगा। आवेदन फॉर्म जमा करने की अंतिम तिथि एवं समय दिनांक 13.08.2025 को 15.00 बजे है। आवेदन फॉर्म खुलने की तिथि 13.08.2025 को 15.30 बजे है।
वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, हावड़ा
पूर्व रेलवे
हमें यहाँ देखें : @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु आज एम्स कल्याणी के पहले दीक्षा समारोह में लेंगी हिस्सा

दीक्षा समारोह के बाद शाम में दक्षिणेश्वर काली मंदिर में करेंगी पूजा-अर्चना

कोलकाता, समाज्ञा : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु बुधवार को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) कल्याणी के पहले दीक्षा समारोह में शामिल होने के लिए बंगाल की दो दिवसीय यात्रा पर आ रही हैं। अधिकारियों ने बताया कि राष्ट्रपति दोपहर में एम्स कल्याणी के दीक्षा समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल होंगी। इसके बाद शाम में वह दक्षिणेश्वर काली मंदिर भी जाएंगी और वहां मां काली की आरती देखेंगी और पूजा-अर्चना करेंगी। अधिकारियों के

अनुसार, राष्ट्रपति बुधवार दोपहर करीब 12.35 बजे भारतीय वायुसेना के विशेष विमान से कोलकाता हवाई अड्डे पर उतरेंगी। इसके बाद राष्ट्रपति वायुसेना के हेलीकाप्टर से नदिया जिले के कल्याणी जाएंगी, जहां वह दोपहर तीन बजकर 40 मिनट पर एम्स संस्थान पहुंचेंगी। राष्ट्रपति दोपहर 3.40 से 4.30 बजे तक एम्स कल्याणी में दीक्षा समारोह में भाग लेंगी। इधर, राष्ट्रपति के आगमन से एक दिन पहले एम्स कल्याणी के निदेशक डा रामजी सिंह ने मंगलवार को एक संवाददाता सम्मेलन में बताया कि राष्ट्रपति की गरिमामय मौजूदगी में संस्थान अपना पहला दीक्षा समारोह का जश्न मनाने के लिए तैयार है। उन्होंने बताया कि इस ऐतिहासिक समारोह में पहले बैच के कुल 48 एमबीबीएस छात्रों और नौ पीडीसीसी छात्रों को पदक प्रदान किए जाएंगे। समारोह में बंगाल के राज्यपाल डा सीवी आनंद बोस, केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्यमंत्री प्रतापराव जाधव, केंद्रीय जहाजरानी राज्यमंत्री शांतनु ठाकुर और बंगाल की स्वास्थ्य व वित्त राज्यमंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य सहित अन्य विशिष्ट लोग शामिल होंगे। दीक्षा समारोह के बाद राष्ट्रपति हेलीकाप्टर से कोलकाता लौट आएंगी। शाम में राष्ट्रपति सड़क मार्ग से दक्षिणेश्वर काली मंदिर जाएंगी और वहां पूजा-अर्चना करेंगी। इसके बाद वह कोलकाता राजभवन में रात्रि विश्राम करेंगी। अगले दिन गुरुवार को राष्ट्रपति ने सुबह 9.20 से 9.50 बजे तक 30 मिनट का समय राजभवन में कुछ विशिष्ट लोगों से मुलाकातों के लिए रखा है। इसके बाद, वह सुबह 10 बजे के आसपास राजभवन से कोलकाता हवाई अड्डे के लिए रवाना होंगी। सूत्रों के मुताबिक, वहां से राष्ट्रपति भारतीय वायुसेना के विशेष विमान से नई दिल्ली के लिए प्रस्थान करेंगी।

विश्व भारती विश्वविद्यालय की 62 एकड़ जमीन पर अतिक्रमण : सुकांत मजूमदार

कहा... 'विश्व भारती की जमीन पर 1951 से ही हो रहा हैं अतिक्रमण'

नई दिल्ली/कोलकाता : केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री डॉ. सुकांत मजूमदार ने दावा किया है कि तमाम उपायों के बावजूद बीरभूम जिले के शांतिनिकेतन में स्थित विश्व भारती केंद्रीय विश्वविद्यालय की 62 एकड़ से ज्यादा जमीन पर अतिक्रमण हो चुका है। वह सोमवार को संसद में विष्णुपुर से भाजपा के लोकसभा सांसद सौमित्र खां द्वारा पूछे गए एक सवाल का जवाब दे रहे थे। मजूमदार ने कहा कि विश्व भारती के कई कुलपतियों ने कई मौकों पर विश्वविद्यालय की जमीन पर अतिक्रमण पर चिंता जताई है।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने प्रशासनिक नोटिस जारी किए हैं और अतिक्रमण हटाने के लिए जिला प्रशासन और राज्य सरकार से लगातार मदद मांगी है। उन्होंने यह भी कहा कि विश्व भारती की जमीन पर 1951 से ही अतिक्रमण हो रहा है। एक सीएजी रिपोर्ट में पाया गया कि 1951 से 2004 के बीच विश्व भारती की 25 एकड़ से ज़्यादा जमीन पर अतिक्रमण हुआ था। 2007-08 में परिसर का सर्वेक्षण और सीमांकन किया गया था, जिसमें 550 से ज्यादा खंभे लगाए गए थे। 2017 में, केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने विश्व भारती को अतिक्रमण हटाने का आदेश दिया था। मजूमदार ने बताया कि विश्वविद्यालय ने बाड़ लगा दी है और परिसर के चारों ओर 30 किलोमीटर की सीमा बना दी है।

बजाज फिनसर्व एएमसी ने लॉन्च किया बजाज फिनसर्व इक्विटी सेविंग्स फंड

कोलकाता : बजाज फिनसर्व एएमसी ने आज बजाज फिनसर्व इक्विटी सेविंग्स फंड के लॉन्च की घोषणा की। यह एक ओपन-एंडेड स्कीम है जो इक्विटी, आर्बिट्रेज और डेट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करती है। न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) 28 जुलाई, 2025 से शुरू होकर 11 अगस्त, 2025 तक चलेगा। फंड के लॉन्च पर बोलते हुए, बजाज फिनसर्व एएमसी के प्रबंध निदेशक गणेश मोहन ने कहा, बजाज फिनसर्व इक्विटी सेविंग्स फंड निवेशकों को एक संतुलित दृष्टिकोण के माध्यम से वित्तीय आत्मविश्वास और स्थिर धन सृजन का अवसर प्रदान करता है। विकासोन्मुखी इक्विटी, स्थिर ऋण और कम जोखिम वाले आर्बिट्रेज को मिलाकर, इसका उद्देश्य कम अस्थिरता के साथ लगातार रिटर्न प्रदान करना है।

अब तक क्यों नहीं आया जॉइंट एंट्रेंस परीक्षा का रिजल्ट? हाईकोर्ट ने मांगी रिपोर्ट

कोलकाता : अप्रैल में आयोजित हुई पश्चिम बंगाल जॉइंट एंट्रेंस परीक्षा (डब्ल्यूबीजेईई) का परिणाम अब तक घोषित न होने पर कोलकाता हाईकोर्ट ने गंभीर चिंता जताई है। न्यायमूर्ति सुजॉय पाल और न्यायमूर्ति स्मिता दास डे की डिवीजन बेंच ने राज्य सरकार और राज्य जॉइंट एंट्रेंस बोर्ड से रिपोर्ट तलब की है। अदालत ने दोनों पक्षों को निर्देश दिया है कि वे 7 अगस्त तक रिपोर्ट दाखिल कर बताएं कि रिजल्ट कब जारी होगा और इसमें हो रही देरी का कारण क्या है।

दरअसल, कुछ अभिभावकों ने रिजल्ट में देरी को लेकर हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। मंगलवार दोपहर मामले की तत्काल सुनवाई करते हुए अदालत ने कहा कि दो महीने से अधिक समय बीत चुका है, लेकिन अभी तक लाखों छात्र-

छात्राओं और अभिभावकों को परीक्षा परिणाम का इंतजार है।

अदालत ने स्पष्ट निर्देश दिया कि अगले सात दिनों के भीतर परीक्षा परिणाम प्रकाशित किया जाए। यदि ऐसा संभव नहीं है, तो राज्य जॉइंट एंट्रेंस बोर्ड को हलफनामा दाखिल कर देरी का कारण बताना होगा। अदालत ने मामले को गंभीर मानते हुए अधिकारियों को जल्द से जल्द स्थिति स्पष्ट करने का आदेश दिया है।

नेपाल सीमा से फर्जी दस्तावेजों के साथ चीनी नागरिक गिरफ्तार

❑ **आरोपी के पास से कई देशों के पहचान पत्र किये गये जब्त**

सिलीगुड़ी : भारत-नेपाल सीमा पर स्थित सिलीगुड़ी के पास एक संदिग्ध चीनी नागरिक को फर्जी दस्तावेजों के साथ गिरफ्तार किया गया है। घटना सोमवार की रात की है जब खोड़ीबाड़ी थाना पुलिस ने सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) की सहायता से भारत में अवैध रूप से दाखिल हुए इस विदेशी नागरिक को हिरासत में लिया। सिलीगुड़ी पुलिस के अनुसार गिरफ्तारी सिलीगुड़ी के पानीटंकी इलाके के न्यू ब्रिज स्थित ट्रेड एंड ट्रांजिट रूट से हुई, जहां एसएसबी की 41वीं बटालियन की 'सी' कंपनी नियमित जांच अभियान चला रही थी। इसी दौरान एक व्यक्ति के पास से संदेहास्पद दस्तावेज मिलने पर उसे तत्काल हिरासत में ले लिया गया। पूछताछ के दौरान उस व्यक्ति के पास से दो अलग-

अलग नामों से जारी स्विस पासपोर्ट और एक फर्जी नेपाली नागरिकता दस्तावेज बरामद हुआ। पकड़े गए व्यक्ति की असली पहचान क्या है, वह भारत में किस रास्ते से दाखिल हुआ और उसका उद्देश्य क्या था- इन सभी पहलुओं की गहन जांच की जा रही है। पुलिस ने पुष्टि की है कि वह असल में चीन का नागरिक है। पुलिस के अलावा केंद्रीय खुफिया और सुरक्षा एजेंसियों ने भी मामले की जांच शुरू कर दी है। माना जा रहा है कि यह कोई सामान्य घुसपैठ नहीं, बल्कि किसी बड़ी साजिश की कड़ी हो सकती है ।घटना के बाद भारत-नेपाल सीमा पर चौकसी और बढ़ा दी गई है। सुरक्षा बलों को सतर्क रहने के निर्देश दिए गए हैं।

कोलकाता में समलैंगिक ऐप के जरिए युवक से 1 लाख की ठगी, बालीगंज में तीन आरोपी गिरफ्तार

कोलकाता, समाज्ञा : कोलकाता के बालीगंज इलाके में एक युवक को समलैंगिक डेटिंग ऐप के माध्यम से फंसा कर नग्न तस्वीरें खींची गईं और धमकाकर एक लाख रुपये की ठगी की गई। इस मामले में पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार, जुलाई महीने की शुरुआत में बालीगंज थाने में एक युवक ने शिकायत दर्ज कराई थी कि उसकी पहचान एक समलैंगिक ऐप पर विजय सिंह नामक व्यक्ति से हुई। बातचीत के बाद विजय ने उसे बालीगंज के सर्कुलर रोड स्थित एक अपार्टमेंट में बुलाया। मुलाकात के दौरान दोनों करीब हुए, तभी दो अन्य युवक अचानक कमरे में घुस आए और पीड़ित की आपत्तिजनक तस्वीरें लेने लगे।

युवक ने जब विरोध किया तो उसकी पिटाई की गई और फिर

तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल करने का डर दिखाकर तीनों ने मिलकर उससे 1 लाख की मांग की। डर के मारे युवक ने एक यूपीआई ऐप के जरिए उन्हें 1 लाख की राशि ट्रांसफर कर दी। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने जांच शुरू की, लेकिन आरोपी फरार थे। सोमवार को गुप्त सूचना के आधार पर मुख्य आरोपी विजय सिंह को इलाके से गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में मिली जानकारी के बाद उसके दो साथियों मोहम्मद वाजिद और इरफान यासिन को भी गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस पूरे मामले की गहराई से जांच कर रही है।

नौकरी खो चुके कर्मचारियों को भत्ता देने के फैसले पर रोक के खिलाफ राज्य सरकार पहुंची डिवीजन बेंच

कोलकाता : 2016 के स्कूल सेवा आयोग (एसएससी) भर्ती घोटाले में नौकरी गंवाने वाले शिक्षकों और कर्मचारियों को भत्ता देने के फैसले पर एकल पीठ द्वारा दी गई रोक को राज्य सरकार ने चुनौती दी है। अब यह मामला कोलकाता हाई कोर्ट की डिवीजन बेंच में पहुंच गया है।

राज्य सरकार की ओर से दायर याचिका में कहा गया है कि यह भत्ता जीवनयापन के लिए दिया जा रहा था, और सरकार को इसे देने का पूरा अधिकार है। राज्य का तर्क है कि यह निर्णय मानवीय आधार पर लिया गया था, जिससे बर्खास्त कर्मचारियों का परिवार चल सके।

ज्ञात हो कि सुप्रीम कोर्ट ने व्यापक भ्रष्टाचार के चलते 2016 की एसएससी पैनल को रद्द कर दिया था, जिससे लगभग 26,000 शिक्षक और गैर-शिक्षकीय कर्मचारी अपनी नौकरी से हाथ धो बैठे। शिक्षकों को इस वर्ष दिसंबर तक स्कूलों में काम करने की अनुमति मिली है, लेकिन ग्रुप-सी और ग्रुप-डी के कर्मचारियों पर पुराना आदेश लागू है।

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मानवीय दृष्टिकोण से इन बर्खास्त कर्मचारियों को अस्थायी भत्ता देने की घोषणा की थी। लेकिन कोलकाता हाईकोर्ट की सिंगल बेंच की न्यायमूर्ति अमृता सिन्हा ने इस पर अंतरिम रोक लगा दी थी। इसी आदेश को राज्य सरकार ने डिवीजन बेंच में चुनौती दी है।

इस फैसले को लेकर तृणमूल कांग्रेस की ओर से तीखी प्रतिक्रिया दी गई थी। पार्टी के वरिष्ठ नेता कुणाल घोष ने कहा था, हमारी मानवीय मुख्यमंत्री ने उन लोगों के लिए भत्ता देने का निर्णय लिया जो अपनी नौकरी खो चुके हैं, लेकिन फिर भी कुछ लोग इस फैसले के खिलाफ अदालत पहुंच गए। जनता उन्हें पहचान कर रखे।

अब यह मामला हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच में सुनवाई के लिए तैयार है, जहां राज्य सरकार ने अपनी कानूनी लड़ाई तेज कर दी है।

एक्सिस बैंक और अंतरा मनोरोग अस्पताल मिलकर स्थापित करेंगे एक्सिस बैंक-अंतरा इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ साइंसेज

कोलकाता : भारत में निजी क्षेत्र के सबसे बड़े बैंकों में से एक, एक्सिस बैंक ने अंतरा मनोरोग अस्पताल के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसके तहत कोलकाता में एक्सिस बैंक-अंतरा इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ साइंसेज की स्थापना की जाएगी। यह अग्रणी शैक्षणिक संस्थान विशेष रूप से मानसिक स्वास्थ्य पर केंद्रित होगा और मनोरोग, मनोविज्ञान, नर्सिंग, सामाजिक कार्य और काउंसलिंग में मान्यता प्राप्त शैक्षणिक कार्यक्रम प्रदान करेगा। एमओयू पर हस्ताक्षर एक्सिस हाउस, वर्ली में किए गए, जहां उपस्थित थे: अमिताभ चौधरी, एमडी एंड सीईओ, एक्सिस बैंक; विजय मुलबागल, ग्रुप एक्ज़ीक्यूटिव एंड हेड, होल-सेल बैंक कवरेज एंड सस्टेनेबिलिटी, एक्सिस बैंक; कमल प्रकाश, प्रेसिडेंट, अंतरा; और डॉ. मैथ्यू पी. जॉन, जनरल सेक्रेटरी, अंतरा। हस्ताक्षर समारोह में बोलते हुए विजय मुलबागल, ग्रुप एक्ज़ीक्यूटिव एंड हेड, होलसेल बैंक कवरेज एंड सस्टेनेबिलिटी, एक्सिस बैंक ने कहा, एक्सिस बैंक को गर्व है कि हम अंतरा के साथ साझेदारी कर एक विश्वस्तरीय संस्थान स्थापित कर रहे हैं, जो भविष्य के पेशेवरों को प्रशिक्षित करने, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुंच सुनिश्चित करने और भारत में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चर्चा को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए समर्पित है।

मालदह टाउन स्टेशन पर आरपीएफ ने पकड़े दो तस्कर, 1 करोड़ रुपये की ब्राउन शुगर बरामद

कोलकाता, समाज्ञा : पूर्व रेलवे के मालदह मंडल में आरपीएफ ने मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए 28 जुलाई को मालदह टाउन स्टेशन पर दो व्यक्तियों को गिरफ्तार किया। आरोपियों की पहचान बिहार के रहने वाले रिहान रेजा (18) और मोहम्मद तालिब रेजा (27) के रूप में हुई है। उनके पास से लगभग 203 ग्राम ब्राउन शुगर बरामद की गई, जिसकी बाजार में अनुमानित कीमत 1.01 करोड़ से अधिक आंकी गई है। जानकारी के अनुसार, यह कार्रवाई प्लेटफॉर्म नं. 1 के फुट ओवर ब्रिज के पास की गई, जब आरपीएफ की विशेष खुफिया शाखा (एसआईबी) के जवान गश्त पर थे। दो संदिग्ध व्यक्तियों

की गतिविधियां असामान्य लगने पर उन्हें रोका गया और उनकी तलाशी के दौरान उनके पास से दो पारदर्शी पैकेटों में कुल 203 ग्राम ब्राउन शुगर बरामद हुई, जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत लगभग 1,01,50,000/- आंकी गई है। आरपीएफ ने एनडीपीएस अधिनियम के तहत सभी कानूनी औपचारिकताओं का पालन करते हुए आरोपियों और जब्त किए गए मादक पदार्थों को मालदह टाउन की जीआरपी के हवाले कर दिया।

कोटक म्युचुअल फंड ने लॉन्च किया 'कोटक एक्टिव मोमेंटम फंड'

कोलकाता : कोटक महिंद्रा एसेट मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड (केएमएएमसी / कोटक म्युचुअल फंड) ने आज 'कोटक एक्टिव मोमेंटम फंड' लॉन्च करने की घोषणा की। यह एक ओपन-एंडेड इक्विटी स्कीम है जो मोमेंटम थीम पर आधारित है। यह फंड कंपनी के इन-हाउस विकसित मॉडल के आधार पर उन शेयरों की पहचान करता है जिनमें अर्निंग्स मोमेंटम हो, यानी जिनकी आय में वृद्धि हो रही हो। यह स्कीम 29 जुलाई 2025 से 12 अगस्त 2025 तक सार्वजनिक निवेश के लिए खुली रहेगी। कोटक महिंद्रा एसेट मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर नीलेश शाह ने कहा, बाज़ार हमेशा अर्निंग्स के अधीन होते हैं। इतिहास गवाह है कि तेजी और मंदी दोनों दौरों में अर्निंग्स ने कीमतों से बेहतर प्रदर्शन किया है। यही हमारे फंड की नींव है। कोटक म्युचुअल फंड में हमने एक ऐसा मॉडल तैयार किया है जो केवल कीमतों के रुझान से आगे की सोच रखता है।

सेंट्रल मेट्रो स्टेशन पर यात्रियों के लिए शुरू हुई अतिरिक्त पेयजल आपूर्ति सुविधा

कोलकाता, समाज्ञा : मेट्रो यात्रियों के लिए एक और राहत भरी खबर सामने आई है। कोलकाता मेट्रो की ब्लू लाइन पर स्थित सेंट्रल मेट्रो स्टेशन पर मंगलवार को अतिरिक्त पेयजल आपूर्ति सुविधा का उद्घाटन किया गया। यह पहल यात्रियों की सुविधाओं को और बेहतर बनाने की दिशा में मेट्रो रेलवे का एक अहम कदम है। इस नई सुविधा का उद्घाटन सुभ्रत मंडल, वरिष्ठ अनुभाग अभियंता (वर्क्स), ने मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक पी. उदय कुमार रेड्डी एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में किया। यात्रियों को स्वच्छ पेयजल सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से स्टेशन परिसर में 20,000 लीटर क्षमता की एक भूमिगत जल टंकी का निर्माण किया गया है। महाप्रबंधक श्री रेड्डी ने इस अवसर पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह सुविधा स्टेशन से गुजरने वाले हजारों यात्रियों को लाभ पहुंचाएगी और उनकी यात्रा को अधिक सुविधाजनक बनाएगी। उल्लेखनीय है कि पिछले सप्ताह महात्मा गांधी रोड मेट्रो स्टेशन पर भी इसी तरह की अतिरिक्त पेयजल आपूर्ति सुविधा का उद्घाटन किया गया था। मेट्रो रेलवे लगातार यात्रियों की सुविधा के लिए नई-नई सेवाएं शुरू कर रहा है।

स्कीपर फाउंडेशन ने 2 हजार से अधिक छात्राओं को स्कॉलरशिप प्रदान की

❑ **स्कीपर फाउंडेशन के बेटी पढ़ाओ अभियान की सराहना**

कोलकाता : स्कीपर फाउंडेशन ने सी एस आर योजना बेटी पढ़ाओ अभियान के अंतर्गत 2 हजार से अधिक छात्राओं को स्कॉलरशिप प्रदान कर भारत में शिक्षा, साक्षरता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सुमेधा बंसल के मार्गदर्शन में आयोजित समारोह में इसरो के पूर्व चेयरमैन डॉ. एस सोमनाथ, एच एल एस के प्रबन्ध निदेशक अमिताभ मेनन, गुरुकुल अकादमी की संस्थापक विशाखा रंजन एवम् अतिथियों का स्वागत स्कीपर लिमिटेड के चेयरमैन समाजसेवी सज्जन बंसल एवम् परिवार के सदस्यों ने किया। इस अवसर पर अंतरिक्ष कार्निवल प्रदर्शनी में हावड़ा, कोलकाता, सुंदरवन के 18 विद्यालय की छात्राओं ने हिस्सा लिया। डॉ. एस सोमनाथ ने राध्या बंसल एवम् सभी प्रतिभागियों की अंतरिक्ष और विज्ञान (स्पेस) से सम्बंधित जिज्ञासाओं के प्रत्युत्तर में महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए कहा अंतरिक्ष में सुरक्षा प्रबन्ध

आवश्यक है। सभी अतिथियों ने स्कीपर फाउंडेशन के बेटी पढ़ाओ अभियान की सराहना की। स्कीपर के चेयरमैन सज्जन बंसल ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा गीता को विज्ञान एवं आध्यात्मिकता का एक महान ग्रंथ माना जाता है। यह न केवल एक धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि इसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे मनोविज्ञान, नैतिकता और दर्शन के बारे में भी गहन अंतर्दृष्टि प्रदान की गई है। गीता में विज्ञान को ज्ञान के एक रूप के रूप में वर्णित किया गया है जो आत्मा और परमात्मा के बारे में सैद्धांतिक ज्ञान से परे सत्य की अनुभवात्मक अनुभूति है। यह एक ऐसा विज्ञान है जो हमें दिव्यता और दिव्य गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है। गीता में प्रकृति के नियमों को समझने के लिए भी मार्गदर्शन मिलता है। यह भौतिक जगत की संरचना और उसके नियमों को समझने में मदद करता है। आयोजन को सफल बनाने में शरद बंसल, सिद्धार्थ बंसल, सुभाष मुरारका, वी पी जैन, शिव शंकर गुप्ता, शंकर लाल पोद्दार, बालकिशन भरतिया एवम् स्कीपर लिमिटेड के पदाधिकारी सक्रिय रहे।

हावड़ा मंडल ने यूटीएस ऐप व एटीवीएम पर डिजिटल भुगतान अभियान किया तेज

कोलकाता, समाज्ञा : पूर्व रेलवे के हावड़ा मंडल ने यात्रियों की सुविधा बढ़ाने और रेलवे टिकटिंग को डिजिटल बनाने की दिशा में एक अहम कदम उठाया है। मंडल द्वारा 28 जुलाई को मोबाइल आधारित यूटीएस ऐप, ऑटोमैटिक टिकट वेंडिंग मशीन (एटीवीएम) और बुकिंग काउंटर्स पर क्यूआर कोड के माध्यम से डिजिटल भुगतान को प्रोत्साहित करने के लिए अभियान को और अधिक तेज कर दिया गया है। यह पहल मंडल रेल प्रबंधक संजीव कुमार के निर्देशन और वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक राहुल रंजन के नेतृत्व में की जा रही है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य नकद लेनदेन को कम करना, टिकट काउंटरों पर लंबी कतारों को घटाना और यात्रियों को एक सुविधाजनक तथा आधुनिक टिकटिंग अनुभव प्रदान करना है। इसके तहत आज रामपुरहाट, सैंथिया, पाकुड़ सहित कई महत्वपूर्ण स्टेशनों पर जागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान रेलवे कर्मचारियों ने यात्रियों से सीधे संवाद स्थापित कर उन्हें डिजिटल भुगतान के विकल्पों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने यह भी बताया कि यात्री न केवल यात्रा टिकट बल्कि प्लेटफॉर्म टिकट के लिए भी यूटीएस ऐप, एटीवीएम और काउंटरों पर क्यूआर कोड स्कैन करके भुगतान कर सकते हैं। इससे रेलवे सेवा में नकद रहित व्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा।

हाईकोर्ट में राज्य सरकार के वकील नदारद! न्यायमूर्ति नाराज, अगली सुनवाई 31 जुलाई को

कोलकाता : मिदनापुर में कॉलेज छात्राओं पर पुलिस की कथित ज्यादती के मामले में मंगलवार को कलकत्ता हाईकोर्ट के डिवीजन बेंच में सुनवाई के दौरान राज्य सरकार के छह सरकारी वकीलों की गैरहाजिरी पर न्यायमूर्ति देवांशु बसाक की पीठ ने कड़ी नाराजगी जताई।

इस दिन न्यायमूर्ति बसाक की पीठ के समक्ष दो मामलों की सुनवाई होनी थी। इनमें एक मामला सुभ्रीता सोरेन और अन्य कॉलेज छात्राओं को थाने में ले जाकर पुलिस द्वारा कथित रूप से प्रताड़ित करने से जुड़ा था। इस मामले में पहले सिंगल बेंच ने एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया था, जिसे राज्य सरकार ने चुनौती दी है।

हालांकि सुनवाई के दौरान राज्य की ओर से कोई भी वकील अदालत में उपस्थित नहीं हुआ। याचिकाकर्ताओं की ओर से अधिवक्ता जयंत नारायण चट्टोपाध्याय और शमीम अहमद उपस्थित थे, लेकिन राज्य के किसी वकील की अनुपस्थिति से न्यायाधीश हैरान रह गए।

अदालती सूत्रों के अनुसार, रिकॉर्ड में स्पष्ट है कि पहले इस मामले में राज्य सरकार की ओर से एडवोकेट जनरल सहित 6 सरकारी वकील मौजूद थे। इसके बावजूद इस दिन किसी की भी उपस्थिति न होने पर अदालत ने आश्चर्य जताया।

न्यायमूर्ति बसाक के निर्देश पर अदालत में मौजूद अन्य कुछ अधिवक्ताओं ने राज्य के पैनल वकीलों से संपर्क करने का प्रयास किया, लेकिन उनसे संपर्क नहीं हो सका। लगभग 20 मिनट इंतजार के बाद अदालत ने अगली सुनवाई की तारीख 31 जुलाई निर्धारित कर दी।

न्यायालय के आदेश में स्पष्ट कहा गया: इस मामले में पहले राज्य सरकार की ओर से छह सरकारी वकील उपस्थित थे, लेकिन आज की सुनवाई के दौरान इनमें से कोई भी अदालत में उपस्थित नहीं था।

कल्याणी की सहकारी समिति चुनाव में तृणमूल का परचम, सभी सीटों पर बिना मुकाबले जीत

कोलकाता : पश्चिम बंगाल में एक बार फिर तृणमूल कांग्रेस ने अपना दबदबा साबित किया है। नदिया जिले के चाकदह विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत दि यशरा को-ऑपरेटिव क्रेडिट सोसाइटी लिमिटेड के चुनाव में तृणमूल ने सभी 12 सीटों पर बिना किसी प्रतिद्वंद्विता के जीत दर्ज की है। परिणाम घोषित होते ही कार्यकर्ता अबीर खेलते नजर आए और पूरे इलाके में जश्न का माहौल छा गया। छह वर्षों के लंबे अंतराल के बाद इस सहकारी समिति में चुनाव कराए गए थे। हालांकि इस बार किसी भी सीट पर तृणमूल के खिलाफ कोई अन्य राजनीतिक दल उम्मीदवार खड़ा नहीं कर सका, जिससे सभी सीटों पर तृणमूल को निर्विरोध विजय प्राप्त हुई। जीत के बाद समर्थकों ने मिष्ठान्न वितरण किया और ढोल-नगाड़ों के साथ जश्न मनाया। तृणमूल समर्थकों का उत्साह साफ झलक रहा था, जिससे यह स्पष्ट है कि आगामी 2026 के विधानसभा चुनावों के पहले यह जीत कार्यकर्ताओं का मनोबल और अधिक बढ़ा रही है। हालांकि इस जीत पर सवाल उठाते हुए स्थानीय बीजेपी विधायक बंकिम घोष ने तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, यह लोकतंत्र की हार है। अगर निष्पक्ष चुनाव होते, तो तृणमूल इस तरह की जीत नहीं पाती। यह चुनाव पूरी तरह से अनियमित और अवैध था। चुनाव के दौरान संभावित अशांति को देखते हुए इलाके में भारी संख्या में पुलिस बल की तैनाती की गई थी। हालांकि चुनाव परिणाम शांतिपूर्ण तरीके से घोषित किए गए। गौरतलब है कि हाल के महीनों में पश्चिम बंगाल में जिन सहकारी समितियों में चुनाव हुए हैं, उनमें से अधिकांश में तृणमूल कांग्रेस ने जीत हासिल की है, जिससे राज्य में उसकी पकड़ और मजबूत होती दिख रही है।

हावड़ा मंडल में डीआरएम ने उत्कृष्ट कार्य करने वाले रेल कर्मियों को किया सम्मानित

कोलकाता, समाज्ञा : पूर्व रेलवे के हावड़ा मंडल में ट्रेनों की सुरक्षित संचालन संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से डीआरएम संजीव कुमार ने 28 जुलाई को इंजीनियरिंग विभाग के पांच अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों को सम्मानित किया। इन कर्मचारियों को उनकी सतर्कता, प्रतिबद्धता, समय पर उठाए गए प्रभावी कदमों और रेलवे संचालन में सुरक्षा सुनिश्चित करने में अहम भूमिका के लिए सराहा गया। सम्मान समारोह के दौरान अपर मंडल रेल प्रबंधक (ऑपरेशंस) सौरिश मुखर्जी तथा वरिष्ठ मंडल अभियंता (समन्वय) कार्तिक सिंह भी उपस्थित थे। सम्मानित कर्मचारियों ने अपने कार्यों में मानक संचालन प्रक्रियाओं का पालन करते हुए सक्रियता दिखाई, जिससे संभावित

दुर्घटनाओं को टाला जा सका और मंडल में परिचालन की गुणवत्ता को बनाए रखा गया।

इस अवसर पर डीआरएम संजीव कुमार ने कहा कि रेलवे की सभी गतिविधियों में 'सुरक्षा सर्वोपरि' सिद्धांत को हमेशा प्राथमिकता दी जाती है। उन्होंने सभी कर्मचारियों और पर्यवेक्षकों से अपील की कि वे अपने रोजमर्रा के कार्यों में अनुशासन, सतर्कता और जागरूकता बनाए रखें। उन्होंने यह भी कहा कि निरंतर प्रशिक्षण और जागरूकता ही कार्यस्थल पर 'सेफ्टी फर्स्ट' मानसिकता को मजबूती प्रदान कर सकते हैं।

ममता की भवानीपुर विस सीट पर भाजपा करा रही है सर्वे

भगवा कैंप का लक्ष्य विधानसभा चुनाव में ममता को कड़ी टक्कर देना है

कोलकाता, समाज्ञा : भाजपा का शीर्ष नेतृत्व आगामी 2026 के विधानसभा चुनाव में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को उनका अपना क्षेत्र भवानीपुर विधानसभा सीट पर 'कड़ी' टक्कर देना चाहता है। भाजपा की ओर से अपने वरिष्ठ विधायक व नेता प्रतिपक्ष सुवेंदु अधिकारी को मुख्यमंत्री के खिलाफ लड़ाई में एक 'परखे हुए नेता' के रूप में जिम्मेदारी दी है। यह जिम्मेदारी मिलने के बाद, उन्होंने साल की शुरुआत से ही काम करना शुरू कर दिया है। इस बार सुवेंदु ने भवानीपुर विधानसभा क्षेत्र के वार्डों और बूथों की स्थिति का स्पष्ट अंदाजा लगाने के लिए एक सर्वे शुरू कराया है।

दक्षिण कोलकाता भाजपा सूत्रों के अनुसार, नंदीग्राम के विधायक को भी उस सर्वे की प्रारंभिक रिपोर्ट मिल गई है।

कई लोग भवानीपुर विधानसभा क्षेत्र को 'मिनी भारतवर्ष' कहते हैं। क्योंकि, भवानीपुर विधानसभा क्षेत्र में बंगाली, पंजाबी, सिंधी, गुजराती, मराठी, ओडिया और मुस्लिम सहित विभिन्न समुदायों के लोग रहते हैं। धार्मिक पहचान के अलावा, सुवेंदु के सर्वे में भाषा और जाति आधारित मुद्दे भी शामिल हैं। सर्वेक्षण में भवानीपुर में ब्राह्मणों, कायस्थों और अनुसूचित जाति का प्रतिशत भी सामने आया। भाजपा सूत्रों के अनुसार, सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार, भवानीपुर में कायस्थ समुदाय के वोटों की संख्या सबसे अधिक है। उनका 26.2 प्रतिशत प्रतिनिधित्व है। मुस्लिम समुदाय का प्रतिनिधित्व 24.5 प्रतिशत है। पूर्वांचलि मतदाताओं का 14.9 प्रतिशत, मारवाड़ी 10.4 प्रतिशत और ब्राह्मण 7.6 प्रतिशत हैं।

भवानीपुर के एक भाजपा नेता के अनुसार नेता प्रतिपक्ष भवानीपुर विधानसभा क्षेत्र का विस्तृत विवरण जानना चाहते हैं। वह यह जानकर अपनी रणनीति बनाना चाहते हैं कि किस बूथ पर कौन सा समुदाय या भाषा बोलने वाले मतदाता हैं। इसलिए, सभी सर्वेक्षण रिपोर्टों को फिलहाल गुप्त रखा गया है। भवानीपुर भाजपा के एक सूत्र का कहना है कि सुवेंदु के बयान के अनुसार, राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और गृहमंत्री अमित शाह भवानीपुर में पार्टी के शीर्ष नेताओं का उपयोग करेंगे। आने वाले दिनों में सभी समुदायों के नेता भाजपा शीर्ष नेतृत्व के निर्देश पर भवानीपुर आ सकते हैं और जनसंपर्क अभियान चला सकते हैं। विपक्षी नेता द्वारा किया गया सर्वेक्षण उस काम में प्रभावी हो सकता है।

दुर्गा पूजा से पहले सड़कों की मरम्मत में जुटी कोलकाता नगर निगम

पुलिस ने सौंपा 436 स्थानों की सूची

कोलकाता : इस साल दुर्गा पूजा समय से पहले आ रही है - 28 सितंबर को महाषष्ठी होने के कारण अब ज्यादा समय नहीं बचा है। ऐसे में कोलकाता नगर निगम ने शहर की सड़कों को गड्ढा मुक्त और सुरक्षित बनाने की तैयारियां तेज कर दी हैं।

सूत्रों के अनुसार, हर बार की तरह इस बार भी कोलकाता पुलिस मुख्यालय लालबाजार की ओर से शहर की सड़कों की निगरानी की गई और कुल 436 ऐसे स्थान चिन्हित किए गए हैं जहां मरम्मत की सख्त ज़रूरत है। ये सूची लालबाजार ने नगर निगम को सौंप दी है, और बताया गया है कि इन इलाकों की

सड़कों को अच्छे से ठीक करना ज़रूरी है।

नगर निगम के सूत्रों ने बताया कि अब तक 221 स्थानों पर मरम्मत का काम पूरा कर लिया गया है। हालांकि लगातार हो रही बारिश ने कार्य में बाधा डाली है। कई जगहों पर बिटुमिन की परतें बारिश के कारण उखड़ गई हैं, तो कहीं पेंचवर्क की गई सड़कें फिर से गड्ढों में बदल रही हैं।

फिर भी निगम को उम्मीद है कि यदि पूजा से पहले कुछ दिनों तक मौसम साफ रहता है और धूप मिलती है, तो मरम्मत का एक और चरण चलाया जाएगा। ऐसे में शहर की मुख्य सड़कों को दुर्गा पूजा से पहले गड्ढा मुक्त किया जा सकेगा, जिससे लोगों को आने-जाने में कोई परेशानी न हो।

नगर निगम और पुलिस प्रशासन की यह संयुक्त कोशिश दुर्गा पूजा के दौरान शहरवासियों और पर्यटकों के सुगम आवागमन को सुनिश्चित करने की दिशा में एक अहम कदम है।

हुगली की युवती की मुंबई में रहस्यमयी मौत, परिवार ने उठाए सवाल

हुगली : मुंबई के एक योग आश्रम में हुगली जिले के चुंचुड़ा की रहने वाली युवती संगीता चक्रवर्ती की रहस्यमयी परिस्थितियों में मौत हो गई। आश्रम प्रबंधन की ओर से परिवार को बताया गया कि संगीता की मौत बांध के पानी में डूबने से हुई है। इस सूचना के मिलते ही मृतका के पिता तत्काल मुंबई रवाना हो गए। संगीता चुंचुड़ा के कारबाला इलाके की निवासी थीं और एक निजी कंपनी में कार्यरत थीं। हाल ही में वह कुछ दिनों के लिए मुंबई स्थित एक योग आश्रम गई थीं, जहां यह घटना घटी। परिवार का सबसे बड़ा सवाल यही है कि संगीता अचानक बांध में कैसे गिरीं? क्या यह दुर्घटना थी या इसके पीछे कोई और वजह छिपी है? परिवार ने घटना की गहन और निष्पक्ष जांच की मांग की है।

मतदाता सूची में फर्जी नाम शामिल कराने वाले अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई की चेतावनी

कोलकाता, समाज्ञा : केंद्रीय चुनाव आयोग बंगाल की मतदाता सूची में फर्जी लोगों के नाम शामिल कराने के मामले में दोषी पाए गए वेस्ट बंगाल सिविल सर्विस के दो अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई की तैयारी कर रहा है। आयोग सूत्रों ने बताया कि ये दोनों अधिकारी बंगाल के बारुईपुर व मोयना इलाके में चुनाव पंजीकरण अधिकारी के तौर पर काम कर रहे थे। उन्होंने लाग-इन से संबंधित तथ्य साझा किए, जिससे मतदाता सूची में फर्जी नाम शामिल किए गए। दोनों को गत सोमवार को सुनवाई के लिए समन किया गया था। प्राथमिक जांच में उनके विरुद्ध आरोप साबित हुए हैं। दूसरी तरफ, राज्य के मुख्य चुनाव अधिकारी (सीईओ) का कार्यालय

मतदाता सूची में फर्जी लोगों के नाम शामिल किए जाने की शिकायतों को लेकर तत्पर हुआ है। एक समीक्षा में 110 फर्जी मतदाताओं के नाम सामने आए हैं। सीईओ ने समस्त जिला चुनाव अधिकारियों से आगामी 14 अगस्त तक इसपर रिपोर्ट मांगी है। सीईओ ने इस मामले की जांच के लिए जिला चुनाव अधिकारियों को लेकर एक विशेष कमेटी के गठन का भी निर्देश दिया है।

राज्य के तीन होम्योपैथी मेडिकल कॉलेजों में दाखिले स्थगित, सीटें में भी आई कमी

कोलकाता, समाज्ञा : राज्य में होम्योपैथी छात्रों के लिए एक बड़ा झटका लगा है। खामियों, लापरवाही और बुनियादी ढांचे की कमी के चलते राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग ने चालू शैक्षणिक वर्ष के लिए तीन निजी होम्योपैथी मेडिकल कॉलेजों में दाखिले की मंजूरी रद्द कर दी है। इतना ही नहीं, दो और कॉलेजों में सीटों की संख्या आधी कर दी गई है। मेदिनीपुर स्थित राजकीय होम्योपैथी कॉलेज में भी 13 सीटें कम कर दी गई हैं। निरीक्षण के दौरान गंभीर शिकायतें सामने आई हैं। सूत्रों के अनुसार, केंद्रीय प्रतिनिधिमंडल ने होम्योपैथी शिक्षा की गुणवत्ता पर सवाल उठाए हैं। उनके अनुसार, कहीं 14 शिक्षकों और डॉक्टरों की कमी है, तो कहीं 18-19 की। कई कॉलेज-सह-अस्पतालों में आपातकालीन सेवा उपलब्ध नहीं है। कई होम्योपैथी अस्पतालों में पर्याप्त जीवन रक्षक दवाएं नहीं हैं। एनेस्थीसिया का कोई बुनियादी ढांचा नहीं है। कई कॉलेजों में तो क्लीनिकल गतिविधियां भी लगभग शून्य हैं। ऐसे में, राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग ने एक ही बार में राज्य की कुल 218 बीएचएमएस सीटें रद्द कर दी हैं। जिनमें 205 निजी कॉलेज और 13 सरकारी कॉलेज शामिल हैं। सूत्रों के अनुसार, प्रताप चंद्र होम्योपैथी कॉलेज, आसनसोल होम्योपैथी कॉलेज और खड़गपुर होम्योपैथी कॉलेज की मान्यता पूरी तरह रद्द कर दी गई है। इन तीनों में प्रवेश के लिए कुल 160 सीटें थीं। इसी तरह, कई होम्योपैथी कॉलेजों में भी सीटों की संख्या कम कर दी गई है। इनमें बर्दवान होम्योपैथी कॉलेज में 25, साइंथिया होम्योपैथी कॉलेज में 30 और मेदिनीपुर सरकारी कॉलेज में 63 से घटकर 50 रह गई हैं। कुल मिलाकर, राज्य में सीटों की संख्या 218 कम हो गई है। डी.एन. डे, महेश भट्टाचार्य होम्योपैथी कॉलेज, कोलकाता स्थित कलकत्ता होम्योपैथी कॉलेज जैसे प्रतिष्ठित सरकारी कॉलेज भी एनसीएच के रडार पर हैं। आयोग का स्पष्ट संदेश है कि स्वास्थ्य सचिव एक सप्ताह के भीतर कमियों को पूरा करने का वादा करें और एक महीने के भीतर लापरवाही को पूरा किया जाए। अन्यथा, स्वीकृति रद्द भी हो सकती है। अभी होम्योपैथी मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश का मौसम है। राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग के इस फैसले से छात्र और अभिभावक परेशानी में हैं। सभी की निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि राज्य सरकार इस संबंध में क्या कार्रवाई करेगी।

मध्यमग्राम में शादी के चार महीने बाद नवविवाहिता की संदिग्ध मौत, हत्या या आत्महत्या?

कोलकाता, समाज्ञा : उत्तर 24 परगना के मध्यमग्राम इलाके में एक नवविवाहिता की रहस्यमयी परिस्थिति में मौत से सनसनी फैल गई है। शादी के केवल चार महीने बाद हुई इस घटना ने स्थानीय लोगों को झकझोर कर रख दिया है। मृतका की पहचान नासरीन सुल्ताना के रूप में हुई है, जिसकी शादी नाजमुल हक नामक युवक से हुई थी, जो मध्यमग्राम थाने में अस्थायी होमगार्ड के पद पर कार्यरत है। मंगलवार सुबह नासरीन के मायके वालों को उसकी मौत की सूचना दी गई। परिवार को बताया गया कि उसने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। खबर मिलते ही नासरीन के परिजन उसकी ससुराल पहुंचे और आरोप लगाया कि यह आत्महत्या नहीं, बल्कि सुनियोजित हत्या है। परिजनों का कहना है कि शादी के

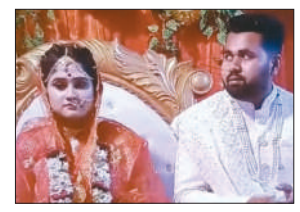

बाद से ही नासरीन के साथ मानसिक और शारीरिक अत्याचार हो रहा था। आरोप है कि नाजमुल और उसके परिजन लगातार उसे प्रताड़ित करते थे।

पुलिस ने मौके से शव को बरामद कर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है और मृतका के पति नाजमुल हक को पूछताछ के लिए हिरासत में ले लिया है। पुलिस का कहना है कि मामले की हर पहलू से जांच की जा रही है और पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों का स्पष्ट रूप से पता चल सकेगा।

भूमिहार एकता मंच पश्चिम बंगाल का 12वां स्थापना दिवस मनाया गया

कोलकाता, समाज्ञा : भूमिहार एकता मंच पश्चिम बंगाल के 12वां स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर मंच के उत्तर कोलकाता शाखा के द्वारा कोलकाता के लोहाणा महाजनबाड़ी में स्थापना दिवस सह सम्मान समारोह का आयोजन मंच के प्रदेश अध्यक्ष त्रिभुवन कुमार मिश्रा के अध्यक्षता में किया गया, जबकि संचालन व आगंतुक अतिथियों का स्वागत मंच के उत्तर कोलकाता शाखा के महासचिव रवि शंकर पांडे ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ उपस्थित अतिथियों के द्वारा केक काटकर किया गया। कार्यक्रम में प्रभात खबर के पूर्व संपादक तारकेश्वर मिश्रा, समाजसेवी श्याम नारायण सिंह बंगाली, मनोज पराशर, कमल सिंह, राजेंद्र राय, अशोक कुमार ओझा, मुकेश ठाकुर, विभूति

शंकर सिंह, मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित रहे। बैठक में गरुलिया शाखा से शिवाजी सिंह सीताराम पांडे, मनोज सिंह, बैरकपुर शाखा से इंद्रजीत सिंह, अवधेश सिंह, डा अम्बरीष राय, विजय ठाकुर, टीटागढ़ शाखा से विमलेश सिंह, रवि सिंह, वलिन्दर सिंह, सोधपुर शाखा ओंकार नाथ राय, बृजभूषण सिंह, बरसात से राजेश ओझा शिवकुमार चौबे, कचरापारा से कन्हैया पांडे, छोटू सिंह, बाटानगर से वीरेंद्र पांडे, अजय सिंह सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। राष्ट्रगान के साथ भारत माता की जय और भूमिहार एकता मंच जिंदाबाद के गगन भेदी जयकारे के साथ आलोक राय ने कार्यक्रम का समापन किया।

अदालत ने पटाशपुर में 11 साल बाद 6 लोगों को हत्या की सजा सुनाई

पूर्व मेदिनीपुर : जिले के पटाशपुर में लगभग 11 साल पहले एक हत्या हुई थी। अंततः कांथी उपजिला न्यायालय ने उस घटना में आरोपियों को दोषी पाया। न्यायालय ने छह आरोपियों को सज़ा सुनाई। उल्लेखनीय है कि 2014 में, पटाशपुर थाना अंतर्गत गोलदा पटरनी गांव में सड़क पर पत्थर फेंकने को लेकर झगड़ा और मारपीट की घटना हुई थी। कथित तौर पर, उस गांव के निवासी निताई मैती, तपन मैती, स्वप्न मैती, राजकुमार मैती, दीपाली मैती और पूर्णिमा मैती पर सचिंद्रनाथ मैती, उनकी पत्नी और दो बेटों की पिटाई करने का आरोप था। पिटाई के कारण सचिंद्रनाथ मैती, उनकी पत्नी और दो बेटे गंभीर रूप से घायल हो गए थे। घटना वाले दिन सभी को बचाकर एगरा सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उसी दिन, दोपहर 12 बजे पिटाई के कारण सचिंद्रनाथ मैती की मृत्यु हो गई। पुलिस ने उस आरोप में आरोपियों को गिरफ्तार किया था। और बाद में वे जमानत पर रिहा हो गए। यह मामला 11 साल तक चला। बहस और जवाब-तलब भी चले। सभी साक्ष्यों को स्वीकार करने के बाद न्यायाधीश ने आरोपी निताई मैती, तपन मैती, स्वपन मैती, राजकुमार मैती, दीपाली मैती और पूर्णिमा मैती को भारतीय दंड संहिता की धारा 147, 148, 149, 307, 302, 506 और 34 के तहत दोषी ठहराया। न्यायाधीश नरज्जमां अली ने आरोपी निताई मैती, तपन मैती, स्वपन मैती, राजकुमार मैती, दीपाली मैती और पूर्णिमा मैती को दोषी ठहराया। इस मामले में सरकार के पैनल वकील बेनीमाधव बेरा और अतिरिक्त पीपी मंजूर रहमान थे।

पत्नी और छोटे भाई ने की साजिश, गला घोंटकर युवक की हत्या

पुरुलिया : पुरुलिया जिले के मानबाजार थाना क्षेत्र में एक दिल दहला देने वाली हत्या की वारदात सामने आई है। घासटेड़िया गांव में गौतम सिंह सरदार(35) का शव तालाब से बरामद हुआ, जिसकी गला घोंटकर हत्या की गई थी। उसका शव रविवार को गांव के एक तालाब से बरामद हुआ। मामले की जांच में जुटी पुलिस ने मृतक की पत्नी ज्योत्स्ना सिंह सरदार (24) और उसके छोटे भाई उत्तम सिंह सरदार (23) को गिरफ्तार किया है। जांच में पता चला कि गौतम की पत्नी और उसके छोटे भाई के बीच लंबे समय से अवैध संबंध थे। शादी से पहले ही दोनों एक-दूसरे के करीब थे, लेकिन बाद में ज्योत्स्ना

की शादी गौतम से हो गई। इसके बावजूद दोनों का रिश्ता जारी रहा। पुलिस के अनुसार, दोनों ने मिलकर गौतम को रास्ते से हटाने की साजिश रची। पुलिस के सख्ती से पूछताछ करने पर दोनों ने अपना जुर्म स्वीकार किया। फिलहाल पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर दोनों को हिरासत में ले लिया है और आगे की जांच जारी है।

अखंड कीर्तन का आयोजन

हावड़ा, समाज्ञा : गंगेश्वर महादेव सेवा ट्रस्ट के सदस्यों द्वारा अखंड कीर्तन का आयोजन मंदिर प्रांगण 27 नित्यधान मुखर्जी रोड में दिनांक 27 जुलाई को हुआ। दो दिन तक चले इस अखंड कीर्तन का समापन दिनांक 28 जुलाई को रुद्राभिषेक और महाप्रसाद के साथ हुआ। प्रसाद का मुख्य आकर्षण बड़की पूरी और बुंदिया रहा। इस आयोजन में 250 से ज्यादा श्रद्धालुओं ने भाग लिया। हरे रामा हरे कृष्ण की धुन पर थिरकते श्रद्धालुओं के बीच पूर्वांचल के श्रीकांत दुबे ने अपने मधुर आवाज में सभी श्रद्धालुओं को भक्ति में लीन होकर झूमने पर मजबूर कर दिया। इस कार्यक्रम के सूत्रधार

राजेंद्र प्रसाद राय के अनुसार इस अखंड कीर्तन का आयोजन पिछले 25 साल से किया जा रहा है।

अनजाने ग्राहक ने की थी 13.86 लाख की ठगी, कोलकाता पुलिस ने पकड़ा आरोपी

❑ **जेवरात शिकायतकर्ता को लौटाए गए**

कोलकाता : मशहूर आभूषण विक्रेता अंजलि ज्वेलर्स के बाउबाजार शाखा में एक ठगी की घटना में कोलकाता पुलिस की अपराध शाखा ने उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। करीब एक साल पहले, 3 जुलाई 2024 को एक अज्ञात व्यक्ति ग्राहक बनकर दुकान में आया और 13.86 लाख मूल्य के तीन सोने के आभूषण और एक चांदी का सिक्का लेने के लिए दुकान प्रबंधक को बैंक स्टेटमेंट दिखाकर धोखा दिया। उसने भुगतान के लिए एक चेक दिया, जो बाद में बाउंस हो गया।

प्रणब चंद्रा, प्रबंधक, अंजलि ज्वेलर्स ने मुछीपाड़ा थाने में इस संबंध में शिकायत दर्ज कराई थी। जांच

अधिकारी सार्जेंट आलोक सरकार ने सीसीटीवी फुटेज के जरिए आरोपी की पहचान करने की कोशिश की। फुटेज से मिली तस्वीर के आधार पर पता चला कि आरोपी घटना से एक सप्ताह पहले कोलकाता आया था और सेंट्रल कोलकाता के एक होटल में रुका था। होटल से मिली जानकारी के आधार पर पता चला कि वह रांची, झारखंड का रहने वाला है।

दुकान में दिए गए मोबाइल नंबर बंद थे। तकनीकी निगरानी के जरिए उसके आधार कार्ड से एक नया सक्रिय मोबाइल नंबर मिला, जिसकी लोकेशन साल्टलेक व केस्टोपुर इलाके में ट्रेस हुई। पुलिस टीम ने तत्परता दिखाते हुए उसे साल्टलेक के एक रेस्टोरेंट से 11 जुलाई की देर शाम गिरफ्तार किया।

गिरफ्तारी के समय उसके पास से एक होटल की चाबी मिली, जो पार्क सर्कस इलाके में स्थित था। उस होटल के कमरे की तलाशी में वह सभी गहने बरामद किए गए, जो ठगी कर लिए गए थे। आज न्यायालय के आदेश के तहत ये सारे आभूषण शिकायतकर्ता प्रणब चंद्रा को लौटा दिए गए।

पुलिस जांच में यह भी सामने आया कि इसी आरोपी ने बिधान नगर उत्तर थाना क्षेत्र में भी इसी तरह की ठगी की थी, जिसमें 8 लाख मूल्य के गहने बरामद किए गए हैं। वह मामला संबंधित जांच अधिकारी को कानूनी प्रक्रिया पूरी कर सौंपा जाएगा।

वर्तमान में आरोपी न्यायिक हिरासत में है और आगे की जांच जारी है। पुलिस के इस त्वरित और कारगर कार्रवाई की सराहना हो रही है।

शिव शक्ति सेवा समिति ने तीर्थयात्रियों की सेवा के लिए लगाया श्रावणी मेला कैंप

हुगली, समाज्ञा : हुगली जिले के हरिपाल में शिव शक्ति सेवा समिति द्वारा तीर्थयात्रियों की सेवा के लिए श्रावणी मेला कैंप का आयोजन किया गया। यह कैंप रविवार को आराधना ट्रस्ट के पास काशी विश्वनाथ से 2 किलोमीटर आगे लगाया गया। इस कैंप के माध्यम से 21 हजार पानी की बोतले, 500 किलो छोला, 1100 किलो तरबूज, 200 किलो बताशा, बिस्कुट पैकेट 21 हजार, 51 हजार चॉकलेट का वितरण किया गया। इस कैंप को सफल बनाने में प्रशांत अग्रहरी, सोनू साहू, अमित अग्रहरि, कृष्णा जायसवाल, देवव्रत राय, संदीप साव, करण प्रसाद, मैक्स शर्मा, ऋषभ सिंह, सूरज साव, रिशु अग्रहरि, संदीप साहू, विजय गुप्ता, सतीश यादव, मनीष सिंह, अमित शाह, विनीत शर्मा, आशीष शर्मा, पंकज साहू, सुब दे, राकेश यादव, सुधीर साहू, सुभाष गुप्ता, प्रशांत शर्मा, सूरज राय का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

कोलकाता साइबर पुलिस ने पीओएस धोखाधड़ी मामले में दो आरोपियों को किया गिरफ्तार

❑ **सैकड़ों सिम कार्ड और फिंगरप्रिंट स्कैनर जब्त**

कोलकाता : कोलकाता साइबर थाना द्वारा पीओएस धोखाधड़ी से जुड़े एक गंभीर मामले की जांच के सिलसिले में शहर के विभिन्न हिस्सों में छापेमारी कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। यह कार्रवाई साइबर थाना केस संख्या 36/25, दिनांक 21/06/2025, के तहत सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 की धारा 66उ/66ऊ/43, भारतीय दंड संहिता (इछड 2023) की धारा 61(2)/319(2)/318(4)/336(2)/336(3)/338/340(2), तथा टेलीकम्युनिकेशन एक्ट 2023 की धारा 42(3) के अंतर्गत की गई।

पहला आरोपी सुवेंदु गायेन (31), निवासी 143 पिकनिक गार्डन रोड, थाना तिलजला को तिलजला

इलाके के एक मोबाइल दुकान 'अंकिता कम्युनिकेशन', 35/1 बेडियाडांगा मस्जिद बाड़ी लेन से गिरफ्तार किया गया। छापेमारी के दौरान उसके पास से दो ब्लैक और सिल्वर रंग के फिंगरप्रिंट स्कैनर, 600 वीआई कंपनी सीलबंद 5जी सिम कार्ड, 20 जियो कंपनी सीलबंद सिम कार्ड, 55 बिना पैक वीआई सिम कार्ड और एक रेडमी नोट 10टी 5जी मोबाइल फोन जब्त किया गया।

दूसरा आरोपी नीरज कुमार साहनी (25), निवासी 150 लेनिन सरणी, थाना बोबाजार, को एक्सिस बैंक के सामने, वेलिंगटन क्रॉसिंग के पास से गिरफ्तार किया गया। उसके पास से एक एयरटेल पोस्टपेड सिम कार्ड, एक रेडमी मोबाइल फोन और एक पेटीएम साउंडबॉक्स बरामद किया गया।

स्कूल बंक कर डैम घूमने गए किशोर की डूबकर मौत

पश्चिम मेदिनीपुर : पश्चिम मेदिनीपुर जिले से एक दर्दनाक घटना सामने आई है, जहां स्कूल जाने के बहाने घर से निकले एक छात्र की डैम में डूबकर मौत हो गई। मृतक की पहचान अंशु दास के रूप में हुई है, जो मेदिनीपुर शहर के कॉलेजिएट स्कूल का छात्र था और हबीबपुर इलाके में अपने मामा के घर पर मां के साथ रहता था। सोमवार को अंशु ने स्कूल की कहकर घर छोड़ा, लेकिन दोस्तों के साथ गुड़गुड़ीपाल थाना अंतर्गत आमड़ातला इलाके में डैम घूमने चला गया। बताया गया है कि वह तैरना नहीं जानता था, और पानी में उतरते ही वह गहराई में चला गया। दोस्तों ने तुरंत स्थानीय लोगों को सूचना दी, जिसके बाद काफी प्रयासों के बाद उसका शव पानी से निकाला गया। उसे तुरंत मेदिनीपुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

घर में फंदे से लटकती मिली महिला

कोलकाता : कोलकाता के हरिदेवपुर थाना क्षेत्र में 29 जुलाई 2025 को एक महिला की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। घटना सुबह करीब 9:45 बजे की है जब 49 वर्षीय मोनिका गोस्वामी का शव उनके घर की दूसरी मंजिल पर स्थित कमरे में पंखे से लटका मिला। घटना बकुलबिथि, ठाकुरपुकुर, हरिदेवपुर स्थित चार मंजिला रिहायशी इमारत में घटी। प्राप्त जानकारी के अनुसार, मोनिका अपने घर में साड़ी की मदद से पंखे से लटकी हुई पाई गईं। परिवार द्वारा उन्हें तुरंत एम.आर. बांगुर अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटनास्थल से कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। सूचना हरिदेवपुर थाने द्वारा दी गई है और आगे की कानूनी प्रक्रिया जारी है।

आईसीसीआर में डीपीएस और रूबी पार्क स्कूलों की वार्षिक कला प्रदर्शनी संपन्न

कोलकाता, समाज्ञा : कोलकाता के आईसीसीआर स्थित अबनिंद्रनाथ गैलरी में 24 से 26 जुलाई 2025 तक आयोजित वार्षिक कला प्रदर्शनी में युवा कलाकारों ने अपनी प्रतिभा का जोरदार प्रदर्शन किया। डीपीएस रूबी पार्क ने अपनी तीसरी वार्षिक कला प्रदर्शनी का सफल आयोजन किया। वहीं, रूबी पार्क पब्लिक स्कूल ने पहली बार अपनी वार्षिक कला प्रदर्शनी प्रस्तुत की। इस प्रदर्शनी में कक्षा 1 से 12 तक के छात्रों की 600 से अधिक प्रस्तुतियों में से चुनी गई 235 चित्रकृतियां प्रदर्शित की गईं, जो कोलकाता के युवाओं की विविध और प्रेरणादायक कला प्रतिभा को दर्शाती हैं। 24 जुलाई को प्रदर्शनी का उद्घाटन सुब्रत बिश्वास ने किया, जिनके साथ डीपीएस रूबी पार्क की

प्राचार्य जयोति चौधरी और रूबी पार्क पब्लिक स्कूल की प्राचार्य मौसमी महापात्रा उपस्थित रहीं। 26 जुलाई को समापन समारोह और पुरस्कार वितरण का आयोजन हुआ। जिसमें 5 डीपीएस रूबी पार्क के छात्रों और 5 रूबी पार्क पब्लिक स्कूल के छात्रों को पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त, 15 छात्रों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए मेरिट सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया। समापन समारोह में कला क्षेत्र के प्रसिद्ध कलाकार सुब्रत गांगोपाध्याय, मूर्तिकार तारक गराई और तापस सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इनके प्रोत्साहन भरे शब्दों ने युवा कलाकारों को प्रेरित किया और इस आयोजन की गरिमा बढ़ाई।

राजस्थान : 'ग्राम रक्षक' स्वयंसेवकों की भर्ती करेगी पुलिस

जयपुर : राजस्थान पुलिस ग्राम रक्षक के रूप में स्वयंसेवकों की भर्ती करेगी जिसके लिए आठवीं पास लोग आवेदन कर सकेंगे। पुलिस के एक अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी। पुलिस अधिकारी के अनुसार राजस्थान पुलिस ने एक महत्वपूर्ण पहल के तहत ग्राम रक्षक के रूप में स्वयंसेवकों की भर्ती के लिए आ-वेदन आमंत्रित किए हैं। यह पद अवैतनिक होगा और चुने गए स्वयंसेवक दो साल के लिए अपने गांवों में पुलिस के सहायक के तौर पर काम करेंगे। यह भर्ती राजस्थान पुलिस अधिनियम, 2007 और राजस्थान पुलिस (संशोधन) अध्यादेश, 2020 के प्रावधानों के तहत की जा रही है।

उत्तर प्रदेश में पहली एआई आधारित सड़क परियोजना को परिवहन मंत्रालय की मंजूरी मिली

लखनऊ : उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग को केंद्र सरकार से एआई-आधारित प्रायोगिक (पायलट) परियोजना के लिए केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (एमओआरटीएच) की मंजूरी मिल गई है। एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई। इस परियोजना का उद्देश्य सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाना, प्रवर्तन दक्षता बढ़ाना और नागरिकों के लिए अधिक पारदर्शी, तेज और सुरक्षित परिवहन सेवाएं प्रदान करना है। मंत्रालय ने सोमवार को उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग की कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और बिग-डेटा एनालिटिक्स-आधारित सड़क सुरक्षा प्रायोगिक परियोजना के लिए औपचारिक अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी कर दिया।

आगरा में अवैध धर्मांतरण मामले में चार आरोपियों की हिरासत अवधि चार दिन के लिये बढ़ी

आगरा : उत्तर प्रदेश के आगरा जिले की एक अदालत ने बड़े पैमाने पर अवैध धर्मांतरण के सिलसिले में गिरफ्तार चार आरोपियों की पुलिस हिरासत की अवधि मंगलवार को चार दिन के लिए बढ़ा दी। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी।अधिकारी ने बताया कि वहीं छह अन्य आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।अभियोजन अधिकारी ब्रजमोहन सिंह कुशवाहा ने बताया, आगरा के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट मृत्युंजय श्रीवास्तव ने आयशा, रहमान कुरैशी, मोहम्मद अली और अली हसन की पुलिस हिरासत चार दिन के लिए बढ़ा दी।

झारखंड में बस और ट्रक के बीच टक्कर में छह कांवड़ियों की मौत और 24 लोग घायल

रांची/देवघर : झारखंड के देवघर में मंगलवार को एक बस और गैस सिलेंडरों से भरे ट्रक के बीच टक्कर होने से कम से कम छह कांवड़ियों की मौत हो गई और 24 अन्य लोग घायल हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि कांवड़ियों को ले जा रही एक बस मोहनपुर थाना क्षेत्र के जमुनिया जंगल के पास सुबह करीब साढ़े पांच बजे गैस सिलेंडर ले जा रहे एक ट्रक से टकरा गई।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दुर्घटना में जान गंवाने वाले श्रद्धालुओं के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की। उन्होंने 'एक्स' पर कहा, झारखंड के देवघर में हुई सड़क दुर्घटना अत्यंत दुखद है। इसमें जिन श्रद्धालुओं को अपनी जान गंवानी पड़ी है, उनके परिजनों के प्रति मेरी गहरी शोक-संवेदनाएं। ईश्वर उन्हें इस पीड़ा को सहने की शक्ति दे। इसके साथ ही मैं सभी घायलों के जल्द से जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं। देवघर के उपायुक्त नमन प्रियेश लाकड़ा ने बताया, ''देवघर के जमुनिया चौक पर हुए हादसे में छह श्रद्धालुओं की मौत हो गई और 24 अन्य घायल हो गए। घायलों में से आठ व्यक्तियों को देवघर स्थित एम्स में भर्ती कराया गया है, जबकि शेष का सदर अस्पताल में इलाज कराया जा रहा है। इससे पहले, दुमका जोन के पुलिस महानिरीक्षक शैलेंद्र कुमार सिन्हा ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि यह दुर्घटना तब हुई, जब कांवड़ियों से भरी बस गैस सिलेंडर ले जा रहे एक ट्रक से टकरा गई थी। उन्होंने बताया कि टक्कर के बाद बस चालक वाहन से नीचे गिर गया, जिससे वाहन के स्टेयरिंग पर कोई भी मौजूद नहीं रहा। इसके बाद बस कुछ देर तक चलती रही और फिर ईंटों के ढेर से टकराकर रुक गई। अधिकारी ने बताया कि इस हादसे में बस पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। सांसद निशिकांत दुबे ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में दावा किया कि इस दुर्घटना में 18 कांवड़ियों की मौत हुई है। उन्होंने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''मेरे लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत देवघर में श्रावण मास में कांवड़ यात्रा के दौरान बस और ट्रक के दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण 18 श्रद्धालुओं की मौत हो गई है। बाबा बैद्यनाथ जी उनके परिजनों को दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।'' हालांकि, पुलिस ने पुष्टि की कि सिर्फ छह लोगों की मौत हुई है, जबकि दो लोगों की हालत गंभीर बताई जा रही है । एक अन्य अधिकारी ने बताया कि इस हादसे में कम से कम 24 कांवड़िये घायल हो गये हैं और उन्हें दुमका के सरैयाहाट पीएचसी सहित विभिन्न अस्पतालों एवं निकटवर्ती प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में पहुंचाया गया है।

डिंपल यादव पर मौलाना की अभद्र टिप्पणी को लेकर भाजपा ने अखिलेश यादव से किए सवाल

लखनऊ : समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव की पत्नी व सांसद डिंपल यादव पर एक मौलाना द्वारा की गई कथित अभद्र टिप्पणी को लेकर भाजपा ने अखिलेश पर निशाना साधा है। भाजपा ने अखिलेश पर इस मामले में चुप्पी साधने का आरोप लगाते हुए उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में पोस्टर लगाए गए हैं और उनसे सवाल किया है कि वे राज्य की महिलाओं की सुरक्षा कैसे करेंगे। लखनऊ में भाजपा प्रदेश महासचिव व एमएलसी सुभाष यदुवंश द्वारा लगाए गए पोस्टर में सवाल किया गया है, पत्नी के अपमान पर चुप रहने वाले प्रदेश की बहन बेटियों की सुरक्षा क्या करेंगे? पोस्टर में एक तरफ अखिलेश यादव और दूसरी तरफ मौलाना साजिद रशीदी की तस्वीरें हैं। पोस्टर के ऊपर मौलाना का आपत्तिजनक बयान भी लिखा है। लखनऊ के विभिन्न इलाकों में शुरू में लगाए गए अधिकतर पोस्टर बाद में हटा दिये गये। हालांकि एक पोस्टर बहुखंडी बहुमंजिला अपार्टमेंट में अब भी लगा हुआ था। भाजपा के विधान परिषद सदस्य सुभाष यदुवंश ने इस बात से इनकार किया कि पोस्टर हटाए जाने से इस विषय पर भाजपा के रुख में कोई बदलाव आया है।

नोएडा में सपा कार्यकर्ताओं ने मौलाना रशीदी पर किया हमला

नोएडा : उत्तर प्रदेश के नोएडा में आयोजित एक टीवी कार्यक्रम के दौरान मंगलवार को समाजवादी पार्टी (सपा) के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने मैनपुरी से सांसद डिंपल यादव के खिलाफ अभद्र भाषा का प्रयोग करने वाले मौलाना साजिद रशीदी पर हमला कर दिया। सपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने मौलाना के साथ मारपीट की। उन्होंने इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर स्वयं वायरल किया है। समाजवादी पार्टी के छात्र सभा के गौतम बुद्ध नगर के जिला अध्यक्ष मोहित नागर ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो प्रसारित करते हुए कहा कि मंगलवार को नोएडा में एक टीवी चैनल के कार्यक्रम में वह भाग लेने के लिए अपने साथियों के साथ गए थे।

मुख्यमंत्री योगी ने प्रयागराज और विन्ध्याचल मंडल के जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक की

प्रयागराज : उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को यहां सर्किट हाउस में एक उच्च स्तरीय बैठक में प्रयागराज और विन्ध्याचल मंडल के सांसदों, विधायकों और विधान परिषद सदस्यों के साथ प्रस्ताव एवं कार्य योजना की समीक्षा की। राज्य सरकार द्वारा जारी एक बयान के मुताबिक, इस बैठक में मुख्यमंत्री ने सभी जनप्रतिनिधियों से उनके निर्वाचन क्षेत्रों की परिस्थितियों, जन अपेक्षाओं और विकास प्राथमिकताओं के विषय में व्यक्तिगत रूप से संवाद किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रयागराज और विन्ध्याचल क्षेत्र के विकास को सरकार प्राथमिकता दे रही है। यह दोनों ही मंडल उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान के केन्द्र हैं। इन क्षेत्रों का पुनरुत्थान और समेकित विकास प्रदेश के विकास को गति प्रदान करेगा। बैठक में योगी आदित्यनाथ ने जनप्रतिनिधियों द्वारा लोक निर्माण विभाग को उपलब्ध कराए गए प्रस्तावों पर चर्चा करते हुए इन प्रस्तावों को प्राथमिकता के आधार पर शासन को उपलब्ध कराने के लिए कहा और लोक निर्माण विभाग तथा धर्मार्थ कार्य विभाग को इन प्रस्तावित कार्यों को प्राथमिकता पर लेते हुए कार्यों का समयबद्ध, पारदर्शी और गुणवत्तापूर्ण ढंग से क्रियान्वयन सुनिश्चित कराने का निर्देश दिया।

योगी ने वाराणसी में प्रधानमंत्री की दो अगस्त को निर्धारित जनसभा की तैयारी के निर्देश दिए

वाराणसी (उप्र) : उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने वाराणसी के एक गांव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दो अगस्त की प्रस्तावित जनसभा की तैयारियों के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिए और कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया। एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई। बयान में बताया गया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपने दो दिवसीय दौरे पर सोमवार को वाराणसी पहुंचे और पहले दिन 'सर्किट हाउस' में वाराणसी और आजमगढ़ मंडल के प्रतिनिधियों के साथ विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा बैठक की। योगी आदित्यनाथ ने अपने दौरे के दूसरे दिन मंगलवार को सेवापुरी के ग्राम सभा बनौली में दो अगस्त को होने वाले प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने मौके पर मौजूद अधिकारियों को निर्देश दिया कि कार्यक्रम स्थल पर आने वाले लोगों को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए।

न्यूज अपडेट

राजस्थान में इस सीजन में अब तक सामान्य से 85 प्रतिशत अधिक बारिश

जयपुर : राजस्थान में इस मानसून सीजन में अब तक सामान्य से लगभग 85 प्रतिशत अधिक बारिश हुई है। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार अब तक राज्य के अधिकांश जिले 'असामान्य' या 'अधिक' वर्षा की श्रेणी में आ गए हैं। राज्य जल संसाधन विभाग के अनुसार राज्य में एक जून से 29 जुलाई तक सामान्य औसत 202.51 मिलीमीटर बारिश होती है लेकिन इस बार 374.58 मिलीमीटर वर्षा हो चुकी है जो तुलनात्मक रूप से 84.96 प्रतिशत अधिक है। मानसून की अच्छी बारिश के कारण इस बार राज्य को 'असामान्य' वर्षा श्रेणी में रखा गया है। इस श्रेणी में सामान्य से 60 प्रतिशत या उससे अधिक बारिश होती है। राज्य के कुल 27 जिले इसी श्रेणी में आते हैं। इनमें अजमेर, अलवर, बालोतरा, बारां, ब्यावर, भीलवाड़ा, बूंदी, चित्तौड़गढ़, दौसा, धौलपुर, डीडवाना-कुचामन, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जालौर, झालावाड़, झुंझुनूं, जोधपुर, करौली, कोटा, नागौर, पाली, फलोदी, राजसमंद, सवाई माधोपुर, सीकर और टोंक शामिल हैं।

राजस्थान: पुलिस ने एक विशेष अभियान में 2903 बदमाशों को गिरफ्तार किया

जयपुर: राजस्थान पुलिस ने राज्य भर में दो दिन के एक विशेष अभियान के तहत 2903 बदमाशों को गिरफ्तार किया। एक वरिष्ठ अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी।अधिकारी ने बताया कि पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) राजीव शर्मा के निर्देश पर 26 और 27 जुलाई को दो दिवसीय 'एरिया डोमिनेशन' अभियान चलाया गया। अतिरिक्त महानिदेशक (अपराध) दिनेश एमएन ने बताया कि इस राज्य स्तरीय अभियान को शुरू करने से पहले सभी जिलों और पुलिस रेंज द्वारा व्यापक तैयारी की गई थी।उन्होंने बताया कि अभियान की सफलता सुनिश्चित करने के लिए रेंज महानिरीक्षक, जयपुर और जोधपुर आयुक्त खुद नियंत्रण कक्षों में मौजूद रहे जबकि पुलिस अधीक्षकों ने फील्ड में रहकर समन्वय स्थापित किया। राजस्थान पुलिस की कुल 3104 टीमों ने इस विशेष अभियान में बदमाशों के 15,521 ठिकानों पर दबिश डाली, जिसमें विभिन्न अपराधों में संलिप्त 2,903 बदमाशों को गिरफ्तार किया गया।अधिकारी ने बताया कि अभियान में कुल 13,164 पुलिसकर्मियों ने भाग लिया।उन्होंने बताया कि अभियान में 417 कुख्यात अपराधियों के साथ-साथ 1688 स्थायी वारंटी/उद्घोषित अपराधियों को गिरफ्तार किया गया।अधिकारी ने बताया कि अभियान के तहत जयपुर रेंज ने सर्वाधिक 4056 स्थानों पर दबिश देकर 79 गंभीर अपराधियों, 579 वारंटियों एवं 20 इनामी और 238 सामान्य अपराधियों को गिरफ्तार किया गया।

बिहार मंत्रिमंडल ने स्वच्छता कर्मियों के उत्थान के लिए आयोग के गठन को मंजूरी दी

पटना : बिहार मंत्रिमंडल ने मंगलवार को कई प्रस्तावों को मंजूरी दे दी, जिनमें सफाई कर्मचारियों के कल्याण के लिए एक आयोग का गठन, पांच डेयरी संयंत्रों की स्थापना, स्कूल कक्षाओं का जीर्णोद्धार और एक धार्मिक मेले को सरकार के प्रबंधन के अधीन लाना शामिल है। बिहार में इस वर्ष के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनजर ये निर्णय महत्वपूर्ण माने जा रहे हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में हुई राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में बिहार राज्य सफाई कर्मचारी आयोग के गठन के शहरी विकास एवं आवासन विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई। इस संबंध में एक अधिकारी ने कहा, 'आयोग के गठन का निर्णय राज्य में स्वच्छता कर्मियों के अधिकारों एवं हितों की सुरक्षा, उनके कल्याण, पुनर्वास, सामाजिक उत्थान, शिकायत निवारण और विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की निगरानी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से लिया गया है।' बिहार राज्य सफाई कर्मचारी आयोग में एक अध्यक्ष, एक उपाध्यक्ष एवं पांच सदस्य होंगे, जिनमें एक महिला/तृतीय लिंगी होगा। उन्होंने कहा कि आयोग स्वच्छता कार्य में लगे समाज के वंचित वर्गों को मुख्यधारा में लाने तथा उनके सामाजिक एवं आर्थिक विकास में योगदान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने रविवार को घोषणा की थी कि उनकी सरकार ने बिहार राज्य सफाई कर्मचारी आयोग गठित करने का निर्णय लिया है।

साधु और लकड़हारे की कहानी

एक समय की बात ईश्वरपुर नामक गाँव में एक लकड़हारा रहता था। जोकि, बहुत गरीब था, किसी तरह से उसका और उसके परिवार का जीवन लकड़ियाँ बेचकर व्यतीत होता था। लकड़हारा प्रतिदिन लकड़ियाँ काटता और एकठ्ठा करता। दूसरे दिन उसे बाजार जाकर बेच आता, जिससे उसे कुछ पैसे मिल जाते थे। उन्ही पैसों से उसके घर का गुजारा बहुत मुश्किल से चलता था।

अचानक से एक रात लकड़हारे के घर पर चार साधु महात्मा आए। जिन्हें देख लकड़हारा आश्चर्यचकित हो उठा। सभी साधुओं ने एक-एक करके अपना नाम लकड़हारे को बताया। पहले साधु ने बोला मेरा नाम धन हैं, दूसरे ने बोला मेरा नाम वैभव हैं, तीसरे ने बोला मेरा नाम सफलता हैं, और चौथे ने बोला मेरा नाम श्रम हैं। आज रात हम लोग आप के घर पर भोजन करना चाहते हैं।

लकड़हारे ने साधु महात्मा से बोला महाराज हम बहुत गरीब हैं। हमारे पास आप सभी को खिलाने का पर्याप्त भोजन नहीं हो पाएगा। आप बताओ हमें क्या करना चाहिए, साधुओ ने कहा ठीक हैं, आपके के पास हम सभी को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं हैं तो कोई बात नहीं, हम चारों में से कोई एक आज आपके घर पर भोजन करेगा। लेकिन ध्यान रहें,

हम चारों में से जिसे आप अपने घर पर आमंत्रित करोगे वह अपने नाम जैसा प्रभाव लेकर आपके घर में आएगा। आप हमें बताओ सबसे पहले किसको आमंत्रित करना चाहते हो।

लकड़हारा चिंता में पड़ गया और सोचने लगा पहले किसको आमंत्रित करें? क्योंकि धन, वैभव, सफलता और श्रम चारों ही हर किसी के लिए जरूरी होता हैं। लकड़हारा कुछ समय के लिए अपने घर में गया और अपने पत्नी से पूछा, दोनों ने आपस में कुछ देर विचार विमर्श करने के बाद निश्चय किया कि जिसकी वजह से हमारा घर चलता हैं, उस साधु को हमें पहले बुलाना चाहिए।

फिर लकड़हारा अपने घर से बाहर आया और सबसे पहले श्रम आमंत्रित किया। जैसे ही श्रम ने घर के अंदर अपने कदम रखे, बाकी के तीनों साधु धन, वैभव, और सफलता भी अंदर आने लगे। यह सब देख, लकड़हारे ने साधुओं से पूँछ कि महाराज मै कुछ समझा नहीं, अभी तो आपने कहा था कि कोई एक भोजन के लिए आएगा। फिर तीनों साधुओं ने लकड़हारे को समझाया कि जिस घर में श्रम रहता हैं, जिस घर में मेहनत और लगन होती हैं। वहाँ पर हम तीनों धन, वैभव और सफलता अपने आप आ जाते हैं।

नैतिक शिक्षा: श्रम के द्वारा आप धन, वैभव और सफलता के अलावा और बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। इसलिए, हमें श्रम, मेहनत से पीछे नहीं भागना चाहिए।

कुम्हार और उसकी गुस्सैल पत्नी

किसी गाँव में एक कुम्हार और उसकी पत्नी रहते थे। कुम्हार अपना घर चलाने के लिए मिट्टी के बर्तन बनाता और बेचता था। जिससे उसके परिवार का जीवन यापन होता था। कुम्हार बहुत ही नेक, शांत और सहनशील इंसान था। जबकि, कुम्हार की पत्नी बहुत गुस्सैल थी। उसे हर किसी बात में गुस्सा आ जाता था। वह समझ नहीं पाती थी की उसे इतना गुस्सा क्यों आता हैं। बाद में उसे महसूस होता था कि उसने अपना कितना नुकसान कर लिया हैं। कितने लोगों से अपने रिश्ते खराब कर लिए हैं।

उसकी इस आदत को कुम्हार बहुत अच्छे से जनता था। एक बार कुम्हार घड़ा बना रहा था, तभी कुम्हार की पत्नी,अपने पति से बोली,देखो मुझे हर बात-बात में गुस्सा आ जाता हैं। जिसे आप समझ जाते हो, लेकिन कोई और नहीं समझ सकता कि यह मेरी बीमारी हैं। यही वजह हैं कि आज मेरी पड़ोस की औरत से झगड़ा हो गया। आप ही कुछ करो। मेरे इस गुस्से का इलाज कराओ।

अगली सुबह कुम्हार अपनी पत्नी को एक बहुत ही प्रसिद्ध वैद के पास लेकर गया। वैद ने कुम्हार की पत्नी की बातें बहुत ध्यान से सुनी। उसकी बातों को सुनकर वैद कुछ देर शांत होकर बैठ गया और सोचने लगा। तभी कुम्हार की पत्नी ने वैद से पूँछ,क्या यह मेरी बीमारी ठीक नहीं हो सकती? आप कुछ बोल क्यों नहीं रहे हो। वैद ने बोला ठीक इसी प्रकार की बीमारी मुझे भी थी। जिसकी दवा मैं कही से लाया था।

मैं उसी दवा के बारें में सोच रहा था कि वह दवा कहां रखी हैं। फिर वैद उठकर अपने घर में जाता हैं और कुछ समय बाद दवा की पुड़िया के साथ घर से बाहर निकलता हैं। कुम्हार की पत्नी को दवा देते हुए बोलता हैं कि यह कुछ दवाएं हैं। जिसे आपको जब भी गुस्सा आए इस दवा को मुँह में रखकर चूसना है, ध्यान रहे इसे चबाना नहीं हैं, सिर्फ चूसते रहना हैं।

एक सप्ताह बाद कुम्हार और उसकी पत्नी वैद के पास फिर से आए। कुम्हार की पत्नी वैद के चरणों में पड़ गई। वैद ने पूछा,क्या हुआ आप ऐसा क्यों कर रही हो, मुझे विस्तार से बताओ। कुम्हार की पत्नी ने बोला आप की दावा ने तो कमाल कर दिया जिसकी वजह से हमारे कई सारे रिश्ते टूटते-टूटते बच गए। आज मैं अपने पति के साथ झगड़ रही थी तभी मेरी सासू माँ आ गई। जैसे ही मैंने उनको देखा आपकी दावा खा ली और मैं बिल्कुल शांत हो गई।

इस प्रकार से मेरे रिश्ते बिगड़ते-बिगड़ते बच गए। ठीक यही घटना मेरे पड़ोसी के साथ हुई, मुझे गुस्सा आ ही रहा था कि मैंने वह दवा खाई और मेरी लड़ाई होते-होते रह गई। अब जब भी मुझे गुस्सा आता हैं या कोई मुझ पर गुस्सा करता हैं तो मैं यह गोलियां खा लेती हूँ, जिसका मुझे बहुत लाभ मिल रहा हैं। वैद ने हँसते हुए कुम्हार की पत्नी से कहा, यह दवा नहीं हैं, यह तो सिर्फ मीठी गोलियां हैं।

आपके रिश्ते ठीक हो रहे हैं जिसका कारण ये मीठी गोलियां नहीं हैं। समाधान आपका शांत रहना हैं, आपकों जब भी गुस्सा आता हैं उस समय आप शांत हो जाए, गुस्से में कोई निर्णय न लें, अपने आपको शांत होकर सोचने दें कि क्या सही हैं और क्या गलत हैं।

नैतिक सीख: गुस्से में अपने आप को शांत रखे, गुस्से में लिया गया निर्णय हमेशा नुकसान पहुंचाता हैं।

राजा और मूर्तिकार

एक बार की बार हैं, उधमपुर नामक राज्य में एक राजा रहता था। जोकि, अपनी रानी को बहुत ज्यादा प्यार करता था। राजा अपनी रानी के बिना एक पल भी नहीं रह पता था। धीरे-धीरे समय बीतता गया राजा रानी दोनों बूढ़े हो गए। लेकिन उन दोनों के बीच प्यार और बढ़ता गया।कुछ समय बाद रानी की तबीयत खराब रहने लगी। राजा अपनी रानी का इलाज बड़े से बड़े वैद से करा रहा था। लेकिन, बीमारी ठीक नहीं हो रही थी। जिसके कारण एक दिन रानी की मृत्यु हो जाती हैं। उस दिन से राजा बहुत दुखी रहने लगा।

राजा के अधिकारियों ने सोचा क्यों न एक रानी की प्रतिमा बनवाकर दरबार में लगा दी जाए जिसे देखकर राजा अपने गम को थोड़ा बहुत भुला सकें। राज्य की सबसे बड़ी नदी के किनारे से एक बड़ा और शानदार पत्थर मँगवाया गया। इसके साथ ही पूरे राज्य में यह घोषणा कर दी गई की इस पत्थर से रानी की प्रतिमा जो भी बनाएगा उसे सौ स्वर्ण मुद्राएं दी जाएंगी। राजा के दरबार में बड़े-बड़े मूर्तिकार आए और एक-एक करके किसी ने एक बार कोशिश की किसी ने दो बार कोशिश की।

लेकिन, उस पत्थर को कोई काट नहीं सका। उस राज्य के सबसे बड़े मूर्तिकार को बुलाया गया। उसने पत्थर देखा और राजा से कहा,मैं यह प्रतिमा बना दूंगा। मूर्तिकार ने अपने हथौड़े से पत्थर को लगभग सौ बार तोड़ने की कोशिश की लेकिन वह पत्थर नहीं टूटा। उस मूर्तिकार ने कहा कि इस पत्थर से मूर्ति नहीं बन पाएगी, यह बोलते हुए पत्थर को वपास कर दिया। राज्य के सभी लोग निराश हो गए। क्योंकि, वह राज्य का सबसे बड़ा मूर्तिकार था।

सभी सोचने लगे कि इस मूर्तिकार से यह मूर्ति नहीं बन पाई तो कोई और नहीं बना सकता। तभी वही पर बैठा एक छोटा मूर्तिकार राजा के सामने आया और उसने राजा से कहा, महाराज एक प्रयास मैं भी करना चाहता हूँ, अगर आप की इजाजत हो तो। राजा ने सोचा कि चलो इसको भी एक मौका दे देते हैं। उस मूर्तिकार ने जैसे ही उस प्रतिमा पर अपनी पहली हथौड़ी मारी पत्थर टूट गया और वह धीरे-धीरे रानी की प्रतिमा बनाने लगा। राजा ने सोचा, काश! राज्य के सबसे बड़े मूर्तिकार ने हार न मानी होती, एक और कोशिश की होती।

लेकिन अगर मूर्तिकार के नजरिए से सोचे तो क्या प्रयास का कोई अंत होना चाहिए या फिर अंतहीन प्रयास करते रहना चाहिए। यह बहुत ही विचारणीय विषय हैं जिस पर अपना-अपना अलग अलग मत हैं।

नैतिक शिक्षा: हमें कभी भी हार नहीं माननी चाहिए, हमे यही सोच रखनी चाहिए कि एक और प्रयास करके देखते हैं।

मूर्ख राजा और चतुर ब्राह्मण

एक दिन, राजा ने अपने दरबार में सभी ब्राह्मणों को बुलाया और कहा, मैं एक बड़ी परीक्षा लेना चाहता हूँ। जो भी इस परीक्षा में सफल होगा, उसे बड़ा इनाम मिलेगा। सभी ब्राह्मणों को शाही पुरस्कार की उम्मीद थी, लेकिन राजा की परीक्षा का तरीका बहुत अजीब था। उसने सभी ब्राह्मणों से कहा कि वे उसे कुछ ऐसा बताएं जो उसे पूरी तरह से समझ में आ जाए और उसे परेशान न करे।

चतुर ब्राह्मण ने सोचा और फिर राजा के पास गया। उसने कहा, महाराज, मैं एक ऐसी कहानी बताऊंगा जो आपको समझने में बिल्कुल मुश्किल नहीं होगी, और न ही आप परेशान होंगे। ब्राह्मण ने राजा को एक साधारण कहानी सुनाई, जिसमें कोई जटिलता नहीं थी। राजा को कहानी समझ में आई और वह खुश हुआ। चतुर ब्राह्मण ने राजा को समझाया कि कभी भी अपनी ताकत का गलत इस्तेमाल नहीं करना चाहिए और समझदारी से निर्णय लेना चाहिए।

राजा ने ब्राह्मण की बातों को सुना और महसूस किया कि वह अपनी आलस्य की वजह से राज्य की भलाई के लिए कुछ नहीं कर रहा था। इसके बाद, राजा ने अपनी आदतें बदल दी और अपने राज्य का सही तरीके से संचालन करना शुरू किया।

मूल शिक्षा: यह कहानी हमें यह सिखाती है कि आलस्य और मूर्खता से कोई भी अच्छा काम नहीं हो सकता। सच्ची समझदारी तब आती है जब हम अपने फैसलों में सोच-समझ कर कार्य करते हैं।

न्यूज इन ब्रीफ

नेशनल हेराल्ड मामला: अदालत ने ईडी के आरोपपत्र पर संज्ञान लेने को लेकर फैसला स्थगित किया

नयी दिल्ली : दिल्ली की एक अदालत ने 'नेशनल हेराल्ड' मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा दाखिल आरोपपत्र पर संज्ञान लेने को लेकर अपने फैसले को स्थगित कर दिया। अदालत के सूत्रों ने बताया कि मामले की सुनवाई को कुछ स्पष्टीकरण के लिए अब सात और आठ अगस्त के लिए सूचीबद्ध किया गया है। इससे पहले, विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने 'नेशनल हेराल्ड' मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा दाखिल आरोप-पत्र पर संज्ञान लेने को लेकर अपना आदेश 15 जुलाई को सुरक्षित रख लिया था। अदालत दो जुलाई से संज्ञान के बिंदु पर प्रवर्तन निदेशालय और आरोपियों की दलीलें दैनिक आधार पर सुन रही थी।

लोकसभा में सत्तापक्ष के सदस्यों ने 'हिंदू' कहा तो प्रियंका बोलीं- भारतीय

नयी दिल्ली : कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कुछ सदस्यों के बीच मंगलवार को उस वक्त नोकझोंक देखने को मिली जब सदन में प्रियंका ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा के दौरान पहलगाम हमले के पीड़ितों के नाम का उल्लेख कर रही थीं। सदन में प्रियंका गांधी ने जैसे ही पहलगाम हमले के 26 पीड़ितों का नाम पढ़ना शुरू किया तो सत्तापक्ष के कुछ सदस्यों ने 'हिंदू-हिंदू' कहा। इस पर कांग्रेस नेता ने कहा, ''भारतीय।'' इसके बाद प्रियंका गांधी द्वारा पीड़ितों के नाम पढ़ने पर कांग्रेस और सहयोगी दलों के सदस्यों ने 'भारतीय-भारतीय' के नारे लगाए। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सदस्यों से कहा कि वे नारे नहीं लगाएं।

नीट परीक्षा में परीक्षार्थियों का समय बर्बाद होने के मुद्दे के समाधान के लिये समिति बनाए एनटीए: अदालत

नयी दिल्ली : दिल्ली उच्च न्यायालय ने राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) को निर्देश दिया है कि वह उन परीक्षार्थियों के वास्ते एक स्थायी शिकायत निवारण समिति का गठन करे, जिन्हें नीट परीक्षा के दौरान तकनीकी समस्याओं के कारण समय का नुकसान होता है जबकि असल में उनकी कोई गलती नहीं होती है। उच्च न्यायालय ने कहा है कि संवैधानिक अदालतों से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वे हर उस अभ्यर्थी का सीसीटीवी फुटेज देखें, जिसे बिना किसी गलती के परीक्षा समय के क्षति के कारण नुकसान हुआ हो। न्यायमूर्ति विकास महाजन ने कहा कि ऐसे मामलों की जांच पारदर्शी और निष्पक्ष तरीके से विशेषज्ञों के एक समूह द्वारा की जानी चाहिए। न्यायमूर्ति महाजन ने स्थायी समिति को जांच के लिए अधिक उपयुक्त फार्मूला तैयार करने की छूट दी।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति ट्रंप की कोई बातचीत नहीं हुई : राजनाथ

नयी दिल्ली : रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को राज्यसभा में कहा कि पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले और उसके बाद भारत द्वारा चलाये गये ऑपरेशन सिंदूर के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच कोई बातचीत नहीं हुई। रक्षा मंत्री ने उच्च सदन में नेता प्रतिपक्ष की एक टिप्पणी के बाद चर्चा में हस्तक्षेप करते हुए यह बात कही। नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने सदन में ''पहलगाम में आतंकवादी हमले के जवाब में भारत के मजबूत, सफल एवं निर्णायक 'ऑपरेशन सिंदूर' पर विशेष चर्चा'' में भाग लेते हुए कहा कि रक्षा मंत्री को प्रधानमंत्री से यह पूछना चाहिए कि राष्ट्रपति ट्रंप ने ऑपरेशन सिंदूर को रुकवाने के लिए मध्यस्थता करने का जो दावा कर रहे हैं, उसका वह खंडन क्यों नहीं कर रहे? इसके जवाब में रक्षा मंत्री ने चर्चा में हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''हमारे विदेश मंत्री (एस जयशंकर) ने कल लोकसभा में स्पष्ट कर दिया था कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान और जब पहलगाम की घटना हुई तब से लेकर आज तक हमारे प्रधानमंत्री की (अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड) ट्रंप के साथ कोई बातचीत नहीं हुई है। यह बात सारे देश को स्पष्ट कर दी गयी है।''

प्रधानमंत्री में इंदिरा की आधी भी हिम्मत है तो बोलें कि ट्रंप का बयान असत्य है: राहुल

नयी दिल्ली : लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर अपनी छवि बचाने के लिए सेना के इस्तेमाल का आरोप लगाया और कहा कि अगर प्रधानमंत्री में इंदिरा गांधी का ''50 प्रतिशत भी साहस'' है तो उन्हें यह बोलना चाहिए कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का मध्यस्थता संबंधी दावा असत्य है। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा में भाग लेते हुए यह भी कहा कि प्रधानमंत्री मोदी को यह समझना चाहिए कि देशहित और सैन्यबल उनकी छवि और 'पीआर' से ऊपर हैं। राहुल गांधी ने कहा कि यदि सरकार ने चीन और पाकिस्तान

के गठजोड़ को लेकर उनकी चेतावनी पर अमल किया होता तो 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान पांच विमानों का नुकसान नहीं होता। उनका कहना था कि नुकसान के लिए भारतीय वायुसेना जिम्मेदार नहीं है, बल्कि राजनीतिक नेतृत्व जिम्मेदार है, जिसने पायलटों के ''हाथ बांध दिए थे''। नेता प्रतिपक्ष ने कहा, ''अमेरिकी राष्ट्रपति ने 29 बार कहा है कि उन्होंने युद्धविराम कराया है। अगर वह (ट्रंप) गलत हैं तो प्रधानमंत्री यहां सदन में कहें कि ट्रंप असत्य बोल रहे हैं। अगर प्रधानमंत्री में इंदिरा गांधी की तरह साहस है तो वह यहां पर कह दें कि ट्रंप ने असत्य बोला है।'' कांग्रेस नेता ने कहा, ''अगर प्रधानमंत्री में इंदिरा गांधी का 50 प्रतिशत भी साहस है तो ट्रंप के बयान को खारिज कर दें।'' नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि पहलगाम में निर्मम और बर्बर हमला किया गया, जिसकी साजिश पाकिस्तान से रची गई थी।

अमित शाह को पहलगाम में 'सुरक्षा चूक' की जिम्मेदारी लेनी चाहिए: खरगे

राज्यसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मंगलवार को कहा कि गृह मंत्री अमित शाह को पहलगाम आतंकी हमले की वजह बनी 'सुरक्षा चूक' की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने मांग की कि पहलगाम हमले के लिए जवाबदेही तय की जानी चाहिए और 'जो जिम्मेदार हैं, उन्हें पद छोड़ देना चाहिए।''

मेरी मां के आंसुओं की बात हुई, पर यह नहीं बताया गया कि ऑपरेशन सिंदूर क्यों रुका: प्रियंका गांधी

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने मंगलवार को सरकार पर तीखा हमला बोला और कहा कि गृह मंत्री अमित शाह ने इतिहास का पाठ पढ़ाया तथा उनकी मां के आंसुओं तक की बात की, लेकिन यह नहीं बताया कि जब पाकिस्तान ने घुटने टेक दिए थे तो ऑपरेशन सिंदूर को अचानक क्यों रोक दिया गया।

निसार मिशन के लिए उलटी गिनती शुरू: इसरो

श्रीहरिकोटा (आंध्र प्रदेश) : नासा-इसरो के महत्वाकांक्षी निसार मिशन के लिए 27.30 घंटे की उलटी गिनती मंगलवार को शुरू हो गई। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के सूत्रों ने यह जानकारी दी। इसरो का 'जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल' (जीएसएलवी) बुधवार शाम 5:40 बजे नासा-इसरो 'सिंथेटिक एपरचर रडार' (निसार) उपग्रह को सूर्य-समकालिक ध्रुवीय कक्षा में भेजेगा। इस मिशन की योजना अमेरिका और भारत की अंतरिक्ष एजेंसियों ने करीब दस साल पहले मिलकर बनाई थी। इस साल फरवरी में वाशिंगटन में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मुलाकात के बाद इस मिशन को और तेजी से आगे बढ़ाने का फैसला लिया गया। यह मिशन सूर्य-समकालिक ध्रुवीय कक्षा में जाने वाला जीएसएलवी रॉकेट का पहला मिशन है। यह श्रीहरिकोटा स्थित अंतरिक्ष केंद्र से 102वां प्रक्षेपण होगा। इसरो सूत्रों ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, ''27.30 घंटे की उलटी गिनती मंगलवार अपराह्न 2.10 बजे शुरू हुई। कुल 27.30 घंटे।''

'टाइम्स हायर एजुकेशन रैंकिंग' में भारत दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधित्व वाला देश बनने की ओर अग्रसर

नयी दिल्ली : 'टाइम्स हायर एजुकेशन' पत्रिका के वैश्विक मामलों के मुख्य अधिकारी फिल बैटी ने कहा है कि भारत नए रिकॉर्ड बनाएगा और 2026 की 'टाइम्स हायर एजुकेशन रैंकिंग' में अमेरिका के बाद दुनिया में दूसरा सबसे ज्यादा प्रतिनिधित्व वाला देश बन जाएगा। नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) की पांचवीं वर्षगांठ के अवसर पर एक बयान में बैटी ने यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा, इस साल आठ अक्टूबर को होने वाले 'वर्ल्ड एकेडमिक समिट' में जब 2026 की विश्व रैंकिंग जारी की जाएगी, तो भारत नया रिकॉर्ड बनाएगा और अमेरिका के बाद दुनिया में सबसे ज्यादा प्रतिनिधित्व वाला दूसरा देश बन जाएगा। इसका मतलब साफ है कि भारत के विश्वविद्यालय अब दुनिया के शीर्ष अनुसंधान संस्थानों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं। बैटी ने कहा, ''लेकिन अगर हम एक अलग तरह के पैमानों से देखें - जैसे समाज और अर्थव्यवस्था पर इन विश्वविद्यालयों के असर को ध्यान में रखते हुए तो भारत के विश्वविद्यालय अब वाकई में चमकने लगे हैं। 'टाइम्स हायर एजुकेशन इम्पैक्ट रैंकिंग' को 2026 के लिए 'सस्टेनेबिलिटी इम्पैक्ट रेटिंग' के रूप में पुनः जारी किया गया है। इसमें संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) में योगदान के आधार पर विश्वविद्यालयों के सामाजिक और आर्थिक प्रभाव का आकलन किया जाता है। बैटी ने कहा कि भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इतनी अधिक आगे की सोच वाली और साहसिक थी कि जब इसे पांच साल पहले शुरू किया गया था, तो कई लोगों ने कहा था कि यह बहुत ज़्यादा महत्वाकांक्षी है और सफल नहीं हो पाएगी।

हमें बाहर से दुश्मन नहीं चाहिए, अंदर ही दुश्मन बैठा है : संबित पात्रा

नयी दिल्ली : भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद संबित पात्रा ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर पाकिस्तान का विमर्श आगे बढ़ाने का मंगलवार को आरोप लगाया और कहा, ''हमें बाहर से दुश्मन नहीं चाहिए, अंदर ही दुश्मन बैठा है''। पात्रा ने सदन में 'ऑपरेशन सिंदूर' पर विशेष चर्चा में हिस्सा लेते हुए कहा कि उरी हमले के बाद सर्जिकल स्ट्राइक, पुलवामा आतंकी वारदात के बाद बालाकोट हवाई हमला और पहलगाम में आतंकी हमले के बाद 'ऑपरेशन सिंदूर' हुआ, लेकिन अब पाकिस्तान की ओर से कोई हमला होगा तो 'तांडव' होगा। पात्रा ने कहा कि राहुल गांधी ने 'ऑपरेशन सिंदूर'

में सभी के सहयोग का दावा किया, लेकिन खुद नेता प्रतिपक्ष एवं उनकी पार्टी पाकिस्तान के विमर्श को आगे बढ़ाते हैं। उन्होंने पूछा, ''ऐसा क्यों होता है कि भारत के टेलीविजन पर (प्रधानमंत्री नरेन्द्र) मोदी दिखाई देते हैं, जबकि पाकिस्तान के टेलीविजन में राहुल गांधी दिखते हैं?'' भाजपा के ही डॉ. संजय जायसवाल ने सेना के कदम की जानकारी पाकिस्तान के डीजीएमओ को दिये जाने के बारे में राहुल गांधी के एक सवाल के बारे में कहा कि नेता प्रतिपक्ष को अपने पिता राजीव गांधी के बारे में पढ़ना चाहिए था, जिन्होंने जिया-उल-हक से समझौता किया था कि दोनों देशों को कोई भी सैन्य कार्रवाई से पहले डीजीएमओ को बताना होगा। उन्होंने कांग्रेस के कार्यकाल में किये गये विभिन्न हमलों का उल्लेख करते हुए कहा कि हर हमले के बाद तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने केवल 'कड़ी निंदा' की, इसके अलावा कुछ नहीं किया।

आईआईटी इंदौर बना रहा 'स्मार्ट ग्लास' : गर्मियों में ठंडी और सर्दियों में गर्म रहेंगी इमारतें

इंदौर (मध्यप्रदेश) : इंदौर के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) में विशेष 'पोरस ऑर्गेनिक पॉलीमर' (पीओपी) की मदद से विकसित किया जा रहा 'स्मार्ट ग्लास' खिड़कियों के इस्तेमाल का तरीका बदल कर पर्यावरण हितैषी इमारतों के निर्माण में मदद कर सकता है। अधिकारियों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि आईआईटी इंदौर के रसायन विज्ञान विभाग के अनुसंधानकर्ता डॉ. सायंतन सरकार 'ट्रांसलेशनल रिसर्च फैलोशिप' (टीआरएफ) के तहत बिजली से चलने वाला 'स्मार्ट ग्लास' बनाने की परियोजना पर काम कर रहे हैं। इस परियोजना को रसायन विज्ञान विभाग के प्रोफेसर सुमन मुखोपाध्याय और भौतिकी विभाग के प्रोफेसर राजेश कुमार के मार्गदर्शन में आगे बढ़ाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह 'स्मार्ट ग्लास' नये विकसित 'वायलोजन' पर आधारित पीओपी की मदद से तैयार किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि 'स्मार्ट ग्लास' अपने माध्यम से गुजरने वाले सूर्य के प्रकाश और ऊष्मा की मात्रा नियंत्रित कर सकता है। अधिकारियों ने बताया, ''सबसे खास बात है कि 'स्मार्ट ग्लास' बिजली के प्रति त्वरित प्रतिक्रिया के चलते अपना रंग और पारदर्शिता का स्तर बदल सकता है। नतीजतन किसी कमरे में सूर्य के प्रकाश और ऊष्मा के प्रवेश की तीव्रता को जरूरत के मुताबिक नियंत्रित किया जा सकता है। इससे किसी इमारत को गर्मियों में ठंडी और सर्दियों में गर्म रखा जा सकता है।''

पाक गोलाबारी में माता-पिता को खोने वाले 22 बच्चों की शिक्षा का खर्च उठाएंगे राहुल गांधी

राजौरी/जम्मू : कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर पाकिस्तान की ओर से हुई गोलाबारी के दौरान अपने माता-पिता में से एक या दोनों को खो चुके 22 बच्चों की शिक्षा का खर्च उठाएंगे। पार्टी के एक नेता ने यह जानकारी दी। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तारिक हमीद कर्रा ने विधानसभा चुनाव में अपने गठबंधन सहयोगी नेशनल कॉन्फ्रेंस (नेकां) के साथ किसी भी तरह के मतभेद होने की बात से इंकार किया है, लेकिन यह भी कहा कि उनकी पार्टी पिछले नौ महीनों से

सत्तारूढ़ दल के साथ समन्वय समिति के गठन का इंतजार कर रही है। राजौरी के तीन दिवसीय दौरे पर पहुंचे कर्रा ने सोमवार देर रात संवाददाताओं को बताया, ''पुंछ और राजौरी में (सात से 10 मई के बीच) पाकिस्तानी की ओर से हुई गोलाबारी में बड़ी संख्या में नागरिकों की जान गई और संपत्तियों को नुकसान पहुंचा। इन हमलों के बाद राहुल गांधी ने पुंछ का दौरा किया था और शोक संतप्त परिवारों से मुलाकात की थी। उन्होंने हमसे कहा कि स्कूल के ऐसे बच्चों की सूची तैयार करें, जिन्होंने अपने एक या दोनों माता-पिता, खासकर परिवार के कमाने वाले सदस्य को खो दिया है। इसके अनुसार हमने उनके पास सूची जमा कर दी। कर्रा ने कहा कि पार्टी के पास सिर्फ पुंछ जिले में ऐसे 22 बच्चों की सूची है तथा मेरी तीन दिवसीय यात्रा के अंत में इस सूची में ऐसे और बच्चों को शामिल किया जा सकता है।

मेडिकल कॉलेजों की संख्या 11 साल में बढ़कर 780 हुई : सरकार

नयी दिल्ली : केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे पी नड्डा ने मंगलवार को कहा कि देश भर में 2014 से अब तक मेडिकल कॉलेजों की संख्या 387 से बढ़कर 780 हो गई है, वहीं इस क्षेत्र में स्नातक सीटें 51,348 से बढ़कर 1,15,900 और स्नातकोत्तर सीटें 31,185 से बढ़कर 74,306 हो गई हैं। उन्होंने एक प्रश्न के लिखित उत्तर में राज्यसभा को यह जानकारी दी। नड्डा ने कहा कि सरकार ने मेडिकल कॉलेजों, स्नातक (यूजी) और स्नातकोत्तर (पीजी) सीटों की संख्या में वृद्धि की है। नड्डा ने कहा कि यह मानते हुए कि एलोपैथिक और आयुष दोनों प्रणालियों में 80 प्रतिशत पंजीकृत चिकित्सक उपलब्ध हैं, देश में डॉक्टर-जनसंख्या अनुपात 1:811 होने का अनुमान है।

उफनती तीस्ता नदी से एनएच-10 हुआ जलमग्न, सिक्किम और प. बंगाल के कुछ हिस्सों में यातायात प्रभावित

गंगटोक : तीस्ता नदी के उफान पर होने के कारण 29 माइल क्षेत्र पर तटबंध टूट गया और यहां की जीवन रेखा माने जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग-10 के जलमग्न हो जाने से सिक्किम समेत पश्चिम बंगाल के कलिम्पोंग और दार्जिलिंग जिलों के कुछ हिस्सों में वाहनों की आवाजाही प्रभावित हो गई। अधिकारियों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि कलिम्पोंग के तारखोला में भूस्खलन के कारण पश्चिम बंगाल के सेवोके और सिक्किम के रंगपो के बीच यातायात बाधित हो गया। अधिकारियों ने बताया कि इसके अलावा सिंगताम और रंगपो के बीच बरदांग में हुए भारी भूस्खलन के कारण राष्ट्रीय राजमार्ग-10 अवरुद्ध हो

गया है। उन्होंने बताया कि रविवार से शुरू हुई मूसलाधार बारिश के कारण सड़क से मलबा हटाने का कार्य प्रभावित है और इसमें समय लगेगा। उन्होंने बताया कि भूस्खलन के कारण गंगटोक जिले में सिंगताम-डिकचू मार्ग भी अवरुद्ध हो गया है जबकि तिनटेक खोला और कोकाले से भी भूस्खलन से जुड़ी कई खबरें हैं। अधिकारियों ने बताया कि भूस्खलन के कारण नामथांग से नामची जाने वाली सड़क भी फोंगला में अवरुद्ध हो गई है। पाकयोंग जिले के दलपचंद में चागेलखा जाने वाले टर्निंग पॉइंट क्षेत्र के पास हुए भारी भूस्खलन से सड़क पूरी तरह अवरुद्ध हो गई है।

किसानों की आय बढ़ाने का प्रयास निरंतर जारी, मोदी है तो मुमकिन है: चौहान

नयी दिल्ली : कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मंगलवार को लोकसभा में कहा कि केंद्र सरकार किसानों की आय बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है क्योंकि ''मोदी है तो मुमकिन है।'' उन्होंने सदन में प्रश्नकाल के दौरान कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर और कुछ अन्य सदस्यों के पूरक प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा कि नरेन्द्र मोदी किसान हितैषी प्रधानमंत्री हैं। चौहान ने कहा, ''प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में किसानों की आय बढ़ाने का अभियान निरंतर जारी है। हमने छह उपाय किए हैं। उत्पादन बढ़ाने का फैसला किया गया, यह प्रयास किया गया कि लागत कम हो, कृषि का विविधीकरण हो, फसल के नुकसान की भरपाई हो। अलग-अलग कई प्रयत्न किए गए हैं।'' उन्होंने कहा, ''कई किसानों की आय दोगुनी से ज्यादा बढ़ी है। हमने कई उपाय किए हैं।'' कृषि मंत्री ने कहा, ''अब कृषि का बजट 1.27 लाख करोड़ रुपये का है। 10 करोड़ किसानों को किसान सम्मान निधि दी जा रही है। मोदी है तो मुमकिन है।'' उन्होंने यह भी कहा, ''मुझे यह कहते हुए गर्व है कि फसल बीमा योजना के तहत इस सरकार ने 1.83 लाख करोड़ रुपये के दावों की राशि किसानों के खाते में भेजी है।''

सरकार हुर्रियत से कभी बात नहीं करेगी, हम घाटी के युवाओं से बात करेंगे: अमित शाह

नयी दिल्ली : केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने मंगलवार को अलगाववादी संगठन हुर्रियत कॉन्फ्रेंस को 'आतंकवादी संगठनों का मुखौटा' करार दिया और कहा कि मोदी सरकार उसके साथ कभी बातचीत नहीं करेगी। शाह ने लोकसभा में ऑपरेशन सिंदूर पर विशेष चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि एक समय था जब हुर्रियत कॉन्फ्रेंस के नेताओं के साथ 'वीआईपी' जैसा व्यवहार होता था और उनके लिए 'रेड कार्पेट' बिछाया जाता था। गृह मंत्री ने कहा कि हुर्रियत नेताओं के साथ सरकार बातचीत करती थी। उन्होंने कहा, ''मनमोहन सिंह सरकार के प्रतिनिधि उनके साथ बातचीत करते

थे। हमने हुर्रियत के सभी घटकों पर प्रतिबंध लगा दिया और सब सलाखों के पीछे हैं। हम हुर्रियत के साथ बात नहीं करना चाहते।'' शाह ने कहा, ''मैं नरेन्द्र मोदी सरकार की नीति दोहराना चाहता हूं। हुर्रियत आतंकवादी संगठनों का एक मुखौटा है। हम उनसे बातचीत नहीं करेंगे। हम घाटी के युवाओं से बातचीत करेंगे।'' साल 1993 में गठित हुर्रियत, जम्मू कश्मीर स्थित कई अलगाववादी संगठनों का एक समूह है। इसे अपने विचारों, गतिविधियों और राजनीतिक बयानों के कारण पाकिस्तान समर्थक समूह माना जाता रहा है।

आतंकवादियों का एक-एक कर सफाया किया जा रहा : जम्मू-कश्मीर डीजीपी

जम्मू : जम्मू-कश्मीर के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) नलिन प्रभात ने मंगलवार को कहा कि पूरे क्षेत्र में जारी विभिन्न अभियानों के तहत आतंकवादियों का एक-एक करके सफाया किया जा रहा है। प्रभात ने जम्मू में एक कार्यक्रम के दौरान संवाददाताओं से कहा, वे (आतंकवादी) पिछले चार वर्षों से यहां सक्रिय हैं। अभियान लगातार जारी हैं। उनका एक-एक करके सफाया किया जा रहा है। डीजीपी क्षेत्र में जारी अभियानों और मारे गए आतंकवादियों की संख्या के बारे में पूछे गए सवालों का जवाब दे रहे थे। जम्मू-कश्मीर में मौजूदा समय में सक्रिय आतंकवादियों की संख्या के बारे में पूछे जाने पर प्रभात ने कहा कि इन आंकड़ों का खुलासा सार्वजनिक तौर पर नहीं किया जा सकता। उन्होंने 'ऑपरेशन महादेव' से जुड़े सवाल का सीधा जवाब देने से भी परहेज किया और कहा कि देश के शीर्ष नेता पहले ही इस मामले पर बोल चुके हैं। सेना के विशिष्ट पैरा कमांडो ने सोमवार को श्रीनगर के बाहरी इलाके में एक वन क्षेत्र में मुठभेड़ में पहलगाम आतंकवादी हमले के कथित मास्टरमाइंड और उसके दो सहयोगियों को मार गिराया था। सुलेमान उर्फ आसिफ, जिसे 22 अप्रैल के पहलगाम हमले का मास्टरमाइंड माना जाता है, सुरक्षा बलों की ओर से 'ऑपरेशन महादेव' के नाम से चलाए गए अभियान के दौरान मारा गया था।

भारी बारिश से दिल्ली में यातायात व्यवस्था चरमरा गई, कई इलाकों में जलभराव

नयी दिल्ली : दिल्ली में मंगलवार को भारी बारिश के बाद कई इलाकों में व्यापक जलभराव के कारण यातायात बाधित हो गया, जिससे यात्रियों को जलमग्न सड़कों और गलियों से होकर गुजरना पड़ा। शहर के विभिन्न हिस्सों से आई तस्वीरों में जाम लगे चौराहों पर वाहनों की लंबी कतारें दिखाई दे रही थीं। कई इलाकों में पानी घुटनों तक पहुंच गया था, जिससे कार और दोपहिया वाहन आंशिक रूप से डूब गए। आईटीओ, महरौली-गुरुग्राम रोड, दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे, नेहरू प्लेस, कैलाश कॉलोनी रोड, धौला कुआं, नारायणा, पटेल नगर, विजय चौक, जंगपुरा, आरके पुरम, लाजपत नगर,

तालकटोरा रोड, आजाद मार्केट अंडरपास और जखीरा अंडरपास जैसे कई इलाकों में यातायात जाम रहा। इसके अलावा कनॉट प्लेस, सदर बाजार और चांदनी चौक सहित अन्य स्थानों पर जलभराव हुआ जिससे दुकानदारों पर असर पड़ा और व्यापारिक गतिविधियां प्रभावित हुईं। फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेड्स एसोसिएशन ने बताया कि कुतुब रोड, तेलीवाड़ा, क्रॉकरी मार्केट, टोलियावाली गली, रुई मंडी, गांधी मार्केट और पान मंडी जैसे इलाकों में तीन से चार फुट तक पानी जमा हो जाने से स्थिति गंभीर हो गई है, जिससे पैदल निकले लोगों के लिए भी चलना मुश्किल हो गया है। एसोसिएशन ने दावा किया, बारिश होते ही सदर बाज़ार में कई घंटों के लिए बिजली गुल हो जाती है। शॉर्ट सर्किट या करंट लगने के खतरे को रोकने के लिए बिजली काट दी गई थी क्योंकि कई दुकानों में पानी घुस गया था। इस बीच, कनॉट प्लेस स्थित नई दिल्ली ट्रेडर्स एसोसिएशन (एनडीटीए) ने वाणिज्यिक परिसर के कई ब्लॉकों में जलभराव के वीडियो साझा किए।

'ऑपरेशन सिंदूर' पर चर्चा से बाहर रखने पर मनीष तिवारी बोले- 'भारत की बात सुनाता हूं'

नयी दिल्ली : कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी ने 'ऑपरेशन सिंदूर' पर चर्चा के दौरान उन्हें अपनी पार्टी द्वारा बोलने का अवसर नहीं दिये जाने के संबंध में मीडिया में आयी एक खबर को 'एक्स' पर मंगलवार को साझा करते हुए फिल्म 'पूरब और पश्चिम' के लोकप्रिय गीत ''भारत का रहने वाला हूं, भारत की बात सुनाता हूं'' का जिक्र किया। इस बात को लेकर काफी अटकलें लगाई जा रही थीं कि 'ऑपरेशन सिंदूर' पर भारत का रुख दुनिया के सामने रखने के लिए विदेश भेजे गए बहुदलीय प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा रहे कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी और शशि थरूर लोकसभा में पहलगाम हमले और पाकिस्तान पर भारत की जवाबी कार्रवाई को लेकर जारी चर्चा बहस के दौरान अपनी पार्टी की तरफ से

बोलेंगे या नहीं। मनीष तिवारी ने 'एक्स' पर मीडिया की एक खबर का 'स्क्रीनशॉट' साझा किया, जिसका शीर्षक था-''सरकार के पक्ष में बोले': 'ऑपरेशन सिंदूर' पर चर्चा के दौरान कांग्रेस ने शशि थरूर और मनीष तिवारी को बोलने से क्यों रोका?'' खबर में कहा गया कि 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद भारत का पक्ष दुनिया के सामने रखने के लिए केंद्र सरकार द्वारा जिन नेताओं को विदेश भेजा गया था, उनमें से किसी को भी कांग्रेस पार्टी की ओर से लोकसभा में बोलने वालों की सूची में जगह नहीं दी गई। खबर के 'स्क्रीनशॉट' और तिरंगे के सामने खींची गई अपनी एक तस्वीर के साथ मनीष तिवारी ने 'एक्स' पर पोस्ट कर कहा, ''है प्रीत जहां की रीत सदा, मैं गीत वहां के गाता हूं, भारत का रहने वाला हूं, भारत की बात सुनाता हूं - जय हिंद।''

गौतम गंभीर और ओवल के क्यूरेटर के बीच तीखी बहस

लंदन : भारत और इंग्लैंड के बीच के मौजूदा श्रृंखला के निर्णायक पांचवें टेस्ट से दो दिन पहले भारत के अभ्यास सत्र में एक अजीबोगरीब घटना देखने को मिली जब मुख्य कोच गौतम गंभीर और 'द ओवल' के मुख्य क्यूरेटर ली फोर्टिस के बीच तीखी नोकझोंक हो गई। यह बहस तब शुरू हुई जब फोर्टिस ने मेहमान टीम के सहयोगी स्टाफ को पिच से 2.5 मीटर दूर खड़े रहने को कहा। गंभीर को इस मैदानकर्मियों की ओर ऊंगली उठाकर यह कहते सुना गया ,'तुम नहीं बताओगे कि हमें क्या करना है, तुम सिर्फ एक मैदानकर्मी हो और उससे ज्यादा कुछ नहीं।' गंभीर की इस प्रतिक्रिया पर फोर्टिस ने कहा,'मुझे इस घटना की शिकायत दर्ज करनी हागी। भारत के 10 खिलाड़ियों ने इस अभ्यास सत्र में हिस्सा लिया था जिसमें कप्तान शुभमन गिल शामिल नहीं थे। गंभीर के द्वारा फोर्टिस पर भड़ास निकालने से पहले मैदान पर टीम का अभ्यास सत्र सामान्य रूप से चल रहा था। फोर्टिस पिछले तीन साल से इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के सर्वश्रेष्ठ 'मल्टी-डे' पिचों का पुरस्कार जीतते रहे है। इसके बावजूद समझा जाता है कि तुनक मिजाजी के कारण उनके साथ काम करना आसान नहीं है। भारत के बल्लेबाजी कोच सितांशु कोटक ने मुख्य क्यूरेटर को गंभीर से दूर ले जाकर इस बहस को शांत करने की कोशिश की। कोटक ने कहा, 'जब हम पिच को परख रहे थे तभी मैदान के एक कर्मचारी ने आकर कहा कि (हमें) विकेट से 2.5 मीटर दूर खड़ा होना है और 'रस्सी के बाहर से विकेट को देखना है। भारतीय टीम के सदस्यों ने स्प-इक्स (खिलाड़ियों के द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले कील वाले जूते) नहीं पहने थे, ऐसे में पिच को कोई खतरा नहीं था। मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा।' उन्होंने कहा, 'मुझे एक भारतीय खिलाड़ी ने कहा था कि इस क्यूरेटर के साथ काम करना आसान नहीं है। किसी चीज से लगाव होना अच्छा है, लेकिन बहुत ज्यादा लगाव होना अच्छा नहीं है। हमने जॉगर्स (सामान्य जूते) पहने थे, स्पाइक्स नहीं, इसलिए कोई खतरा नहीं था।'

आस्ट्रेलिया ने आखिरी टी जीतकर वेस्टइंडीज का सूपड़ा साफ किया

सेंट किट्स : आस्ट्रेलिया ने पांचवां और आखिरी टी20 मैच तीन विकेट से जीतकर वेस्टइंडीज दौरे का अंत 8 . 0 से जीत के साथ किया। इससे पहले आस्ट्रेलिया ने टेस्ट श्रृंखला 3 . 0 से जीती और फिर पहले चार टी20 मैच भी अपने नाम किये। लगातार आठवीं बार टॉस जीतने के बाद आस्ट्रेलिया ने वेस्टइंडीज को बल्लेबाजी के लिये भेजा और दो गेंद बाकी रहते 170 रन पर आउट किया। शिमरोन हेटमायेर ने 31 गेंद में 52 और शेरफान रदरफोर्ड ने 17 गेंद में 35 रन बनाये। आस्ट्रेलिया के लिये बेन डारशुइस ने 41 रन देकर तीन विकेट लिये जबकि नाथन एलिस को दो विकेट मिले। आस्ट्रेलिया ने 18 गेंद बाकी रहते सात विकेट पर 173 रन बना लिये। मिचेल ओवन ने 17 गेंद में 37 रन बनाये और कैमरन ग्रीन ने 18 गेंद में 32 रन की पारी खेली। दोनों ने पांचवें विकेट के लिये 63 रन जोड़े। आरोन हार्डी 28 रन बनाकर नाबाद रहे।

भारत महिला एशियाई कप में जापान, वियतनाम और चीनी ताइपे के साथ ग्रुप सी में

नयी दिल्ली : भारत को अगले साल ऑस्ट्रेलिया में होने वाले एएफसी महिला एशियाई कप फुटबॉल टूर्नामेंट के ग्रुप सी में जापान, पूर्व चैंपियन चीनी ताइपे और वियतनाम के साथ रखा गया है। एक से 21 मार्च, 2026 तक चलने वाले 12 टीमों के इस टूर्नामेंट के लिए ड्रॉ मंगलवार को सिडनी टाउन हॉल में आयोजित किये गए, जिसमें भारतीय मिडफील्डर संगीता बासफोर तीन ड्रॉ सहायकों में से एक थीं। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली 12 टीमों को चार-चार टीमों के तीन ग्रुप में बांटा गया है। भारतीय टीम अपने अभियान की शुरुआत चार मार्च, 2026 को पर्थ रेक्टेंगुलर स्टेडियम में वियतनाम के खिलाफ मैच से करेगी। इसके बाद भारत सात मार्च को इसी मैदान पर जापान से और फिर 10 मार्च को वेस्टर्न सिडनी स्टेडियम में चीनी ताइपे से भिड़ेगा। प्रत्येक ग्रुप से शीर्ष दो टीमें और तीसरे स्थान पर रहने वाली दो सर्वश्रेष्ठ टीमें क्वार्टर फ़ाइनल में जगह बनाएंगी। सेमीफाइनल में पहुंचने वाली चारों टीम को ब्राजील में 2027 में होने वाले महिला विश्व कप में जगह मिलेगी, जबकि क्वार्टर फ़ाइनल में हारने वाली टीमें प्लेऑफ़ में पहुंचेंगी, जहां इस वैश्विक प्रतियोगिता में जगह बनाने के लिए दो और स्थान दांव पर होंगे। जापान ने 2011 में महिला विश्व कप जीता था। वह अभी विश्व रैंकिंग में सातवें स्थान पर है जो एशियाई टीमों में सर्वश्रेष्ठ है। वियतनाम की विश्व रैंकिंग 37 जबकि चीनी ताइपे की 42 है। भारत वर्तमान में विश्व में 70वें स्थान पर है और इस तरह से वह ग्रुप में सबसे कम रैंकिंग वाली टीम है। भारत के मुख्य कोच क्रिस्पिन छेत्री ने अखिल भारतीय फुटबाल महासंघ (एआईएफएफ) की विज्ञप्ति में कहा, 'मुझे लगता है कि हमारा ग्रुप काफी दिलचस्प है, लेकिन साथ ही काफी पेचीदा भी है। जापान एशिया की सर्वश्रेष्ठ टीम है। वियतनाम और चीनी ताइपे अच्छी टीमें हैं। हम उनके साथ प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं तथा अनुकूल परिणाम की उम्मीद कर सकते हैं।'

जमशेदपुर एफसी ने डूरंड कप में लगातार दूसरी जीत दर्ज की

जमशेदपुर : सनन मोहम्मद के दूसरे हाफ में किये गये गोल की मदद से जमशेदपुर एफसी ने अपना विजय अभियान जारी रखते हुए मंगलवार को यहां 134वें डूरंड कप फुटबॉल टूर्नामेंट के ग्रुप सी में भारतीय सेना पर 1-0 से जीत दर्ज की। जमशेदपुर एफसी की यह लगातार दूसरी जीत है जिससे उसकी टीम दो मैच में छह अंकों के साथ ग्रुप में शीर्ष पर पहुंच गई है और अब नॉकआउट चरण में जगह बनाने के करीब है। भारतीय सेना ने खेल के पहले हाफ में दबदबा बनाए रखा और कुछ अच्छे मौके बनाए लेकिन टीम इसका फायदा नहीं उठा सकी। जमशेदपुर ने मैच का एकमात्र गोल 52वें मिनट में किया जब सनन मोहम्मद ने सयाद बिन अब्दुल कादिर को छकाते हुए गेंद को गोल पोस्ट के अंदर पहुंचा दिया। जमशेदपुर ने इसके बाद खेल पर नियंत्रण बनाए रखा और भारतीय सेना को वापसी का कोई मौका नहीं दिया।

उत्तर प्रदेश के 500 से अधिक खिलाड़ियों को दी गयी सरकारी नौकरी: मुख्यमंत्री

गोरखपुर (उप्र) : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को कहा कि पदक विजेता खिलाड़ियों को सरकारी नौकरियां देने में उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी बनकर उभरा है। उन्होंने कहा कि भारत और उत्तर प्रदेश का नाम रोशन करने वाले 500 से ज़्यादा पदक विजेता खिलाड़ियों को सरकारी नौकरी दी जा चुकी है। मुख्यमंत्री ने नाग पंचमी के अवसर पर गोरखनाथ मंदिर में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कुश्ती चैंपियनशिप के समापन समारोह को संबोधित करते हुए इस बात पर जोर दिया कि पिछले आठ वर्षों में उत्तर प्रदेश ने बुनियादी स्तर से लेकर गांवों में खेल के मैदानों, विकास खंड स्तर पर मिनी स्टेडियमों और जिलों में पूर्ण विकसित स्टेडियमों के निर्माण सहित खेल के बुनियादी ढांचे में उल्लेखनीय विकास किया है। उन्होंने कहा कि सरकार ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों के लिए आकर्षक नकद पुरस्कार और रोजगार के अवसर भी शुरू किए हैं। सरकार द्वारा जारी एक बयान के मुताबिक मुख्यमंत्री ने खिलाड़ियों के लिए उठाये गये कदमों का जिक्र करते हुए कहा, 'अब तक ओलंपिक, एशियाई खेल, राष्ट्रमंडल खेल और विश्व चैंपियनशिप जैसे आयोजनों में भारत और उत्तर प्रदेश का नाम रोशन करने वाले 500 से ज़्यादा पदक विजेता खिलाड़ियों को सरकारी नौकरी दी जा चुकी है। इस मामले में उत्तर प्रदेश देश में अग्रणी है।'

मंधाना की जगह महिला वनडे में नंबर एक बल्लेबाज बनी इंग्लैंड की स्किवेर ब्रंट

दुबई : इंग्लैंड की कप्तान नेट स्किवेर ब्रंट ने भारत की स्मृति मंधाना को पछाड़कर आईसीसी महिला वनडे खिलाड़ियों की रैंकिंग में शीर्ष स्थान हासिल कर लिया। भारत के खिलाफ हाल ही में श्रृंखला में 160 रन बनाने वाली स्किवेर ब्रंट 2023 में रैंकिंग में शीर्ष पर रही थी। मंधाना ने इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों में 115 रन बनाये थे लेकिन वह रैंकिंग में एक पायदान नीचे आ गई। स्किवेर ब्रंट के अब 731 अंक हैं जबकि मंधाना के 728 अंक हैं। भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर 21वें से 11वें नंबर पर खिसक गई जबकि मध्यक्रम की बल्लेबाज जेमिमा रौड्रिग्स 15वें से 13वें स्थान पर आ गई।

बुमराह अपने कार्यभार प्रबंधन के अनुसार गेंदबाजी करने के लिए फिट हैं: कोटक

लंदन : भारत के बल्लेबाजी कोच सीतांशु कोटक ने जसप्रीत बुमराह की इंग्लैंड के खिलाफ पांचवें और अंतिम टेस्ट मैच में खेलने की संभावना से इनकार नहीं किया और मंगलवार को यहां कहा कि यह तेज गेंदबाज अपने कार्यभार प्रबंधन के अनुसार गेंदबाजी करने के लिए फिट है। चोटों से जूझने वाले तेज गेंदबाज बुमराह को कार्यभार प्रबंधन के तहत दौरे पर तीन टेस्ट मैचों के लिए चुना गया था, लेकिन श्रृंखला अब नाजुक मोड़ पर पहुंच चुकी है और परिस्थितियों को देखते हुए वह 31 जुलाई से शुरू होने वाले पांचवें टेस्ट मैच खेल सकते हैं।

सात्विक . चिराग बीडब्ल्यूएफ रैंकिंग में शीर्ष दस में लौटे

नयी दिल्ली : एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता सात्विक साइराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी बीडब्ल्यूएफ पुरूष युगल विश्व रैंकिंग में फिर शीर्ष दस में पहुंच गए। दोनों पिछले सप्ताह चीन ओपन में सेमीफाइनल तक पहुंचे थे जिससे उन्हें तीन पायदान का फायदा मिला। दुनिया की पूर्व नंबर एक जोड़ी और फिलहाल दसवें नंबर पर काबिज चिराग और सात्विक को मलेशिया के आरोन चिया और सोह वूइ यिक ने 21 . 13, 21 . 17 से हराया। इससे पहले वे सिंगापुर ओपन और इंडिया ओपन में भी सेमीफाइनल तक पहुंचे थे। पुरूष एकल में भारत के शीर्ष खिलाड़ी लक्ष्य सेन 54442 अंक के साथ 17वें स्थान पर पहुंच गए जबकि एच एस प्रणय दो पायदान चढकर 33वें स्थान पर हैं। महिला एकल में उन्नति हुड्डा कैरियर की सर्वश्रेष्ठ 31वीं रैंकिंग पर पहुंच गई जिन्होंने पिछले सप्ताह दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पी वी सिंधू को हराया था।

समाज्ञा

व्यापार

डीजीसीए ऑडिट में एयर इंडिया से संबंधित लगभग 100 उल्लंघनों का उल्लेख

मुंबई : विमानन सुरक्षा नियामक नागर विमानन महानिदेशालय को टाटा समूह के स्वामित्व वाली एयर इंडिया से संबंधित लगभग 100 उल्लंघनों और निष्कर्षों का पता चला है। सूत्रों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। उक्त उल्लंघन और निष्कर्ष प्रशिक्षण, चालक दल के आराम और कार्य अवधि के मानदंडों, तथा हवाई क्षेत्र योग्यता सहित अन्य मुद्दों से संबंधित हैं। उन्होंने बताया कि इनमें से सात स्तर-1 के उल्लंघन हैं, जिन्हें गंभीर सुरक्षा जोखिम माना जाता है और एयरलाइन को इन पर तत्काल सुधारात्मक कार्रवाई करने की जरूरत होती है। एयर इंडिया ने एक बयान में निष्कर्षों के मिलने की पुष्टि की और कहा कि वह निर्धारित समयसीमा के भीतर डीजीसीए को अपना जवाब देगी। ऑडिट के निष्कर्ष ऐसे समय में आए हैं, जब 12 जून को हुए विमान हादसे के बाद नियामक एयरलाइन की गहन जांच कर रही है। एयर इंडिया ने बयान में कहा, 'सभी एयरलाइन कंपनियां प्रक्रियाओं के परीक्षण और निरंतर सुदृढ़ीकरण करने के लिए नियमित ऑडिट से गुजरती हैं। एयर इंडिया का वार्षिक डीजीसीए ऑडिट जुलाई में हुआ था, जिसके दौरान लगातार सुधार की भावना से ऑडिट करने वालों के साथ पूरी पारदर्शिता बरती गई थी।' एयरलाइन ने कहा, ''हमें निष्कर्षों के मिलने की सूचना है और हम तय समयसीमा के भीतर नियामक को अपना जवाब देंगे। साथ ही किए गए सुधारात्मक कार्यों का ब्योरा भी देंगे। एयर इंडिया अपने यात्रियों और कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।'

भारत-ब्रिटेन व्यापार समझौता घरेलू चिकित्सा उपकरणों के लिए बाजार पहुंच को आसान बनाएगा

नयी दिल्ली : भारत-ब्रिटेन व्यापार समझौते से घरेलू नियामकीय एजेंसियों द्वारा प्रमाणित चिकित्सा उपकरणों के लिए ब्रिटिश बाजार में पहुंच आसान होगी। एक अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ऐसे उत्पादों के प्रवेश को आसान बनाने के लिए एक पारस्परिक मान्यता समझौते की रूपरेखा इसमें शामिल की गई है। यह रूपरेखा भारतीय निर्माताओं को चीन, ब्राजील और वियतनाम जैसे अपने वैश्विक प्रतिस्पर्धियों के मुकाबले ब्रिटेन में बाजार हिस्सेदारी बढ़ाने में मदद करेगी। अधिकारी ने कहा, ''मुक्त व्यापार समझौते में एक पारस्परिक मान्यता समझौते की रूपरेखा शामिल है, जो केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएस-सीओ) या भारतीय चिकित्सा उपकरण प्रमाणन (आईसीएमईडी) द्वारा प्रमाणित चिकित्सा उपकरणों को ब्रिटेन के बाजार में अधिक स्वतंत्र रूप से प्रवेश की अनुमति देती है।'' चिकित्सा उपकरणों का ब्रिटेन को शून्य शुल्क पर निर्यात किया जाएगा, जबकि इस समय शुल्क सीमा 2-6 प्रतिशत के बीच है। इससे सर्जिकल और नैदानिक उपकरणों के भारतीय विनिर्माताओं को लाभ होगा।

तीन दिन की गिरावट से उबरा शेयर बाजार, सेंसेक्स 447 अंक चढ़ा

मुंबई : रिलायंस इंडस्ट्रीज और एचडीएफसी बैंक जैसी बड़ी कंपनियों के शेयरों में तेजी के दम पर स्थानीय शेयर बाजार मंगलवार को तीन दिन की गिरावट से उबरने में सफल रहा। सेंसेक्स में 447 अंक की तेजी रही, जबकि निफ्टी 140 अंक चढ़ गया। बीएसई का 30 शेयरों पर आधारित मानक सूचकांक सेंसेक्स 446.93 अंक यानी 0.55 प्रतिशत बढ़कर 81,337.95 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 538.86 अंक चढ़कर 81,429.88 अंक पर पहुंच गया था। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का 50 शेयरों वाला सूचकांक निफ्टी भी 140.20 अंक यानी 0.57 प्रतिशत चढ़कर 24,821.10 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स की कंपनियों में रिलायंस इंडस्ट्रीज में सर्वाधिक 2.21 प्रतिशत की बढ़त रही। इसके अलावा लार्सन एंड टुब्रो, एशियन पेंट्स, टाटा मोटर्स, अदाणी पोर्ट्स, टाटा स्टील, मारुति, भारती एयरटेल, बजाज फाइनेंस और एचडीएफसी बैंक भी लाभ में रहे। हालांकि, एक्सिस बैंक, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, टाइटन और आईटीसी के शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। जियोजीत इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, ''भारत-अमेरिका व्यापार वार्ता के नतीजे को लेकर अनिश्चितता बने रहने के बीच घरेलू बाजार में सुधार देखा गया। हालांकि, अमेरिकी फेडरल रिजर्व के फैसले और एक अगस्त से अमेरिकी शुल्क लागू होने की समयसीमा को देखते हुए निवेशक सतर्क रुख अपनाए हुए हैं।' बीएसई पर सूचीबद्ध छोटी कंपनियों के स्मॉलकैप सूचकांक में 1.10 प्रतिशत की तेजी रही जबकि मझोली कंपनियों का मिडकैप में 0.84 प्रतिशत की बढ़त देखी गई। तेजी के माहौल में सभी क्षेत्रवार सूचकांक बढ़त के साथ बंद हुए। रियल्टी खंड में सर्वाधिक 1.64 प्रतिशत की तेजी रही जबकि दूरसंचार खंड 1.50 प्रतिशत और ऊर्जा खंड 1.22 प्रतिशत चढ़ा। बीएसई पर सूचीबद्ध 2,486 कंपनियों के शेयर बढ़त पर रहे जबकि 1,515 कंपनियों में गिरावट रही और 154 अन्य के भाव अपरिवर्तित रहे।

नए आयकर विधेयक में कर दरों में कोई बदलाव नहीं: आयकर विभाग

नयी दिल्ली : आयकर विभाग ने मंगलवार को कहा कि नए आयकर विधेयक में कर की किसी भी दर में बदलाव का प्रस्ताव नहीं है। नए आयकर विधेयक, 2025 में दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ (एलटीसीजी) पर कर दरों में बदलाव का प्रस्ताव होने की खबरों पर स्पष्टीकरण देते हुए विभाग ने कहा, ''यह (विधेयक) करों की किसी भी दर में बदलाव का प्रस्ताव नहीं करता है।'' आयकर विभाग ने कहा कि इस संबंध में किसी भी अस्पष्टता का विधेयक पारित होने के दौरान उचित रूप से समाधान किया जाएगा। विभाग ने 'एक्स' पर पोस्ट में कहा, ''यह स्पष्ट किया जाता है कि आयकर विधेयक, 2025 का मकसद भाषा को सरल बनाना और अनावश्यक या अप्रचलित प्रावधानों को हटाना है।'

भारतीय मूल के लोग अमेरिकी उपभोक्ताओं के दिल-दिमाग को जीत सकते हैं: आनंद महिंद्रा

नयी दिल्ली : महिंद्रा समूह के चेयरमैन आनंद महिंद्रा ने मंगलवार को कहा कि भारतीय-अमेरिकी नेतृत्व न केवल तकनीक में आगे है, बल्कि अमेरिकी उपभोक्ताओं के दिलोदिमाग को भी जीत सकता है। उन्होंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि अमेरिकी कंपनी प्रॉक्टर एंड गैंबल (पीएंडजी) के अगले मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) के रूप में भारत में जन्मे शैलेश जेजुरिकर की नियुक्ति इस बात को एक बार फिर साबित करती है। शैलेश जेजुरिकर की प्रस्तावित पदोन्नति की खबर पर प्रतिक्रिया देते हुए, महिंद्रा ने 'एक्स' पर पोस्ट किया कि इस खबर का महिंद्रा समूह के लिए एक विशेष अर्थ है, क्योंकि ''शैलेश हमारे अपने राजेश जेजुरिकर, कार्यकारी निदेशक और सीईओ (ऑटो और कृषि क्षेत्र) एमएंडएम लिमिटेड के छोटे भाई हैं।'' उन्होंने कहा, ''प्रॉक्टर एंड गैंबल को ब्रांड बनाने में महारत हासिल है, जिसने पीढ़ियों से उपभोक्ता व्यवहार को परिभाषित किया है। शैलेश जेजुरिकर की सीईओ के रूप में नियुक्ति एक बार फिर साबित करती है कि भारतीय-अमेरिकी नेतृत्व न केवल तकनीक में आगे हैं, बल्कि अमेरिकी उपभोक्ताओं के दिल-दिमाग को भी जीत सकते हैं।' राजेश जेजुरिकर के साथ शैलेश के संबंधों पर प्रकाश डालते हुए महिंद्रा ने लिखा, 'हमारा 'विस्तारित परिवार' हमारा गौरव है!... बधाई हो शैलेश... आगे बढ़ते रहो! अमेरिकी एफएमसीजी कंपनी प्रॉक्टर एंड गैंबल ने भारत में जन्मे शैलेश जेजुरिकर को अपना अगला सीईओ नियुक्त किया है। वह एक जनवरी, 2026 से उपभोक्ता वस्तुओं की इस बहुराष्ट्रीय कंपनी का नेतृत्व करेंगे।'

न्यूज अपडेट

रुपया 21 पैसे टूटकर 86.91 प्रति डॉलर पर, चार माह से अधिक का निचला स्तर

मुंबई : डॉलर में आई मजबूती और कच्चे तेल की कीमतों में उछाल के बीच अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया मंगलवार को अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले 21 पैसे की भारी गिरावट के साथ 86.91 पर बंद हुआ। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि पेट्रोलियम विपणन कंपनियों (ओएमसी) और आयातकों की ओर से मासांत की डॉलर मांग ने रुपये पर और दबाव डाला। इसके अलावा, इस सप्ताह अमेरिकी फेडरल रिजर्व और बैंक ऑफ जापान की मौद्रिक नीति के फैसले से पहले निवेशक सतर्क हैं।

रिलायंस ने सौराष्ट्र ब्लॉक के लिए ओएनजीसी, बीपी के साथ समझौता किया

नयी दिल्ली : रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने सौराष्ट्र बेसिन में तेल एवं गैस की खोज के लिए सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी ओएनजीसी और बीपी एक्सप्लोरेशन (अल्फा) लिमिटेड के साथ संयुक्त परिचालन समझौता किया है। आरआईएल ने मंगलवार को एक बयान में कहा कि 28 जुलाई को ओएनजीसी के कार्यालय में इस समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। सौराष्ट्र ब्लॉक को खुला क्षेत्र लाइसेंसिंग नीति की नौवीं बोली प्रक्रिया के तहत तीनों कंपनियों को संयुक्त रूप से आवंटित किया गया था। यह ब्लॉक गुजरात तट से सटे पश्चिमी समुद्री क्षेत्र में स्थित है और इसका क्षेत्रफल 5,454 वर्ग किलोमीटर है। समझौते के मुताबिक, इस ब्लॉक में ओएनजीसी को परिचालक की भूमिका दी गई है और तीनों कंपनियां मिलकर क्षेत्र में हाइड्रोकार्बन संसाधनों की खोज और दोहन के लिए अन्वेषण गतिविधियां चलाएंगी।

रिलायंस जियो के ग्राहक टीवी का पर्सनल कंप्यूटर की तरह कर सकेंगे इस्तेमाल

नयी दिल्ली : दूरसंचार सेवा प्रदाता रिलायंस जियो ने सदस्यता आधारित पर्सनल कंप्यूटर सेवा शुरू की है, जिससे ग्राहक सेट-टॉप बॉक्स की मदद से अपने टेलीविजन का इस्तेमाल पर्सनल कंप्यूटर की तरह कर सकेंगे। कंपनी की वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के मुताबिक, 'जियोपीसी' सदस्यता 599 रुपये (जीएसटी को छोड़कर) से शुरू होने वाले मासिक प्लान के साथ उपलब्ध है। वार्षिक प्लान 4,599 रुपये (जीएसटी को छोड़कर) का है, जो प्रति माह लगभग 383 रुपये शुल्क है। पीसी सेवा का इस्तेमाल करने के लिए जियोफाइबर और जियो एयरफाइबर उपयोगकर्ताओं को ऐप खंड में जियोपीसी ऐप पर क्लिक करना होगा। इस आठ जीबी रैम और 100 जीबी क्लाउड स्टोरेज वाले पर्सनल कंप्यूटर का उपयोग करने के लिए ग्राहक के पास कीबोर्ड और माउस होना जरूरी है। कंपनी के एक सूत्र ने कहा,'जियोपीसी ने एडोब के साथ साझेदारी की है, जिससे उपयोगकर्ताओं को एडोब एक्सप्रेस तक मुफ्त पहुंच मिलेगी। इस मंच की सदस्यता में सभी प्रमुख एआई टूल्स के साथ ही सभी लोकप्रिय ऐप और 512 जीबी क्लाउड स्टोरेज भी मिलेगा।'' जियोपीसी के एक महीने के मुफ्त परीक्षण में जियो वर्कस्पेस, माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस (ब्राउजर) और 512 त्रह्व क्लाउड स्टोरेज शामिल है।

वर्ष 10, पूर्णांक 3312 अंक 122, RNI No WBHIN/2016/66788, सर्वांग प्रकाशन के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सरोज राय द्वारा 17, बालमुकुन्द मक्कर रोड, 2सरा तल्ला, कोलकाता-700 007 से प्रकाशित। एल. एस. पब्लिकेशन्स प्रा. लि. 4, कैनल वेस्ट रोड, कोलकाता-700 015 से मुद्रित।
सम्पादक- अनिल कुमार राय (पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी), विज्ञापन एवं प्रसार-9874555256/7044444522, ई-मेल news@samagya.in